VII Class Hindi First Language

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा प्रकाशित,
हैदराबाद

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

FREE

बाल-वसंत - 2

कक्षा सातवीं

प्रथम भाषा हिंदी

VII Class Hindi First Language

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा प्रकाशित,
हैदराबाद

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

TELANGANA

बच्चो! इन सूचनाओं पर ध्यान दीजिए...

* यह पाठ्यपुस्तक आप के स्तर और रुचियों के अनुरूप बनायी गयी है। इससे आप भाषा के सभी कौशलों का विकास कर सकते हैं। इसके लिए आप अध्यापक का मार्गदर्शन व सहयोग ले सकते हैं।
* पाठ के अभ्यास करने के लिए गाइड, सब्जेक्ट मटेरियल, क्वश्चन बैंक आदि का उपयोग नहीं करना चाहिए। 'शब्दकोश' का उपयोग करने से पाठ व अभ्यास आसानी से कर सकते हैं। इसके साथ-साथ समाचार पत्र, पुस्तकालय की पुस्तकें, बाल साहित्य आदि का पठन करना चाहिए, जिससे रचनात्मक व सारांशात्मक आकलन के उत्तर आसानी से लिख सकते हैं।
* हर पाठ के प्रारंभ में उन्मुखीकरण का चित्र दिया गया है। इस चित्र के माध्यम से आप सबसे पहले संज्ञा शब्दों, तत्पश्चात क्रिया शब्दों और सोच-विचार के वाक्यों की पहचान करनी चाहिए।
* हर पाठ में 'सुनिए-बोलिए' अभ्यास के प्रश्न दिये गये हैं। आपको इन प्रश्नों के उत्तर सोच-विचार के देने चाहिए। इन प्रश्नों के उत्तर विचारात्मक होने चाहिए। इससे बौद्धिक क्षमता का विकास होगा।
* हर पाठ में 'पढ़िए' अभ्यास के प्रश्न दिये गये हैं। आपको इन प्रश्नों के उत्तर पाठ पढ़कर देने चाहिए। पढ़ो अभ्यास का उद्देश्य आपमें पढ़ने व अर्थग्राह्यता की क्षमता का विकास करना है।
* हर पाठ में 'लिखिए' अभ्यास के प्रश्न दिये गये हैं। आपको इन प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में देना चाहिए। इसे हम 'स्वरचना' भी कहते हैं। आपको अपने विचार लिखित रूप में व्यक्त करना चाहिए।
* हर पाठ में 'शब्द-भंडार' व 'भाषा की बात' के अभ्यास दिये गये हैं। इन अभ्यासों का हल समूहों में बैठकर करना चाहिए। आवश्यकतानुसार अध्यापक का सहयोग लेना चाहिए।
* 'परियोजना कार्य' स्वयं करके सीखने का कार्य है। इसे व्यक्तिगत या समूह में बैठकर करना चाहिए।
* हर पाठ में 'सृजनात्मक अभिव्यक्ति' प्रश्न दिये गये हैं। इन प्रश्नों के उत्तर मौखिक, लिखित अथवा प्रदर्शन (अभिनय) के रूप में देने चाहिए जिससे आप में भाषा का सृजनशील विकास होगा।
* स्वमूल्यांकन के लिए 'क्या मैं ये कर सकता हूँ?' शीर्षक से एक तालिका दी गयी है। आपको अपनी भाषाई क्षमता की जाँच स्वयं करनी चाहिए।

भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य—भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह—

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करें।

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखें और उनका पालन करें।

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखें।

(घ) देश की रक्षा करें और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करें।

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों।

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करें।

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करें और उसका संवर्धन करें तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें।

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहें।

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करें, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सकें।

SCERT TELANGANA

VII Class Hindi First Language
Government of Telangana
Department of Women Development & Child Welfare - Childline Foundation
When abused in or out of school.
To save the children from dangers and problems.
CHILD LINE 1098
NIGHT & DAY
24 HOUR NATIONAL HELPLINE
When the children are denied school and compelled to work.
When the family members or relatives misbehave.
1098 (Ten...Nine...Eight) dial to free service facility.
तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा प्रकाशित,
हैदराबाद
तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण
SALE
बाल-वसंत - 2
कक्षा सातवीं
प्रथम भाषा हिंदी
VII Class Hindi First Language
बाल-वसंत-2
तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा प्रकाशित,
हैदराबाद
तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

बाल-वसंत - 2

प्रथम भाषा हिंदी कक्षा सातवीं की पाठ्यपुस्तक

Class-VII Hindi (First Language)

संपादक मंडल

प्रो. टी. वी. कट्टीमनी
अध्यक्ष, हिंदी विभाग, मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू विश्वविद्यालय,हैदराबाद

प्रो. शकुंतला रेड्डी
क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद

प्रो. शुभदा वांजपे
प्रोफेसर, उस्मानिया विश्वविद्यालय

शैक्षिक सलाहकार

डॉ. रमाकांत अग्निहोत्री
सेवानिवृत्त प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय

श्री सुवर्ण विनायक
शैक्षिक सलाहकार, एस. सी. ई. आर. टी., हैदराबाद

समन्वयक

डॉ. पी. शारदा
हिंदी विभाग, एस. सी. ई. आर. टी., हैदराबाद

पाठ्य पुस्तक विकास एवं प्रकाशन समिति

श्रीमती बी. शेषु कुमारी
निदेशक, एस. सी. ई. आर. टी., हैदराबाद

डॉ. एन. उपेंदर रेड्डी
प्रोफेसर, सी एंड टी, एस. सी. ई. आर. टी., हैदराबाद

श्री बी सुधाकर
निदेशक, सरकारी पुस्तक प्रकाशनालय, हैदराबाद

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा प्रकाशित, हैदराबाद

विद्या से आगे बढ़ो।
विनय से रहो।

क़ानून का आदर करो।
अधिकार प्राप्त करो।

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2019-20

© Government of Telangana, Hyderabad.

First Published 2012

New Impression : 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019

All rights reserved.

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form or by any means without the prior permission in writing of the publisher, nor be otherwise circulated in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition including this condition being imposed on the subsequent purchaser.

The copy right holder of this book is the Director of School Education, Hyderabad, Telangana.

This Book has been printed on 70 G.S.M. SS Maplitho
Title Page 200 G.S.M. White Art Card

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2019-20

Printed in India
at the Telangana Govt. Text Book Press,
Mint Compound, Hyderabad,
Telangana.

— o —

SCERT TELANGANA

सहभागी गण

डॉ. पी. शारदा
हिंदी विभाग,
एस. सी. ई. आर. टी., हैदराबाद

श्री सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'
राज्य हिंदी संसाधक, तेलंगाणा राज्य

डॉ. शेख़ अब्दुल ग़नी
एस.ए. हिंदी, जी.एच. एस. रामन्नापेट

डॉ. राजीव कुमार सिंह
राज्य हिंदी संसाधक, तेलंगाणा राज्य

श्री सय्यद मतीन अहमद
राज्य हिंदी संसाधक, तेलंगाणा राज्य

डॉ. सैयद एम. एम. वजाहत
राज्य हिंदी संसाधक, तेलंगाणा राज्य

श्रीमती एन. हेमलता
राज्य हिंदी संसाधक, तेलंगाणा राज्य

विषय सलाहकार

श्री कुमार अनुपम
संसाधक,विद्या भवन संदर्भ केंद्र
उदयपुर, राजस्थान

श्री पुष्पराज राणावत
संसाधक,विद्या भवन संदर्भ केंद्र
उदयपुर, राजस्थान

श्री अनुशब्द
संसाधक,विद्या भवन संदर्भ केंद्र
उदयपुर, राजस्थान

चित्रांकन

श्री कुरेल्ला श्रीनिवास
नलगोंडा, तेलंगाणा राज्य

श्री अलवाला किशोर
नलगोंडा, तेलंगाणा राज्य

SCERT TELANGANA

आमुख

हमें ज्ञात है कि बालक भाषा अधिगम साधारणतया सहज व व्यावहारिक रूप में करते हैं। इन बातों व एनसीएफ-2005, आरटीई-2009, एससीएफ-2010 एवं आधार पत्र-2011 के सुझावों को ध्यान में रखते हुए इस पाठ्यपुस्तक का सृजन किया गया है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास है। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये क़दम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बालकेंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभव पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित ख़ुराक़ का ग्राहक मानना छोड़ दें।

यह उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है, जितना वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हक़ीक़त बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव कराने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

श्रीमती बी. शेषु कुमारी
निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद
तेलंगाणा, हैदराबाद

SCERT TELANGANA

आभार

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, तेलंगाणा, हैदराबाद, ने सातवीं कक्षा प्रथम भाषा हिंदी के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद की सातवीं कक्षा हिंदी की वसंत–2 शीर्षकीय पुस्तक के पाठों को लेकर, एपीएससीएफ–2011 में बताये गये मानदंडों के आधार पर अभ्यास जोड़े गये। वसंत–2 के अभ्यासों के अतिरिक्त सुनिए–बोलिए, सृजनात्मक अभिव्यक्ति, शब्द–भंडार, प्रशंसा, भाषा की बात व परियोजना कार्य जोड़े गये हैं। हर पाठ का आरंभ एक प्रस्तावना चित्र, प्रश्न, सूचनाओं के साथ हुआ है। इस तरह बनायी गयी पाठ्यपुस्तक का नाम बाल–वसंत–2 रखा गया है। वसंत–2 के पाठों व अभ्यासों को स्वीकारने की अनुमति देने के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली के हम आभारी हैं। पाठ्यपुस्तक के विकास एवं निर्माण हेतु प्रशिक्षण देने के लिए प्रो. रमाकांत अग्निहोत्री, पाठों के चयन तथा सुझाव देने के लिए विद्या भवन सोसायटी के विषय विशेषज्ञों को विशेष आभार प्रकट किया जाता है।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, तेलंगाणा, हैदराबाद प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से एन.सी.ई.आर.टी. की ओर से गठित पाठ्य पुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व आभार व्यक्त करती है। परिषद भाषा सलाहकार समिति के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर नामवर सिंह और इस पुस्तक के मुख्य सलाहकार प्रोफ़ेसर पुरुषोत्तम अग्रवाल की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान किया, इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। इस पुस्तक के निर्माण में जिन लेखकों और कवियों की रचनाओं को सम्मिलित किया गया है, उसके लिए उन साहित्यकारों और प्रकाशन संस्थाओं तथा अकादमिक सहयोग के लिए शारदा कुमारी और नीलकंठ के प्रति परिषद आभार व्यक्त करती है। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, तेलंगाणा, हैदराबाद टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2019-20
SCERT TELANGANA

अध्यापकों के लिए सूचनाएँ

यह पाठ्यपुस्तक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) के आधार पर तैयार किए गए पाठ्यक्रम पर आधारित है। यह पारंपरिक भाषा-शिक्षण की कई सीमाओं से आगे जाती है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की नयी रूपरेखा भाषा को विद्यार्थी के व्यक्तित्व का सबसे समृद्ध संसाधन मानते हुए उसे पाठ्यक्रम के हर विषय से जोड़कर देखती है। इस नाते पाठ्य सामग्री का चयन और अभ्यासों में विद्यार्थी के भाषायी विकास की समग्रता को ध्यान में रखा गया है। कई प्रश्न-अभ्यास भाषा शिक्षण की परिचित परिधि से बाहर जाकर प्रकृति, समाज, विज्ञान, इतिहास आदि में विद्यार्थी की जिज्ञासा को नए आयाम देते हैं। पाठ केंद्रित प्रश्नों को क्रमशः विस्तार देते हुए पाठ के आसपास के ज्ञान-क्षेत्रों को भी दूसरे प्रश्न-समूहों में साथ रखने का प्रयास किया गया है। भाषा की बात करते हुए ऐसे शब्दों और प्रयोगों पर विद्यार्थी का ध्यान दिलाया गया है जिन्हें समाज की जीवंतता को साहित्यिक कृतियों में समेटते हुए साहित्यकार अपनी कृति में रखना आवश्यक समझते हैं और अकसर ऐसे आंचलिक शब्द और वाक्य प्रयोग आज के शहरी जीवन में अपेक्षाकृत कम सुनाई पड़ते हैं।

नयी कविता से पठन-पाठन का रिश्ता जोड़ने का प्रयास किया है। कई बार शिक्षकों में भी पारंपरिक शैक्षणिक पैमाने की दृष्टि के कारण नयी कविता को कुछ अटपटा मानने की प्रवृत्ति रही है। इससे साहित्य की समग्रता के प्रति विद्यार्थी की रुचि को बढ़ाने में हम सफल नहीं हो पाते। नयी कविता को पाठ्यपुस्तक में स्थान देते हुए कविता के सामान्य अर्थ को खोलने का प्रयास किया गया है और प्रश्न भी इस अंदाज़ से रखे गए हैं कि कविता से विद्यार्थी जुड़ सके। अंततः कोई भी भाषा-पुस्तक तभी सफल मानी जाएगी जब वह बच्चों को साहित्य की धरोहर और आज लिखे जा रहे साहित्य के प्रति भी उत्सुक बनाए।

हिंदी के प्रचलित विभिन्न रूप और उसकी बोलियाँ भी इसकी धरोहर का अंग हैं और उस लोक का निर्माण करती हैं जिसमें हिंदी फलती-फूलती रही है। विभिन्न पाठों में यत्र-तत्र प्रयोग में आए हिंदी के प्रचलित रूपों और बोलियों का ज्ञान संसाधन के रूप में शिक्षक इस्तेमाल करें और बच्चों को भी इसके प्रयोग के लिए प्रेरित करें तो हिंदी की इस विस्तृत लोक निधि के प्रति आदर और उत्साह का संस्कार विकसित होगा। इस पाठ्यपुस्तक में **बहुभाषिकता** की झलक अनेक रूपों में मिलती है। भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से सरल रूप में तैयार किए गए प्रश्न विद्यार्थी को उत्सुक कर सकेंगे। शब्दों के मूल न केवल शब्दों के अर्थ को खोलते हैं, बल्कि विभिन्न भाषाओं के आपसी संबंधों को

SCERT TELANGANA

भी दिखाते हैं। संधि–विच्छेद आदि के द्वारा शब्दों के मूलरूप या धातु के ज्ञान से शब्द परिवार और शब्द के विभिन्न अर्थों की जानकारी मिलती है। साथ ही विभिन्न भाषाओं के आपसी संबंध और निकटता का भी पता चलता है। पाठ्यपुस्तक में ही **व्याकरण** की समझ उत्पन्न करने के लिए इससे संबंधित अभ्यास दिए गए हैं, इसलिए अलग से व्याकरण की कोई पुस्तक नहीं दी जा रही है। आशा है ऐसे अभ्यासों के द्वारा विद्यार्थियों में भाषायी समझ विकसित होगी और बिना रटे ही उनमें भाषायी कौशलों का विकास होगा।

इसे ध्यान में रखकर हर पाठ के अभ्यास में सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना कौशलों से संबंधित अभ्यासों के साथ-साथ शब्द-भंडार, भाषा की बात, सृजनात्मकता, अभिव्यक्ति से संबंधित अभ्यास भी दिये गये हैं। इन सभी का सदुपयोग कर, छात्रों में भाषागत कौशलों व विविध दक्षताओं का समुचित विकास करने का प्रयास करें। बालगीत या वार्तालाप या कहानी आदि पाठों के लिए सुनने-बोलने संबंधी क्रियाएँ कक्षा में सामूहिक रूप से करवायें। सबको स्वतंत्र व सहज रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित करें। शिक्षकों से आशा है कि वे पाठ्यपुस्तक के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विद्यार्थियों का उचित मार्ग–दर्शन करेंगे। अपनी ओर से भी कुछ अभ्यास–कार्य व आवश्यक गतिविधियाँ स्वयं करवाएँगे।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की नयी रूपरेखा में हाथों से की जानेवाली गतिविधियों, उसकी कला संबंधी दक्षता व रुचि को प्रोत्साहित करने तथा कक्षा के बाहर का जीवन–जगत कक्षा में लाने एवं उसे चर्चा का विषय बनाने की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

पाठ्यपुस्तक के प्रति विद्यार्थी के अपनेपन को और सघन बनाने के लिए पाठों के अतिरिक्त कुछ रोचक सामग्रियाँ दी गई हैं। इसी तरह पाठों के साथ विद्यार्थी की जानकारी और जिज्ञासा को बढ़ाने वाली सामग्रियाँ भी रखी गई हैं। इन पाठ्यसामग्रियों का अंतर्संबंध अन्य शैक्षिक विषयों से बनता है और इनसे विद्यार्थी के संबंधित ज्ञान में वृद्धि होती है। पुस्तक में 'उपवाचक' पाठ भी दिये गये हैं । इसका उद्देश्य बच्चों में द्रुतवाचन और अर्थग्राह्यता प्रतिक्रिया की क्षमता का विकास करना है । इन उपवाचक पाठों में से भी सारांशात्मक परीक्षा में प्रश्न पूछे जाते हैं ।

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2019-20

क्या कहाँ है?

इकाई	क्र. सं.	पाठ का नाम	विधा	माह	पृष्ठ सं.
I.	1.	हम पंछी उन्मुक्त गगन के	कविता	जून	1
	2.	दादी माँ	कहानी	जून	5
	3.	खानपान की बदलती तस्वीर	निबंध	जुलाई	13
	4.	कठपुतली	कविता	जुलाई	19
	*	हिमालय की बेटियाँ	उपवाचक	जुलाई	23
II.	5.	मिठाईवाला	कहानी	अगस्त	26
	6.	रक्त और हमारा शरीर	निबंध	अगस्त	35
	7.	चिड़िया की बच्ची	कहानी	सितंबर	42
	*	पापा खो गए	उपवाचक	सितंबर	50
III.	8.	अपूर्व अनुभव	संस्मरण	अक्तूबर	62
	9.	रहीम के दोहे	कविता	नवंबर	70
	10.	कंचा	कहानी	नवंबर	74
	11.	एक तिनका	कविता	दिसंबर	86
	*	नीलकंठ	उपवाचक	दिसंबर	91
IV.	12.	वीर कुँवर सिंह	जीवनी	जनवरी	97
	13.	संघर्ष के कारण मैं तुनुकमिज़ाज हो गया : धनराज	साक्षात्कार	जनवरी	104
	14.	विप्लव-गायन	कविता	फरवरी	111
	*	बाल-महाभारत	उपवाचक	फरवरी	115

SCERT TELANGANA

राष्ट्र-गान

जन-गण-मन अधिनायक जय हे!
भारत भाग्य विधाता।
पंजाब, सिंध, गुजरात, मराठा,
द्राविड़, उत्कल बंग।
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा
उच्छल जलधि-तरंग।
तव शुभ नामे जागे।
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय गाथा!
जन-गण-मंगलदायक जय हे!
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे! जय हे! जय हे!
जय, जय, जय, जय हे!

- रवींद्रनाथ टैगोर

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है और समस्त भारतीय मेरे भाई-बहन हैं। मैं अपने देश से प्रेम करता हूँ और इससे प्राप्त विशाल एवं विविध ज्ञान-भंडार पर मुझे गर्व है। मैं सर्वदा इस देश एवं इसके ज्ञान-भंडार के अनुरूप बनने का प्रयास करूँगा। मैं अपने माता-पिता और अध्यापकों तथा समस्त गुरुजनों का आदर करूँगा और प्रत्येक व्यक्ति के प्रति नम्रतापूर्वक व्यवहार करूँगा। मैं जीव-जंतुओं से भी प्रेमपूर्वक व्यवहार करूँगा। मैं अपने देश और उसकी जनता के प्रति अपनी भक्ति की शपथ लेता हूँ। उनके मंगल एवं समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है।

- पैडिमर्रि वेंकट सुब्बाराव

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2019-20

जहाँ-जहाँ पर यह चिह्न आये, वहाँ-वहाँ यह कीजिए

सुनिए-बोलिए

पढ़िए

परियोजना कार्य

लिखिए

शब्द-भंडार

क्या मैं ये कर सकता हूँ

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

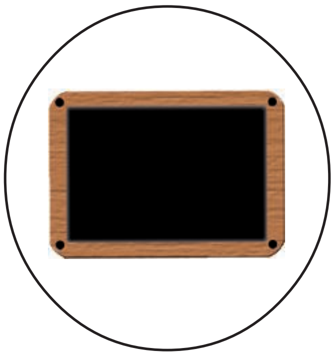

भाषा की बात

SCERT TELANGANA

इकाई – I

1. हम पंछी उन्मुक्त गगन के

प्रश्न :

1. चित्र में क्या–क्या दिखायी दे रहा है?
2. पक्षी क्या कर रहे हैं?
3. पक्षियों को देखकर चूहा क्या सोच रहा होगा?

छात्रों के लिए सूचनाएँ :

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. पाठ पढ़िए। नये शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

SCERT TELANGANA

हम पंछी उन्मुक्त गगन के
पिंजरबद्ध न गा पाएँगे,
कनक-तीलियों से टकराकर
पुलकित पंख टूट जाएँगे।

हम बहता जल पीनेवाले
मर जाएँगे भूखे-प्यासे,
कहीं भली है कटुक निबौरी
कनक-कटोरी की मैदा से।

स्वर्ण-श्रृंखला के बंधन में
अपनी गति, उड़ान सब भूले,
बस सपनों में देख रहे हैं
तरु की फुनगी पर के झूले।

होती सीमाहीन क्षितिज से
इन पंखों की होड़ा-होड़ी,
या तो क्षितिज मिलन बन जाता
या तनती साँसों की डोरी।

ऐसे थे अरमान कि उड़ते
नीले नभ की सीमा पाने,
लाल किरण-सी चोंच खोल
चुगते तारक-अनार के दाने।

नीड़ न दो, चाहे टहनी का
आश्रय छिन्न-भिन्न कर डालो,
लेकिन पंख दिए हैं तो
आकुल उड़ान में विघ्न न डालो।

❒ *शिवमंगल सिंह 'सुमन'*

SCERT TELANGANA

सुनिए–बोलिए

1. पक्षी पिंजरे में बंद क्यों नहीं रहना चाहते?
2. पक्षियों को पालना उचित है या नहीं? अपने विचार बताइए।
3. पक्षियों के संरक्षण के लिए हमें क्या करना चाहिए?

पढ़िए

1. भाव से संबंधित कविता की पंक्तियाँ लिखिए।

   (क) हम खुले आकाश में उड़ने वाले पक्षी हैं। हम पिंजरे में नहीं रह सकते। भले ही वह पिंजरा सोने का क्यों न हो। सोने के पिंजरे की तीलियों से टकराकर हमारे पंख टूट जायेंगे।

   (ख) हमें रहने के लिए कोई घोंसला न भी मिले, तो कोई बात नहीं। किंतु जब पंख दिये हैं, तो उड़ने में रुकावट मत डालो।

लिखिए

1. पक्षियों को स्वतंत्र रहना क्यों पसंद है?
2. भाव स्पष्ट कीजिए।

   "स्वर्ण शृंखला के बंधन में
   अपनी गति, उड़ान सब भूले।"
3. पक्षियों को पिंजरे में बंद करने से केवल उनकी आज़ादी का हनन ही नहीं होता, अपितु पर्यावरण भी प्रभावित होता है। अपने विचार लिखिए।
4. यदि आपके घर के किसी स्थान पर किसी पक्षी ने अपना आवास बनाया है और किसी कारणवश आपको अपना घर बदलना पड़ रहा है तो आप उस पक्षी के लिए किस तरह के प्रबंध करना आवश्यक समझेंगे? लिखिए।

SCERT TELANGANA

शब्द भंडार

(अ) भिन्नार्थ वाला शब्द पहचानिए।

1. गगन, आकाश, नभ, अंबर, तारक ....
2. जल, कनक, नीर, पानी, वारि ....
3. तरु, पेड़, क्षितिज, वृक्ष ....
4. सोना, स्वर्ण, कनक, कुंदन, किरण ....

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

1. मित्र! अगर मैं पंछी होता
नील गगन में उड़ता।........कविता की पंक्तियाँ बढ़ाइए।

प्रशंसा

1. पक्षियों के जीवन से हमें क्या सीख मिलती है? अपने विचार लिखो।

भाषा की बात

1. स्वर्ण-शृंखला और लाल किरण-सी में रेखांकित शब्द गुणवाचक विशेषण हैं। कविता से ढूँढ़कर इस प्रकार के और तीन उदाहरण लिखिए।
2. भूखे-प्यासे में द्वंद्व समास है। इन दोनों शब्दों के बीच लगे चिह्न को सामासिक चिह्न (-) कहते हैं। इस चिह्न से 'और' का संकेत मिलता है, जैसे-भूखे-प्यासे = भूखे और प्यासे।

♦ इस प्रकार के दस अन्य उदाहरण खोजकर लिखिए।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. कविता गा सकता हूँ। सुना सकता/सकती हूँ। भाव बता सकता/सकती हूँ।		
2. इस स्तर की कविताओं का भाव पढ़कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. इस स्तर की कविताओं का भाव व्याख्या करते हुए लिख सकता/सकती हूँ।		
4. कविता के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ।		
5. इस भाव पर आधारित सामान्य कविता की रचना कर सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

इकाई – I

2. दादी माँ

प्रश्न :

1. चित्र में बच्चे बहुत खुश दिखायी दे रहे हैं। अनुमान लगाइए कि बच्चे खुश क्यों हुए होंगे?
2. चित्र में बूढ़ी औरत क्या कर रही है?
3. अपनी दादीजी के बारे में बताइए।

छात्रों के लिए सूचनाएँ :

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. पाठ पढ़िए। नये शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

SCERT TELANGANA

कमज़ोरी ही है अपनी, पर सच तो यह है कि ज़रा-सी कठिनाई पड़ते; बीसों गरमी, बरसात और वसंत देखने के बाद भी, मेरा मन सदा नहीं तो प्रायः अनमना-सा हो जाता है। मेरे शुभचिंतक मित्र मुँह पर मुझे प्रसन्न करने के लिए आनेवाली छुट्टियों की सूचना देते हैं और पीठ पीछे मुझे कमज़ोर और ज़रा-सी प्रतिकूलता से घबरानेवाला कहकर मेरा मज़ाक उड़ाते हैं। मैं सोचता हूँ, 'अच्छा, अब कभी उन बातों को न सोचूँगा। ठीक है, जाने दो, सोचने से होता ही क्या है'। पर, बरबस मेरी आँखों के सामने शरद की शीत किरणों के समान स्वच्छ, शीतल किसी की धुँधली छाया नाच उठती है।

मुझे लगता है जैसे क्वार के दिन आ गए हैं। मेरे गाँव के चारों ओर पानी ही पानी हिलोरें ले रहा है। दूर के सिवान से बहकर आए हुए मोथा और साईं की अधगली घासें, घेऊर और बनप्याज की

जड़ें तथा नाना प्रकार की बरसाती घासों के बीज, सूरज की गरमी में खौलते हुए पानी में सड़कर एक विचित्र गंध छोड़ रहे हैं। रास्तों में कीचड़ सूख गया है और गाँव के लड़के किनारों पर झागभरे जलाशयों में धमाके से कूद रहे हैं। अपने-अपने मौसम की अपनी-अपनी बातें होती हैं। आषाढ़ में आम और जामुन न मिलें, चिंता नहीं, अगहन में चिउड़ा और गुड़ न मिले, दुख नहीं, चैत के दिनों में लाई के साथ गुड़ की पट्टी न मिले, अफ़सोस नहीं, पर क्वार के दिनों में इस गंधपूर्ण झागभरे जल में कूदना न हो तो बड़ा बुरा मालूम होता है। मैं भीतर हुड़क रहा था। दो-एक दिन ही तो कूद सका था, नहा-धोकर बीमार हो गया। हलकी बीमारी न जाने क्यों मुझे अच्छी लगती है। थोड़ा-थोड़ा ज्वर हो, सर में साधारण दर्द और खाने के लिए दिनभर नींबू और साबू। लेकिन इस बार ऐसी चीज़ नहीं थी। ज्वर जो चढ़ा तो चढ़ता ही गया। रज़ाई पर रज़ाई–और उतरा रात बारह बजे के बाद।

दिन में मैं चादर लपेटे सोया था। दादी माँ आईं, शायद नहाकर आई थीं, उसी झागवाले जल में। पतले-दुबले स्नेह-सने शरीर पर सफ़ेद किनारीहीन धोती, सन-से सफ़ेद बालों के सिरों पर सद्यः टपके हुए जल की शीतलता। आते ही उन्होंने सर, पेट छुए। आँचल की गाँठ खोल किसी अदृश्य शक्तिधारी के चबूतरे की मिट्टी मुँह में डाली, माथे पर लगाई। दिन-रात चारपाई के पास बैठी रहतीं, कभी पंखा झलतीं, कभी जलते हुए हाथ-पैर कपड़े से सहलातीं, सर पर दालचीनी का लेप करतीं और बीसों बार छू-छूकर ज्वर का अनुमान करतीं। हाँडी में पानी आया कि नहीं? उसे पीपल की छाल से छौंका कि नहीं? खिचड़ी में मूँग की दाल एकदम मिल तो गई है? कोई बीमार के घर में सीधे बाहर से आकर तो नहीं चला गया, आदि लाखों प्रश्न पूछ-पूछकर घरवालों को परेशान कर देतीं।

दादी माँ को गँवई-गाँव की पचासों किस्म की दवाओं के नाम याद थे। गाँव में कोई बीमार होता, उसके पास पहुँचतीं और वहाँ भी वही काम। हाथ छूना, माथा छूना, पेट छूना। फिर भूत से लेकर

SCERT TELANGANA

मलेरिया, सरसाम, निमोनिया तक का अनुमान विश्वास के साथ सुनातीं। महामारी और विशूचिका के दिनों में रोज़ सवेरे उठकर स्नान के बाद लवंग और गुड़-मिश्रित जलधार, गुग्गल और धूप। सफ़ाई कोई उनसे सीख ले। दवा में देर होती, मिश्री या शहद खत्म हो जाता, चादर या गिलाफ़ नहीं बदले जाते, तो वे जैसे पागल हो जातीं। बुखार तो मुझे अब भी आता है। नौकर पानी दे जाता है, मेस-महाराज अपने मन से पकाकर खिचड़ी या साबू। डॉक्टर साहब आकर नाड़ी देख जाते हैं और कुनैन मिक्सचर की शीशी की तिताई के डर से बुखार भाग भी जाता है, पर न जाने क्यों ऐसे बुखार को बुलाने का जी नहीं होता!

किशन भैया की शादी ठीक हुई, दादी माँ के उत्साह और आनंद का क्या कहना! दिनभर गायब रहतीं। सारा घर जैसे उन्होंने सर पर उठा लिया हो। पड़ोसिनें आतीं। बहुत बुलाने पर दादी माँ आतीं, "बहिन बुरा न मानना। कार-परोजन का घर ठहरा। एक काम अपने हाथ से न करूँ, तो होनेवाला नहीं।" जानने को यों सभी जानते थे कि दादी माँ कुछ करतीं नहीं। पर किसी काम में उनकी अनुपस्थिति वस्तुतः विलंब का कारण बन जाती। उन्हीं दिनों की बात है। एक दिन दोपहर को मैं घर लौटा। बाहरी निकसार में दादी माँ किसी पर बिगड़ रही थीं। देखा, पास के कोने में दुबकी रामी की चाची खड़ी है। "सो न होगा, धन्नो! रुपये मय सूद के आज दे दे। तेरी आँख में तो शरम है नहीं। माँगने के समय कैसी आई थी! पैरों पर नाक रगड़ती फिरी, किसी ने एक पाई भी न दी। अब लगी है आजकल करने—फसल में दूँगी, फसल में दूँगी...अब क्या तेरी खातिर दूसरी फसल कटेगी?"

"दूँगी, मालकिन!" रामी की चाची रोती हुई, दोनों हाथों से आँचल पकड़े दादी माँ के पैरों की ओर झुकी, "बिटिया की शादी है। आप न दया करेंगी तो उस बेचारी का निस्तार कैसे होगा!"

"हट, हट! अभी नहाके आ रही हूँ!" दादी माँ पीछे हट गईं।

SCERT TELANGANA

"जाने दो दादी," मैंने इस अप्रिय प्रसंग को हटाने की गरज से कहा, "बेचारी गरीब है, दे देगी कभी।"

"चल, चल! चला है समझाने..."

मैं चुपके से आँगन की ओर चला गया। कई दिन बीत गए, मैं इस प्रसंग को एकदम भूल-सा गया। एक दिन रास्ते में रामी की चाची मिली। वह दादी को 'पूतों फलो दूधों नहाओ' का आशीर्वाद देरही थी! मैंने पूछा,"क्या बात है, धन्नो चाची", तो उसने विह्वल होकर कहा, "उरिन हो गई बेटा, भगवान भला करे हमारी मालकिन का। कल ही आई थीं। पीछे का सभी रुपया छोड़ दिया, ऊपर से दस रुपये का नोट देकर बोलीं, 'देखना धन्नो, जैसी तेरी बेटी वैसी मेरी, दस-पाँच के लिए हँसाई न हो।' देवता है बेटा, देवता।"

"उस रोज़ तो बहुत डाँट रही थीं?" मैंने पूछा।

"वह तो बड़े लोगों का काम है बाबू, रुपया देकर डाँटें भी न तो लाभ क्या!"

मैं मन-ही-मन इस तर्क पर हँसता हुआ आगे बढ़ गया।

किशन के विवाह के दिनों की बात है। विवाह के चार-पाँच रोज़ पहले से ही औरतें रात-रातभर गीत गाती हैं। विवाह की रात को अभिनय भी होता है। यह प्रायः एक ही कथा का हुआ करता है, उसमें विवाह से लेकर पुत्रोत्पत्ति तक के सभी दृश्य दिखाए जाते हैं—सभी पार्ट औरतें ही करती हैं। मैं बीमार होने के कारण बारात में न जा सका। मेरा ममेरा भाई राघव दालान में सो रहा था (वह भी बारात जाने के बाद पहुँचा था)। औरतों ने उस पर आपत्ति की।

दादी माँ बिगड़ीं, "लड़के से क्या परदा? लड़के और बरह्मा का मन एक-सा होता है।"

मुझे भी पास ही एक चारपाई पर चादर उढ़ाकर दादी माँ ने चुपके से सुला दिया था। बड़ी हँसी आ रही थी। सोचा, कहीं ज़ोर से हँस दूँ, भेद खुल जाए तो निकाल बाहर किया जाऊँगा, पर भाभी की बात पर हँसी रुक न सकी और भंडाफोड़ हो गया।

देबू की माँ ने चादर खींच ली, "कहो दादी, यह कौन बच्चा सोया है। बेचारा रोता है शायद, दूध तो पिला दूँ।" हाथापाई शुरू हुई। दादी माँ बिगड़ीं, "लड़के से क्यों लगती है!"

सुबह रास्ते में देबू की माँ मिलीं, "कल वाला बच्चा, भाभी!" मैं वहाँ से ज़ोर से भागा और दादी माँ के पास जा खड़ा हुआ। वस्तुतः किसी प्रकार का अपराध हो जाने पर जब हम दादी माँ की छाया में खड़े हो जाते, अभयदान मिल जाता।

स्नेह और ममता की मूर्ति दादी माँ की एक-एक बात आज कैसी-कैसी मालूम होती है। परिस्थितियों का वात्याचक्र जीवन को सूखे पत्ते-सा कैसा नचाता है, इसे दादी माँ खूब जानती थीं। दादा की मृत्यु के बाद से ही वे बहुत उदास रहतीं। संसार उन्हें धोखे की टट्टी मालूम होता। दादा ने उन्हें स्वयं जो धोखा दिया। वे सदा उन्हें आगे भेजकर अपने पीछे जाने की झूठी बात कहा करते थे। दादा की मृत्यु के बाद कुकुरमुत्ते की तरह बढ़नेवाले, मुँह में राम बगल में छुरीवाले दोस्तों की शुभचिंता ने स्थिति और भी डाँवाडोल कर दी। दादा के श्राद्ध में दादी माँ के मना करने पर भी पिता

SCERT TELANGANA

जी ने जो अतुल संपत्ति व्यय की, वह घर की तो थी नहीं।

दादी माँ अकसर उदास रहा करतीं। माघ के दिन थे। कड़ाके का जाड़ा पड़ रहा था। पछुवा का सन्नाटा और पाले की शीत हड्डियों में घुसी पड़ती। शाम को मैंने देखा, दादी माँ गीली धोती पहने, कोनेवाले घर में एक संदूक पर दिया जलाए, हाथ जोड़कर बैठी हैं। उनकी स्नेह-कातर आँखों में मैंने आँसू कभी नहीं देखे थे। मैं बहुत देर तक मन मारे उनके पास बैठा रहा। उन्होंने आँखें खोलीं। "दादी माँ!", मैंने धीरे से कहा।

"क्या है रे, तू यहाँ क्यों बैठा है?"

"दादी माँ, एक बात पूछूँ, बताओगी न?" मैंने उनकी स्नेहपूर्ण आँखों की ओर देखा।

"क्या है, पूछ।"

"तुम रोती थीं?"

दादी माँ मुसकराईं, "पागल, तूने अभी खाना भी नहीं खाया न, चल-चल!"

"धोती तो बदल लो, दादी माँ", मैंने कहा।

"मुझे सरदी-गरमी नहीं लगती बेटा।" वे मुझे खींचती रसोई में ले गईं।

सुबह मैंने देखा, चारपाई पर बैठे पिता जी और किशन भैया मन मारे कुछ सोच रहे हैं। "दूसरा चारा ही क्या है?" बाबू बोले, "रुपया कोई देता नहीं। कितने के तो अभी पिछले भी बाकी हैं!" वे रोने-रोने-से हो गए।

"रोता क्यों है रे!" दादी माँ ने उनका माथा सहलाते हुए कहा, "मैं तो अभी हूँ ही।" उन्होंने संदूक

SCERT TELANGANA

खोलकर एक चमकती-सी चीज़ निकाली, "तेरे दादा ने यह कंगन मुझे इसी दिन के लिए पहनाया था।" उनका गला भर आया, "मैंने इसे पहना नहीं, इसे सहेजकर रखती आई हूँ। यह उनके वंश की निशानी है।" उन्होंने आँसू पोंछकर कहा, "पुराने लोग आगा-पीछा सब सोच लेते थे, बेटा।"

सचमुच मुझे दादी माँ शापभ्रष्ट देवी-सी लगीं।

धुँधली छाया विलीन हो गई। मैंने देखा, दिन काफ़ी चढ़ आया है। पास के लंबे खजूर के पेड़ से उड़कर एक कौआ अपनी घिनौनी काली पाँखें फैलाकर मेरी खिड़की पर बैठ गया। हाथ में अब भी किशन भैया का पत्र काँप रहा है। काली चींटियों-सी कतारें धूमिल हो रही हैं। आँखों पर विश्वास नहीं होता। मन बार-बार अपने से ही पूछ बैठता है—'क्या सचमुच दादी माँ नहीं रहीं?'

❒ शिवप्रसाद सिंह

सुनिए–बोलिए

1. लेखक को किसकी याद आती है और क्यों?
2. अपने बचपन की कोई ऐसी घटना बताइए जिसे आप हमेशा याद रखना चाहेंगे?
3. आपको अपने घर में किसका स्वभाव अच्छा लगता है? क्यों?

SCERT TELANGANA

पढ़िए

1. वाक्यों को क्रम (1, 2,.....7) दीजिए।

दादी माँ अक्सर उदास रहा करती थीं।	( )
'क्या सचमुच दादी माँ नहीं रहीं?'	( )
किशन के विवाह के दिनों की बात है।	( )
औरतों ने उस पर आपत्ति की।	( )
बुखार तो मुझे अब भी आता है।	( )
रजाई पर रजाई और उतरा रात बारह बजे के बाद।	( )

2. पाठ से पाँच विस्मयादि बोधक वाले वाक्य लिखिए। जैसे–'रोता क्यों है रे!'

लिखिए

1. लेखक को अपनी दादी माँ की याद के साथ–साथ बचपन की और किन–किन बातों की याद आ जाती है?
2. दादी माँ के स्वभाव का कौन–सा पक्ष आपको सबसे अच्छा लगता है?
3. दादा की मृत्यु के बाद लेखक के घर की आर्थिक स्थिति खराब क्यों हो गयी थी?

शब्द भंडार

रेखांकित शब्दों के पर्याय लिखकर दो–दो वाक्य बनाइए।

1. सूरज की गरमी में खौलते हुए पानी में सड़कर एक विचित्र गंध छोड़ रहे हैं।
2. आप न दया करेंगी तो उस बेचारी का निस्तार कैसे होगा।
3. स्नेह और ममता की मूर्ति दादी माँ की एक–एक बात आज कैसी–कैसी मालूम होती है।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

किसी विषय पर अपनी दादी से हुई बातचीत की कल्पना करते हुए, संवाद रूप में लिखिए।

प्रशंसा

घर में बड़े–बुज़ुर्गों का विशेष महत्व **होता** है। दादी माँ कहानी के माध्यम से आप इसे समझ ही गये होंगे। अपनी दादी माँ की प्रशंसा करते हुए दस वाक्य लिखिए।

SCERT TELANGANA

भाषा की बात

1. इन पंक्तियों पर ध्यान दीजिए।

   ज़रा–सी कठिनाई पड़ते

   अनमना–सा हो जाता है

   सन–से सफेद

   –समानता का बोध कराने के लिए सा, सी, से का प्रयोग किया जाता है। ऐसे पाँच और शब्द लिखिए और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

2. कहानी में 'छू–छूकर ज्वर का अनुमान करतीं, पूछ–पूछकर घरवालों को परेशान कर देतीं'–जैसे वाक्य आये हैं। किसी क्रिया को ज़ोर देकर कहने के लिए एक से अधिक बार एक ही शब्द का प्रयोग होता है। जैसे–वहाँ जा–जाकर थक गया, उन्हें ढूँढ़–ढूँढ़ कर देख लिया। इस प्रकार के पाँच वाक्य बनाइए।

3. बोलचाल में प्रयोग होनेवाले शब्द और वाक्यांश 'दादी माँ' कहानी में है। इन शब्दों और वाक्यांशों से पता चलता है कि यह कहानी किसी विशेष क्षेत्र से संबंधित है। ऐसे शब्दों और वाक्यांशों में क्षेत्रीय बोलचाल की खूबियाँ होती हैं। उदाहरण के लिए–निकसार, बरह्मा, उरिन, चिउड़ा, छौंका इत्यादि शब्दों को देखा जा सकता है। इन शब्दों का उच्चारण अन्य क्षेत्रीय बोलियों में अलग ढंग से होता है। जैसे–चिउड़ा को चिड़वा, चूड़त्र, पोहा और इसी तरह छौंका को छौंक, तड़का भी कहा जाता है। निकसार, उरिन और बरह्मा शब्द क्रमश: उऋण और ब्रह्मा शब्द का क्षेत्रीय रूप है। इस प्रकार के दस शब्दों को बोलचाल में उपयोग होनेवाली भाषा/बोली से एकत्रित कीजिए और कक्षा में लिखकर दिखाइए।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ का भाव अपने शब्दों में बता सकता/सकती हूँ। भावों से संबंधित बातचीत कर सकता/सकती हूँ।		
2. इस स्तर की गद्य सामग्री का भाव पढ़ कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. इस स्तर के गद्यांशों की व्याख्या करते हुए लिख सकता/सकती हूँ।		
4. पाठ के शब्दों को अपनी बातचीत में प्रयोग कर सकता/सकती हूँ।		
5. अपनी दादी माँ की कहानी बना सकता हूँ। उनका अभिनय कर सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

इकाई – I

3. खानपान की बदलती तस्वीर

प्रश्न :

1. चित्र में आपको कौन-कौन से व्यंजन दिख रहे हैं?
2. इनमें से आपको कौनसी चीज़ पसंद है? क्यों?
3. घर में रोज अलग-अलग व्यंजन क्यों बनाये जाते हैं?

छात्रों के लिए सूचनाएँ :

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. पाठ पढ़िए। नये शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

SCERT TELANGANA

पिछले दस-पंद्रह वर्षों में हमारी खानपान की संस्कृति में एक बड़ा बदलाव आया है। इडली-डोसा-बड़ा-साँभर-रसम अब केवल दक्षिण भारत तक सीमित नहीं हैं। ये उत्तर भारत के भी हर शहर में उपलब्ध हैं और अब तो उत्तर भारत की 'ढाबा' संस्कृति लगभग पूरे देश में फैल चुकी है। अब आप कहीं भी हों, उत्तर भारतीय रोटी-दाल-साग आपको मिल ही जाएँगे। 'फ़ास्ट फ़ूड' (तुरंत भोजन) का चलन भी बड़े शहरों में खूब बढ़ा है। इस 'फ़ास्ट फ़ूड' में बर्गर, नूडल्स जैसी कई चीज़ें शामिल हैं। एक ज़माने में कुछ ही लोगों तक सीमित 'चाइनीज़ नूडल्स' अब संभवत: किसी के लिए अजनबी नहीं रहे।

'टू मिनट्स नूडल्स' के पैकेटबंद रूप से तो कम-से-कम बच्चे-बूढ़े सभी परिचित हो चुके हैं। इसी तरह नमकीन के कई स्थानीय प्रकार अभी तक भले मौजूद हों, लेकिन आलू-चिप्स के कई विज्ञापित रूप तेज़ी से घर-घर में अपनी जगह बनाते जा रहे हैं।

गुजराती ढोकला-गाठिया भी अब देश के कई हिस्सों में स्वाद लेकर खाए जाते हैं और बंगाली मिठाइयों की केवल रसभरी चर्चा ही नहीं होती, वे कई शहरों में पहले की तुलना में अधिक उपलब्ध हैं। यानी स्थानीय व्यंजनो के साथ ही अब अन्य प्रदेशों के व्यंजन-पकवान भी प्राय: हर क्षेत्र में मिलते हैं और मध्यमवर्गीय जीवन में भोजन-विविधता अपनी जगह बना चुकी है।

कुछ चीज़ें और भी हुई हैं। मसलन अंग्रेज़ी राज तक जो ब्रेड केवल साहबी ठिकानों तक सीमित थी, वह कस्बों तक पहुँच चुकी है और नाश्ते के रूप में लाखों-करोड़ों भारतीय घरों में सेंकी-तली जा रही है। खानपान की इस बदली हुई संस्कृति से सबसे अधिक प्रभावित नयी पीढ़ी हुई है, जो पहले के स्थानीय व्यंजनों के बारे में बहुत कम जानती है, पर कई नए व्यंजनों के बारे में बहुत-कुछ जानती है। स्थानीय व्यंजन भी तो अब घटकर कुछ ही चीज़ों तक सीमित रह गए हैं। बंबई की पाव-भाजी और दिल्ली के छोले-कुलचों की दुनिया पहले की तुलना में बड़ी ज़रूर है, पर अन्य स्थानीय व्यंजनों की दुनिया में छोटी हुई है। जानकार ये भी बताते हैं कि मथुरा के पेड़ों और आगरा के पेठे-नमकीन में अब वह बात कहाँ रही! यानी जो चीज़ें बची भी हुई हैं, उनकी गुणवत्ता में फ़र्क पड़ा है। फिर मौसम और ऋतुओं के अनुसार फलों-खाद्यान्नों से जो व्यंजन और पकवान बना करते थे, उन्हें बनाने की फुरसत भी अब कितने लोगों को रह गई है। अब गृहिणियों या कामकाजी महिलाओं के लिए खरबूज़े के बीज सुखाना-छीलना और फिर उनसे व्यंजन तैयार करना सचमुच दु:साध्य है।

यानी हम पाते हैं कि एक ओर तो स्थानीय व्यंजनों में कमी आई है, दूसरी ओर वे ही देसी-विदेशी व्यंजन अपनाए जा रहे हैं, जिन्हें बनाने-पकाने में सुविधा हो। जटिल प्रक्रियाओं वाली चीज़ें तो कभी-कभार व्यंजन-पुस्तिकाओं के आधार पर तैयार की जाती हैं। अब शहरी जीवन में जो भागमभाग है, उसे देखते हुए यह स्थिति स्वाभाविक लगती है। फिर कमरतोड़ महँगाई ने भी लोगों को कई चीज़ों से धीरे-धीरे वंचित किया है। जिन व्यंजनों में बिना मेवों के स्वाद नहीं आता, उन्हें बनाने-पकाने के बारे में भला कौन चार बार नहीं सोचेगा!

खानपान की जो एक मिश्रित संस्कृति बनी है, इसके अपने सकारात्मक पक्ष भी हैं। गृहिणियों और कामकाजी महिलाओं को अब जल्दी तैयार हो जानेवाले विविध व्यंजनों की विधियाँ उपलब्ध हैं। नयी पीढ़ी को देश-विदेश के व्यंजनों को जानने का सुयोग मिला है—भले ही किन्हीं कारणों से

SCERT TELANGANA

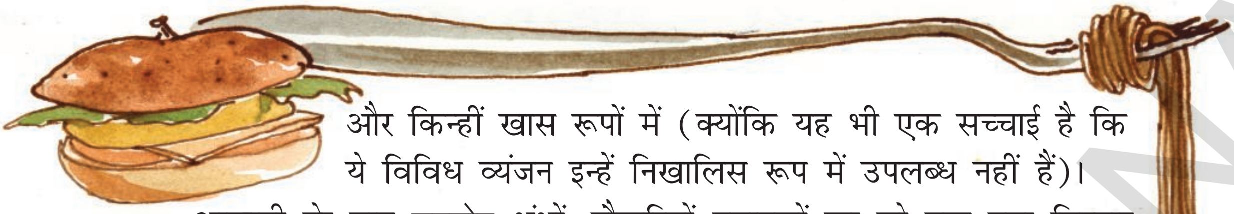

और किन्हीं खास रूपों में (क्योंकि यह भी एक सच्चाई है कि ये विविध व्यंजन इन्हें निखालिस रूप में उपलब्ध नहीं हैं)।

आज़ादी के बाद उद्योग-धंधों, नौकरियों-तबादलों का जो एक नया विस्तार हुआ है, उसके कारण भी खानपान की चीज़ें किसी एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में पहुँची हैं। बड़े शहरों के मध्यमवर्गीय स्कूलों में जब दोपहर के 'टिफ़िन' के वक्त बच्चों के टिफ़िन-डिब्बे खुलते हैं तो उनसे विभिन्न प्रदेशों के व्यंजनों की एक खुशबू उठती है।

हम खानपान से भी एक-दूसरे को जानते हैं। इस दृष्टि से देखें तो खानपान की नयी संस्कृति में हमें राष्ट्रीय एकता के लिए नए बीज भी मिल सकते हैं। बीज भलीभाँति तभी अंकुरित होंगे जब हम खानपान से जुड़ी हुई दूसरी चीज़ों की ओर भी ध्यान देंगे। मसलन हम उस बोली-बानी, भाषा-भूषा आदि को भी किसी-न-किसी रूप में ज़्यादा जानेंगे, जो किसी खानपान-विशेष से जुड़ी हुई है।

इसी के साथ ध्यान देने की बात यह है कि 'स्थानीय' व्यंजनों का पुनरुद्धार भी ज़रूरी है जिन्हें अब 'एथनिक' कहकर पुकारने का चलन बढ़ा है। ऐसे स्थानीय व्यंजन केवल पाँच सितारा होटलों के प्रचारार्थ नहीं छोड़ दिए जाने चाहिए। पाँच सितारा होटलों में वे कभी-कभार मिलते रहें, पर घरों-बाज़ारों से गायब हो जाएँ तो यह एक दुर्भाग्य ही होगा। अच्छी तरह बनाई-पकाई गई पूड़ियाँ-कचौड़ियाँ-जलेबियाँ भी अब बाज़ारों से गायब हो रही हैं। मौसमी सब्ज़ियों से भरे हुए समोसे भी अब कहाँ मिलते हैं? उत्तर भारत में उपलब्ध व्यंजनों की भी दुर्गति हो रही है।

अचरज नहीं कि पहले उत्तर भारत में जो चीज़ें गली-मुहल्लों की दुकानों में आम हुआ करती थीं, उन्हें अब खास दुकानों में तलाशा जाता है। यह भी एक कड़वा सच है कि कई स्थानीय व्यंजनों को हमने तथाकथित आधुनिकता के चलते छोड़ दिया है और पश्चिम की नकल में बहुत सी ऐसी चीज़ें अपना ली हैं, जो स्वाद, स्वास्थ्य और सरसता के मामले में हमारे बहुत अनुकूल नहीं हैं।

हो यह भी रहा है कि खानपान की मिश्रित संस्कृति में हम कई बार चीज़ों का असली और अलग स्वाद नहीं ले पा रहे। अकसर प्रीतिभोजों और पार्टियों में एक साथ ढेरों चीज़ें रख दी जाती हैं और उनका स्वाद गड्ड-मड्ड होता रहता है। खानपान की मिश्रित या विविध संस्कृति हमें कुछ चीज़ें चुनने का अवसर देती है, हम उसका लाभ प्रायः नहीं उठा रहे हैं। हम अकसर एक ही प्लेट में कई तरह के और कई बार तो बिलकुल विपरीत प्रकृतिवाले व्यंजन परोस लेना चाहते हैं।

इसलिए खानपान की जो मिश्रित-विविध संस्कृति बनी है—और लग यही रहा है कि यही और अधिक विकसित होनेवाली है—उसे तरह-तरह से जाँचते रहना ज़रूरी है।

❑ *प्रयाग शुक्ल*

SCERT TELANGANA

सुनिए–बोलिए

1. खानपान की मिश्रित संस्कृति से लेखक का क्या मतलब है? अपने घर के उदाहरण देकर बताइए।
2. अपने मनपसंद व्यंजन का नाम बताओ। यह भी बताओ कि वह व्यंजन तुम्हें क्यों पसंद है?
3. **खाने-पीने वाले व्यंजन को ढक कर रखना अनिवार्य क्यों है?**
4. फ़ास्ट फूड यानी तुरंत भोजन के नफ़े–नुकसान पर कक्षा में चर्चा करें।

पढ़िए

पाठ में विविध प्रकार के व्यंजनों के नाम आये हैं। उन्हें छाँटकर लिखिए।

....

....

....

लिखिए

1. खानपान में बदलाव के कौन से फ़ायदे हैं? फिर लेखक इस बदलाव को लेकर चिंतित क्यों है?
2. खानपान के मामले में स्थानीयता का क्या अर्थ है?
3. पिछली शताब्दी में खानपान की बदलती हुई तसवीर के अलावा और कौन-कौन से बदलाव हुए हैं?

शब्द भंडार

2. यहाँ खाने, पकाने और स्वाद से संबंधित कुछ शब्द दिए गए हैं। इन्हें ध्यान से देखिए और इनका वर्गीकरण कीजिए–

SCERT TELANGANA

1. उबालना, तलना, भूनना, सेंकना, दाल, भात, रोटी, पापड़, आलू, बैंगन, खट्टा, मीठा, तीखा, नमकीन, कसैला

भोजन	कैसे पकाया	स्वाद

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

- मान लीजिए कि नमकीन और मीठे स्वाद में अपना-अपना बड़प्पन बताते हुए वार्तालाप हो रहा है। वे क्या-क्या बातें करेंगे। लिखिए।

प्रशंसा

- कभी-कभी शादी या किसी उत्सव की दावत में खाना अधिक बच जाता है। उसे फेंकना भी पड़ता है। लेकिन आज भी हमारे देश में ऐसे लोग हैं जिन्हें तीन वक्त का भोजन नहीं मिलता। आज कुछ ऐसी भी संस्थाएँ हैं जो बचे हुए भोजन इकट्ठा कर ज़रूरतमंद लोगों में बाँटती हैं। उनके कार्य के महत्व की प्रशंसा करते हुए दस पंक्तियाँ लिखिए।

SCERT TELANGANA

भाषा की बात

1. **खानपान** शब्द, **खान** और **पान** दो शब्दों को जोड़कर बना है। खानपान शब्द में **और** छिपा हुआ है। जिन शब्दों के योग में **और**, **अथवा**, **या** जैसे योजक शब्द छिपे हों, उन्हें द्वंद्व समास कहते हैं। नीचे द्वंद्व समास के कुछ उदाहरण दिए गए हैं। इनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए और अर्थ समझिए–

सीना–पिरोना	भला–बुरा	चलना–फिरना
लंबा–चौड़ा	कहा–सुनी	घास–फूस

2. कई बार एक शब्द सुनने या पढ़ने पर कोई और शब्द याद आ जाता है। आइए शब्दों की ऐसी कड़ी बनाएँ। नीचे शुरुआत की गई है। उसे आप आगे बढ़ाइए। कक्षा में मौखिक सामूहिक गतिविधि के रूप में भी इसे दिया जा सकता है–

इडली - दक्षिण - केरल - ओणम् - त्योहार - छुट्टी - आराम...

परियोजना कार्य

- घर में बातचीत करके पता कीजिए कि आपके घर में क्या चीज़ें पकती हैं और क्या चीज़ें बनी–बनाई बाज़ार से आती हैं? इनमें से बाज़ार से आनेवाली कौन सी चीज़ें आपके माँ–पिता जी के बचपन में घर में बनती थीं?

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ का भाव अपने शब्दों में बता सकता/सकती हूँ। भावों से संबंधित बातचीत कर सकता/सकती हूँ।		
2. इस स्तर की गद्य सामग्री का भाव पढ़ कर समझ सकत/सकतीा हूँ।		
3. इस स्तर के गद्यांशों की व्याख्या करते हुए लिख सकता/सकती हूँ।		
4. पाठ के शब्दों को अपनी बातचीत में प्रयोग कर सकता/सकती हूँ।		
5. खान-पान के बारे में वार्तालाप कर सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

इकाई – I

4. कठपुतली

प्रश्न :

1. चित्र में क्या दिखायी दे रहा है?
2. चित्र में दिये गये खिलौनों के बारे में बताइए।
3. बच्चे खिलौने क्यों पसंद करते हैं?

छात्रों के लिए सूचनाएँ :

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. पाठ पढ़िए। नये शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

SCERT TELANGANA

कठपुतली
गुस्से से उबली
बोली–ये धागे
क्यों हैं मेरे पीछे-आगे?
इन्हें तोड़ दो;
मुझे मेरे पाँवों पर छोड़ दो।

सुनकर बोलीं और-और
कठपुतलियाँ
कि हाँ,
बहुत दिन हुए
हमें अपने मन के छंद छुए।

मगर...
पहली कठपुतली सोचने लगी–
ये कैसी इच्छा
मेरे मन में जगी?

❒ *भवानीप्रसाद मिश्र*

कविता के बारे में

इस कविता में कठपुतलियाँ स्वतंत्रता की इच्छा से स्वयं अपनी बात व्यक्त कर रही हैं। उनके समक्ष स्वतंत्रता को साकार बनानेवाली चुनौतियाँ हैं। धागे में बँधी हुई कठपुतलियाँ पराधीन हैं। इन्हें दूसरों के इशारे पर नाचने से दुख होता है। दुख से बाहर निकलने के लिए एक कठपुतली विद्रोह कर देती है। वह अपने पाँव पर खड़ी होना चाहती है। उसकी बात सभी कठपुतलियों को अच्छी लगती है। स्वतंत्र रहना कौन नहीं चाहता! लेकिन, जब पहली कठपुतली पर सबकी स्वतंत्रता की ज़िम्मेदारी आती है, वह सोच-समझकर क़दम उठाना ज़रूरी समझती है।

SCERT TELANGANA

सुनिए–बोलिए

1. अपने पैर पर खड़े होने से क्या अभिप्राय है? बताइए।
2. "बहुत दिन हुए
   हमें अपने मन के छंद छुए।" इस पंक्ति के भाव पर चर्चा कीजिए।
3. कठपुतली कविता के द्वारा कवि क्या संदेश देना चाहते हैं?

पढ़िए

1. भाव से संबंधित पंक्तियाँ लिखिए।
   कठपुतली को गुस्सा आया। क्योंकि उसके आगे–पीछे धागे बँधे हैं। वह गुलाम है। वह अपनी इच्छा से काम नहीं कर सकती। इसलिए वह कहती है कि मुझे मेरे पैरों पर छोड़ दो।
2. पहली कठपुतली ने स्वयं कहा कि–'ये धागे / क्यों हैं मेरे पीछे-आगे?/ इन्हें तोड़ दो; / मुझे मेरे पाँवों पर छोड़ दो।'–तो फिर वह चिंतित क्यों हुई कि–'ये कैसी इच्छा / मेरे मन में जगी?' नीचे दिए वाक्यों की सहायता से अपने विचार व्यक्त कीजिए–
   - उसे दूसरी कठपुतलियों की ज़िम्मेदारी महसूस होने लगी।
   - उसे शीघ्र स्वतंत्र होने की चिंता होने लगी।
   - वह स्वतंत्रता की इच्छा को साकार करने और स्वतंत्रता को हमेशा बनाए रखने के उपाय सोचने लगी।
   - वह डर गई, क्योंकि उसकी उम्र कम थी।

लिखिए

1. कठपुतली को गुस्सा क्यों आया?
2. कठपुतली को अपने पाँवों पर खड़ी होने की इच्छा है, लेकिन वह क्यों नहीं खड़ी होती?
3. पहली कठपुतली की बात दूसरी कठपुतलियों को क्यों अच्छी लगी?
4. नीचे दो स्वतंत्रता आंदोलनों के वर्ष दिए गए हैं। इन दोनों आंदोलनों के दो-दो स्वतंत्रता सेनानियों के नाम लिखिए–
   (क) सन् 1857 ....
   (ख) सन् 1942 ....

शब्द भंडार

निम्न मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

गुस्से से उबलना, अपने पाँवों पर खड़े होना, मन के छंद छूना, इच्छा जगना।

SCERT TELANGANA

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

- कविता में कठपुतलियों ने अपनी स्वतंत्रता के बारे में सोचा। स्वतंत्रता से उनका अभिप्राय अपनी इच्छानुसार कार्य करना है। वे चाहती हैं कि उन पर किसी का नियंत्रण न रहे। इसी प्रकार अन्य पालतू पशु क्या सोचते होंगे? किसी एक पशु की आत्मकथा लिखिए।

प्रशंसा

- कठपुतलियों ने स्वतंत्र होने की इच्छा व्यक्त की। लेकिन वे स्वतंत्रता अपने पैरों पर खड़े होने को मानती हैं। अपने पैरों पर खड़े होने का मतलब है– आत्मनिर्भर होना। आत्मनिर्भरता का जीवन में क्या महत्व है? समझाइए।

भाषा की बात

1. कई बार जब दो शब्द आपस में जुड़ते हैं तो उनके मूल रूप में परिवर्तन हो जाता है। कठपुतली शब्द में भी इस प्रकार का सामान्य परिवर्तन हुआ है। जब **काठ** और **पुतली** दो शब्द एक साथ जुड़े तो **कठपुतली** शब्द बन गया और इससे बोलने में सरलता आ गई। इस प्रकार के कुछ शब्द बनाइए–

जैसे–काठ (कठ) से बना–कठगुलाब, कठफोड़ा		
हाथ–हथ	सोना–सोन	मिट्टी–मट

2. कविता की भाषा में लय या तालमेल बनाने के लिए प्रचलित शब्दों और वाक्यों में बदलाव होता है। जैसे–आगे-पीछे अधिक प्रचलित शब्दों की जोड़ी है, लेकिन कविता में 'पीछे-आगे' का प्रयोग हुआ है। यहाँ 'आगे' का '...बोली ये धागे' से ध्वनि का तालमेल है। इस प्रकार के शब्दों की जोड़ियों में आप भी परिवर्तन कीजिए–दुबला-पतला, इधर-उधर, ऊपर-नीचे, दाएँ-बाएँ, गोरा-काला, लाल-पीला आदि।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. कविता गा सकता हूँ। सुना सकता हूँ। भाव बता सकता/सकती हूँ।		
2. इस स्तर की कविताओं का भाव पढ़कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. इस स्तर की कविताओं का भाव व्याख्या करते हुए लिख सकता/सकती हूँ।		
4. कविता के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ।		
5. इस भाव पर आधारित आत्मकथा लिख सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

इकाई – I

हिमालय की बेटियाँ

(उपवाचक पाठ)

अभी तक मैंने उन्हें दूर से देखा था। बड़ी गंभीर, शांत, अपने आप में खोई हुई लगती थीं। संभ्रांत महिला की भाँति वे प्रतीत होती थीं। उनके प्रति मेरे दिल में आदर और श्रद्धा के भाव थे। माँ और दादी, मौसी और मामी की गोद की तरह उनकी धारा में डुबकियाँ लगाया करता।

परंतु इस बार जब मैं हिमालय के कंधे पर चढ़ा तो वे कुछ और रूप में सामने थीं। मैं हैरान था कि यही दुबली-पतली गंगा, यही यमुना, यही सतलुज समतल मैदानों में उतरकर विशाल कैसे हो जाती हैं! इनका उछलना और कूदना, खिलखिलाकर लगातार हँसते जाना, इनकी यह भाव-भंगी, इनका यह उल्लास कहाँ गायब हो जाता है मैदान में जाकर? किसी लड़की को जब मैं देखता हूँ, किसी कली पर जब मेरा ध्यान अटक जाता है, तब भी इतना कौतूहल और विस्मय नहीं होता, जितना कि इन बेटियों की बाललीला देखकर!

कहाँ ये भागी जा रही हैं? वह कौन लक्ष्य है जिसने इन्हें बेचैन कर रखा है? अपने महान पिता का विराट प्रेम पाकर भी अगर इनका हृदय अतृप्त ही है तो वह कौन होगा जो इनकी प्यास मिटा सकेगा! बरफ़ जली नंगी पहाड़ियाँ, छोटे-छोटे पौधों से भरी घाटियाँ, बंधुर अधित्यकाएँ, सरसब्ज़ उपत्यकाएँ–ऐसा है इनका लीला निकेतन! खेलते-खेलते जब ये ज़रा दूर निकल जाती हैं तो देवदार, चीड़, सरो, चिनार, सफ़ेदा, कैल के जंगलों में पहुँचकर शायद इन्हें बीती बातें याद करने का मौका मिल जाता होगा। कौन जाने, बुड्ढा हिमालय अपनी इन नटखट बेटियों के लिए कितना सिर धुनता होगा! बड़ी-बड़ी चोटियों से जाकर पूछिए तो उत्तर में विराट मौन के सिवाय उनके पास और रखा ही क्या है?

सिंधु और ब्रह्मपुत्र –ये दो ऐसे नाम हैं जिनके सुनते ही रावी, सतलुज, व्यास, चनाब, झेलम, काबुल (कुभा), कपिशा, गंगा, यमुना, सरयू, गंडक, कोसी आदि हिमालय की छोटी-बड़ी सभी बेटियाँ आँखों के सामने नाचने लगती हैं। वास्तव में सिंधु और ब्रह्मपुत्र स्वयं कुछ नहीं हैं। दयालु हिमालय के पिघले हुए दिल की एक-एक बूँद न जाने कब से इकट्ठा हो-होकर इन दो महानदों के रूप में समुद्र की ओर प्रवाहित होती रही है। कितना सौभाग्यशाली है वह समुद्र जिसे पर्वतराज

SCERT TELANGANA

हिमालय की इन दो बेटियों का हाथ पकड़ने का श्रेय मिला!

जिन्होंने मैदानों में ही इन नदियों को देखा होगा, उनके खयाल में शायद ही यह बात आ सके कि बूढ़े हिमालय की गोद में बच्चियाँ बनकर ये कैसे खेला करती हैं। माँ-बाप की गोद में नंग-धड़ंग होकर खेलनेवाली इन बालिकाओं का रूप पहाड़ी आदमियों के लिए आकर्षक भले न हो, लेकिन मुझे तो ऐसा लुभावना प्रतीत हुआ वह रूप कि हिमालय को ससुर और समुद्र को उसका दामाद कहने में कुछ भी झिझक नहीं होती है।

कालिदास के विरही यक्ष ने अपने मेघदूत से कहा था—वेत्रवती (बेतवा) नदी को प्रेम का प्रतिदान देते जाना, तुम्हारी वह प्रेयसी तुम्हें पाकर अवश्य ही प्रसन्न होगी। यह बात इन चंचल नदियों को देखकर मुझे अचानक याद आ गई और सोचा कि शायद उस महाकवि को भी नदियों का सचेतन रूपक पसंद था। दरअसल जो भी कोई नदियों को पहाड़ी घाटियों और समतल आँगनों के मैदानों में जुदा-जुदा शक्लों में देखेगा, वह इसी नतीजे पर पहुँचेगा।

काका कालेलकर ने नदियों को लोकमाता कहा है। किंतु माता बनने से पहले यदि हम इन्हें बेटियों के रूप में देख लें तो क्या हर्ज है? और थोड़ा आगे चलिए...इन्हीं में अगर हम प्रेयसी की भावना करें तो कैसे रहेगा? ममता का एक और भी धागा है, जिसे हम इनके साथ जोड़ सकते हैं। बहन का स्थान कितने कवियों ने इन नदियों को दिया है। एक दिन मेरी भी ऐसी भावना हुई थी। थो-लिङ् (तिब्बत) की बात है। मन उचट गया था, तबीयत ढीली थी। सतलज के किनारे जाकर बैठ गया। दोपहर का समय था। पैर लटका दिए पानी में। थोड़ी ही देर में उस प्रगतिशील जल ने असर डाला। तन और मन ताज़ा हो गया तो लगा मैं गुनगुनाने—

जय हो सतलज बहन तुम्हारी
लीला अचरज बहन तुम्हारी
हुआ मुदित मन हटा खुमारी
जाऊँ मैं तुम पर बलिहारी
तुम बेटी यह बाप हिमालय

SCERT TELANGANA

चिंतित पर, चुपचाप हिमालय
प्रकृति नटी के चित्रित पट पर
अनुपम अद्‌भुत छाप हिमालय
जय हो सतलज बहन तुम्हारी!

❐ *नागार्जुन*

प्रश्न

1. नदियों को माँ मानने की परंपरा हमारे यहाँ काफ़ी पुरानी है। लेकिन लेखक नागार्जुन उन्हें और किन रूपों में देखते हैं?
2. सिंधु और ब्रह्‌मपुत्र की क्या विशेषताएँ बताई गई हैं?
3. काका कालेलकर ने नदियों को लोकमाता क्यों कहा है?
4. हिमालय की यात्रा में लेखक ने किन-किन की प्रशंसा की है?

SCERT TELANGANA

इकाई – II

5. मिठाईवाला

प्रश्न :

1. चित्र में क्या दिखायी दे रहा है?
2. चित्र के आधार पर बताओ कि वह आदमी कौन है?
3. खिलौने बेचनेवाला आदमी किस प्रकार बोलकर अपनी दुकान की ओर बच्चों को आकर्षित कर रहा होगा?

छात्रों के लिए सूचनाएँ :

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. पाठ पढ़िए। नये शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

SCERT TELANGANA

ब हुत ही मीठे स्वरों के साथ वह गलियों में घूमता हुआ कहता– "बच्चों को बहलानेवाला, खिलौनेवाला।"

इस अधूरे वाक्य को वह ऐसे विचित्र, किंतु मादक-मधुर ढंग से गाकर कहता कि सुननेवाले एक बार अस्थिर हो उठते। उसके स्नेहाभिषिक्त कंठ से फूटा हुआ गान सुनकर निकट के मकानों में हलचल मच जाती। छोटे-छोटे बच्चों को अपनी गोद में लिए युवतियाँ चिकों को उठाकर छज्जों पर नीचे झाँकने लगतीं। गलियों और उनके अंतर्व्यापी छोटे-छोटे उद्यानों में खेलते और इठलाते हुए बच्चों का झुंड उसे घेर लेता और तब वह खिलौनेवाला वहीं बैठकर खिलौने की पेटी खोल देता।

बच्चे खिलौने देखकर पुलकित हो उठते। वे पैसे लाकर खिलौने का मोलभाव करने लगते। पूछते–"इछका दाम क्या है? औल इछका? औल इछका?" खिलौनेवाला बच्चों को देखता और उनकी नन्हीं-नन्हीं उँगलियों से पैसे ले लेता और बच्चों की इच्छानुसार उन्हें खिलौने दे देता। खिलौने लेकर फिर बच्चे उछलने-कूदने लगते और तब फिर खिलौनेवाला उसी प्रकार गाकर कहता–"बच्चों को बहलानेवाला, खिलौनेवाला"। सागर की हिलोर की भाँति उसका यह मादक गान गलीभर के मकानों में इस ओर से उस ओर तक, लहराता हुआ पहुँचता और खिलौनेवाला आगे बढ़ जाता।

राय विजयबहादुर के बच्चे भी एक दिन खिलौने लेकर घर आए। वे दो बच्चे थे–चुन्नू और मुन्नू! चुन्नू जब खिलौने ले आया तो बोला–"मेला घोला कैछा छुंदल ऐ!"

मुन्नू बोला–"औल देखो, मेला कैछा छुंदल ऐ!"

दोनों अपने हाथी-घोड़े लेकर घरभर में उछलने लगे। इन बच्चों की माँ रोहिणी कुछ देर तक खड़े-खड़े उनका खेल निरखती रही। अंत में दोनों बच्चों को बुलाकर उसने पूछा–"अरे ओ चुन्नू-मुन्नू, ये खिलौने तुमने कितने में लिए हैं?"

मुन्नू बोला–"दो पैछे में। खिलौनेवाला दे गया ऐ।"

रोहिणी सोचने लगी–इतने सस्ते कैसे दे गया है? कैसे दे गया है, यह तो वही जाने। लेकिन दे तो गया ही है, इतना तो निश्चय है!

एक ज़रा सी बात ठहरी। रोहिणी अपने काम में लग गई। फिर कभी उसे इस पर विचार करने की आवश्यकता भी भला क्यों पड़ती!

2

छह महीने बाद–

नगरभर में दो-चार दिनों से एक मुरलीवाले के आने का समाचार फैल गया। लोग कहने लगे–"भाई वाह! मुरली बजाने में वह एक ही उस्ताद है। मुरली बजाकर, गाना सुनाकर वह मुरली बेचता भी है, सो भी दो-दो पैसे में। भला, इसमें उसे क्या मिलता होगा? मेहनत भी तो न आती होगी!"

एक व्यक्ति ने पूछ लिया–"कैसा है वह मुरलीवाला, मैंने तो उसे नहीं देखा!"

उत्तर मिला–"उम्र तो उसकी अभी अधिक न होगी, यही तीस-बत्तीस का होगा। दुबला-पतला गोरा युवक है, बीकानेरी रंगीन साफ़ा बाँधता है।"

SCERT TELANGANA

“वही तो नहीं; जो पहले खिलौने बेचा करता था?”

“क्या वह पहले खिलौने भी बेचा करता था?”

“हाँ, जो आकार-प्रकार तुमने बतलाया, उसी प्रकार का वह भी था।”

“तो वही होगा। पर भई, है वह एक उस्ताद।”

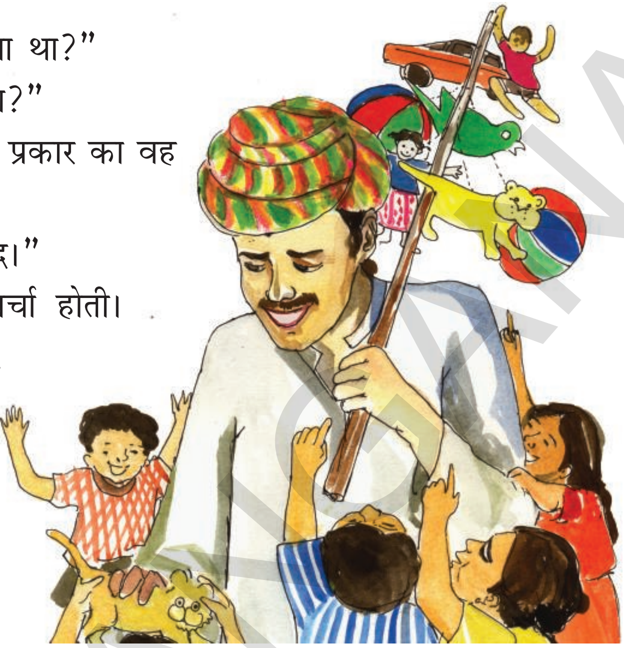

प्रतिदिन इसी प्रकार उस मुरलीवाले की चर्चा होती। प्रतिदिन नगर की प्रत्येक गली में उसका मादक, मृदुल स्वर सुनाई पड़ता–“बच्चों को बहलानेवाला, मुरलियावाला।”

रोहिणी ने भी मुरलीवाले का यह स्वर सुना। तुरंत ही उसे खिलौनेवाले का स्मरण हो आया। उसने मन-ही-मन कहा–खिलौनेवाला भी इसी तरह गा-गाकर खिलौने बेचा करता था।

रोहिणी उठकर अपने पति विजय बाबू के पास गई–“ज़रा उस मुरलीवाले को बुलाओ तो, चुन्नू-मुन्नू के लिए ले लूँ। क्या पता यह फिर इधर आए, न आए। वे भी, जान पड़ता है, पार्क में खेलने निकल गए हैं।”

विजय बाबू एक समाचार-पत्र पढ़ रहे थे। उसी तरह उसे लिए हुए वे दरवाज़े पर आकर मुरलीवाले से बोले–“क्यों भई, किस तरह देते हो मुरली?”

किसी की टोपी गली में गिर पड़ी। किसी का जूता पार्क में ही छूट गया, और किसी की सोथनी (पाजामा) ही ढीली होकर लटक आई है। इस तरह दौड़ते-हाँफ़ते हुए बच्चों का झुंड आ पहुँचा। एक स्वर से सब बोल उठे–“अम बी लेंदे मुल्ली और अम वी लेंदे मुल्ली।”

मुरलीवाला हर्ष-गद्‌गद हो उठा। बोला–“सबको देंगे भैया! लेकिन ज़रा रुको, ठहरो, एक-एक को देने दो। अभी इतनी जल्दी हम कहीं लौट थोड़े ही जाएँगे। बेचने तो आए ही हैं और हैं भी इस समय मेरे पास एक-दो नहीं, पूरी सत्तावन।...हाँ, बाबू जी, क्या पूछा था आपने, कितने में दीं! ...दीं तो वैसे तीन-तीन पैसे के हिसाब से हैं, पर आपको दो-दो पैसे में ही दे दूँगा।”

विजय बाबू भीतर-बाहर दोनों रूपों में मुसकरा दिए। मन-ही-मन कहने लगे–कैसा है! देता तो सबको इसी भाव से है, पर मुझ पर उलटा एहसान लाद रहा है। फिर बोले–“तुम लोगों की झूठ बोलने की आदत होती है। देते होगे सभी को दो-दो पैसे में, पर एहसान का बोझा मेरे ही ऊपर लाद रहे हो।”

मुरलीवाला एकदम अप्रतिभ हो उठा। बोला–“आपको क्या पता बाबू जी कि इनकी असली लागत क्या है! यह तो ग्राहकों का दस्तूर होता है कि दुकानदार चाहे हानि उठाकर चीज़ क्यों न बेचे, पर ग्राहक यही समझते हैं–दुकानदार मुझे लूट रहा है। आप भला काहे को विश्वास करेंगे? लेकिन सच पूछिए तो बाबू जी, असली दाम दो ही पैसा है। आप कहीं से दो पैसे में ये मुरली नहीं पा सकते।

मैंने तो पूरी एक हज़ार बनवाई थीं, तब मुझे इस भाव पड़ी हैं।"

विजय बाबू बोले–"अच्छा, मुझे ज़्यादा वक्त नहीं, जल्दी से दो ठो निकाल दो।"

दो मुरलियाँ लेकर विजय बाबू फिर मकान के भीतर पहुँच गए। मुरलीवाला देर तक उन बच्चों के झुंड में मुरलियाँ बेचता रहा! उसके पास कई रंग की मुरलियाँ थीं। बच्चे जो रंग पसंद करते, मुरलीवाला उसी रंग की मुरली निकाल देता।

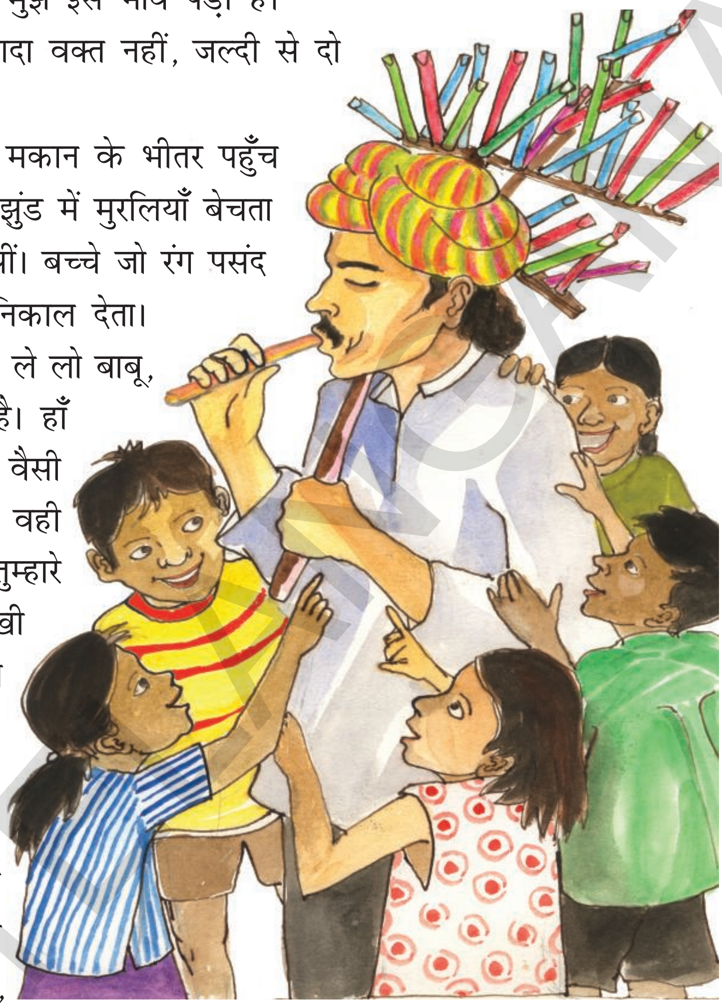

"यह बड़ी अच्छी मुरली है। तुम यही ले लो बाबू, राजा बाबू तुम्हारे लायक तो बस यह है। हाँ भैये, तुमको वही देंगे। ये लो। ...तुमको वैसी न चाहिए, यह नारंगी रंग की, अच्छा, वही लो। ...ले आए पैसे? अच्छा, ये लो तुम्हारे लिए मैंने पहले ही से यह निकाल रखी थी...! तुमको पैसे नहीं मिले। तुमने अम्मा से ठीक तरह माँगे न होंगे। धोती पकड़कर पैरों में लिपटकर, अम्मा से पैसे माँगे जाते हैं बाबू! हाँ, फिर जाओ। अबकी बार मिल जाएँगे...। दुअन्नी है? तो क्या हुआ, ये लो पैसे वापस लो। ठीक हो गया न हिसाब? ...मिल गए पैसे? देखो, मैंने तरकीब बताई! अच्छा अब तो किसी को नहीं लेना है? सब ले चुके? तुम्हारी माँ के पास पैसे नहीं हैं? अच्छा, तुम भी यह लो। अच्छा, तो अब मैं चलता हूँ।"

इस तरह मुरलीवाला फिर आगे बढ़ गया।

3

आज अपने मकान में बैठी हुई रोहिणी मुरलीवाले की सारी बातें सुनती रही। आज भी उसने अनुभव किया, बच्चों के साथ इतने प्यार से बातें करनेवाला फेरीवाला पहले कभी नहीं आया। फिर वह सौदा भी कैसा सस्ता बेचता है! भला आदमी जान पड़ता है। समय की बात है, जो बेचारा इस तरह मारा-मारा फिरता है। पेट जो न कराए, सो थोड़ा!

इसी समय मुरलीवाले का क्षीण स्वर दूसरी निकट की गली से सुनाई पड़ा–"बच्चों को बहलानेवाला, मुरलियावाला!"

रोहिणी इसे सुनकर मन-ही-मन कहने लगी–और स्वर कैसा मीठा है इसका!

बहुत दिनों तक रोहिणी को मुरलीवाले का वह मीठा स्वर और उसकी बच्चों के प्रति वे

SCERT TELANGANA

स्नेहसिक्त बातें याद आती रहीं। महीने-के-महीने आए और चले गए। फिर मुरलीवाला न आया। धीरे-धीरे उसकी स्मृति भी क्षीण हो गई।

4

आठ मास बाद–

सरदी के दिन थे। रोहिणी स्नान करके मकान की छत पर चढ़कर आजानुलंबित केश-राशि सुखा रही थी। इस समय नीचे की गली में सुनाई पड़ा–"बच्चों को बहलानेवाला, मिठाईवाला।"

मिठाईवाले का स्वर उसके लिए परिचित था, झट से रोहिणी नीचे उतर आई। उस समय उसके पति मकान में नहीं थे। हाँ, उनकी वृद्धा दादी थीं। रोहिणी उनके निकट आकर बोली–"दादी, चुन्नू-मुन्नू के लिए मिठाई लेनी है। ज़रा कमरे में चलकर ठहराओ। मैं उधर कैसे जाऊँ, कोई आता न हो। ज़रा हटकर मैं भी चिक की ओट में बैठी रहूँगी।"

दादी उठकर कमरे में आकर बोलीं–"ए मिठाईवाले, इधर आना।"

मिठाईवाला निकट आ गया। बोला–"कितनी मिठाई दूँ माँ? ये नए तरह की मिठाइयाँ हैं–रंग-बिरंगी, कुछ-कुछ खट्टी, कुछ-कुछ मीठी, ज़ायकेदार, बड़ी देर तक मुँह में टिकती हैं। जल्दी नहीं घुलतीं।

SCERT TELANGANA

बच्चे बड़े चाव से चूसते हैं। इन गुणों के सिवा ये खाँसी भी दूर करती हैं! कितनी दूँ? चपटी, गोल, पहलदार गोलियाँ हैं। पैसे की सोलह देता हूँ।"

दादी बोलीं–"सोलह तो बहुत कम होती हैं, भला पचीस तो देते।" मिठाईवाला–"नहीं दादी, अधिक नहीं दे सकता। इतना भी देता हूँ, यह अब मैं तुम्हें क्या...खैर, मैं अधिक न दे सकूँगा।"

रोहिणी दादी के पास ही थी। बोली–"दादी, फिर भी काफ़ी सस्ता दे रहा है। चार पैसे की ले लो। यह पैसे रहे।"

मिठाईवाला मिठाइयाँ गिनने लगा।

"तो चार की दे दो। अच्छा, पच्चीस नहीं सही, बीस ही दो। अरे हाँ, मैं बूढ़ी हुई मोलभाव अब मुझे ज़्यादा करना आता भी नहीं।"

कहते हुए दादी के पोपले मुँह से ज़रा सी मुसकराहट फूट निकली।

रोहिणी ने दादी से कहा–"दादी, इससे पूछो, तुम इस शहर में और कभी भी आए थे या पहली बार आए हो? यहाँ के निवासी तो तुम हो नहीं।"

दादी ने इस कथन को दोहराने की चेष्टा की ही थी कि मिठाईवाले ने उत्तर दिया–"पहली बार नहीं और भी कई बार आ चुका हूँ।"

रोहिणी चिक की आड़ ही से बोली–"पहले यही मिठाई बेचते हुए आए थे या और कोई चीज़ लेकर?"

मिठाईवाला हर्ष, संशय और विस्मयादि भावों में डूबकर बोला–"इससे पहले मुरली लेकर आया था और उससे भी पहले खिलौने लेकर।"

रोहिणी का अनुमान ठीक निकला। अब तो वह उससे और भी कुछ बातें पूछने के लिए अस्थिर हो उठी। वह बोली–"इन व्यवसायों में भला तुम्हें क्या मिलता होगा?"

वह बोला, "मिलता भला क्या है! यही खानेभर को मिल जाता है। कभी नहीं भी मिलता है। पर हाँ; संतोष, धीरज और कभी-कभी असीम सुख ज़रूर मिलता है और यही मैं चाहता भी हूँ।"

"सो कैसे? वह भी बताओ।"

"अब व्यर्थ उन बातों की क्यों चर्चा करूँ? उन्हें आप जाने ही दें। उन बातों को सुनकर आपको दुख ही होगा।"

"जब इतना बताया है, तब और भी बता दो। मैं बहुत उत्सुक हूँ। तुम्हारा हरजा न होगा। मिठाई मैं और भी ले लूँगी।"

अतिशय गंभीरता के साथ मिठाईवाले ने कहा–"मैं भी अपने नगर का एक प्रतिष्ठित आदमी था। मकान, व्यवसाय, गाड़ी-घोड़े, नौकर-चाकर सभी कुछ था। स्त्री थी, छोटे-छोटे दो बच्चे भी थे। मेरा वह सोने का संसार था। बाहर संपत्ति का वैभव था, भीतर सांसारिक सुख था। स्त्री सुंदरी थी, मेरी प्राण थी। बच्चे ऐसे सुंदर थे, जैसे सोने के सजीव खिलौने। उनकी अठखेलियों के मारे घर में कोलाहल मचा रहता था। समय की गति! विधाता की लीला। अब कोई नहीं है। दादी, प्राण निकाले नहीं निकले। इसलिए अपने उन बच्चों की खोज में निकला हूँ। वे सब अंत में होंगे, तो यहीं कहीं। आखिर, कहीं न जनमे ही होंगे। उस तरह रहता, घुल-घुलकर मरता। इस तरह सुख-संतोष के साथ

SCERT TELANGANA

मरूँगा। इस तरह के जीवन में कभी-कभी अपने उन बच्चों की एक झलक-सी मिल जाती है। ऐसा जान पड़ता है, जैसे वे इन्हीं में उछल-उछलकर हँस-खेल रहे हैं। पैसों की कमी थोड़े ही है, आपकी दया से पैसे तो काफ़ी हैं। जो नहीं है, इस तरह उसी को पा जाता हूँ।"

रोहिणी ने अब मिठाईवाले की ओर देखा–उसकी आँखें आँसुओं से तर हैं।

इसी समय चुन्नू-मुन्नू आ गए। रोहिणी से लिपटकर, उसका आँचल पकड़कर बोले–"अम्माँ, मिठाई!"

"मुझसे लो।" यह कहकर, तत्काल कागज़ की दो पुड़ियाँ, मिठाइयों से भरी, मिठाईवाले ने चुन्नू-मून्नू को दे दीं।

रोहिणी ने भीतर से पैसे फेंक दिए।

मिठाईवाले ने पेटी उठाई और कहा–"अब इस बार ये पैसे न लूँगा।"

दादी बोली–"अरे-अरे, न न अपने पैसे लिए जा भाई!"

तब तक आगे फिर सुनाई पड़ा उसी प्रकार मादक-मृदुल स्वर में–"बच्चों को बहलानेवाला मिठाईवाला।"

❑ ***भगवतीप्रसाद वाजपेयी***

सुनिए–बोलिए

1. आपकी गलियों में भी कई अजनबी फ़ेरीवाले आते होंगे। उनके बारे में बताइए।
2. हाट–मेले, शादी आदि आयोजनों में कौनसी चीज़ें आपको सबसे ज्यादा आकर्षित करती हैं, बताइए।
3. बच्चों की क्या प्रतिक्रिया होती थी?
   - खिलौनेवाले को देखकर
   - मुरलीवाले को देखकर
   - मिठाईवाले को देखकर

पढ़िए

1. कहानी के आधार पर वाक्यों को क्रम (1, 2,....6) दो।
   - मिठाईवाले ने पेटी उठाई और कहा– "अब इस बार ये पैसे न लूँगा।"
   - मिठाईवाला हर्ष, संशय और विस्मयादि भावों में डूबकर बोला–
   - "हाँ उनकी वृद्धा दादी थी।"
   - बच्चों को बहलानेवाला, मुरलीवाला।
   - दो मुरलियाँ लेकर विजयबाबू फिर मकान के भीतर पहुँच गये।
   - बच्चों को बहलानेवाला, खिलौनेवाला।
   - बच्चे खिलौने देखकर पुलकित हो उठते।

SCERT TELANGANA

2. 'अब इस बार ये पैसे न लूँगा'–कहानी के अंत में मिठाईवाले ने ऐसा क्यों कहा?
3. किसकी बात सुनकर मिठाईवाला भावुक हो गया था? उसने इन व्यवसायों को अपनाने का क्या कारण बताया?

लिखिए

1. मिठाईवाला अलग-अलग चीज़ें क्यों बेचता था और वह महीनों बाद क्यों आता था?
2. मिठाईवाले में वे कौन से गुण थे जिनकी वजह से बच्चे तो बच्चे, बड़े भी उसकी ओर खिंचे चले आते थे?
3. रोहिणी को मुरलीवाले के स्वर से खिलौनेवाले का स्मरण क्यों हो आया?
4 इस कहानी में रोहिणी चिक के पीछे से बात करती है। क्या आज भी औरतें चिक के पीछे से बात करती हैं? यदि करती हैं तो क्यों? आपकी राय में क्या यह सही है?

शब्द भंडार

1. दुबला-पतला गोरा युवक है, बीकानेरी रंगीन साफ़ा बाँधता है।

   (युवक शब्द का लिंग बदलकर वाक्य फिर से लिखिए।)

2. मुरलीवाला एकदम अप्रतिभ हो उठा।

   (रेखांकित शब्द का अर्थ जानकर वाक्य में प्रयोग कीजिए।)

3. यह बड़ी अच्छी मुरली है। (विलोमार्थी वाक्य बनाइए।)

4. फिर वह सौदा भी कैसा सस्ता बेचता है।

   (रेखांकित शब्दों से दो-दो वाक्य बनाइए।)

5. उसकी बच्चों के प्रति वे स्नेहसिक्त बातें याद रहीं।

   (रेखांकित शब्द का अर्थ लिखिए और इस शब्द से एक वाक्य बनाइए।)

6. पाठ पढ़कर पाँच युग्म शब्द लिखिए। जैसे- मादक-मृदुल

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

■ मिठाईवाले के परिवार के साथ क्या हुआ होगा? सोचिए और इस आधार पर एक और कहानी बनाइए?

SCERT TELANGANA

प्रशंसा

- बाज़ार में तो सबकुछ मिलता है लेकिन फेरीवाले हमारे घर तक सामान पहुँचाते हैं। फेरीवालों के कार्यों की प्रशंसा करते हुए कुछ वाक्य लिखिए।

भाषा की बात

1. मिठाईवाला बोलनेवाली गुड़िया

   ● ऊपर 'वाला' का प्रयोग है। अब बताइए कि–

   (क) 'वाला' से पहले आनेवाले शब्द संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि में से क्या हैं?

   (ख) ऐसे पाँच शब्द बनाइए जिसमें 'वाला' का प्रयोग हुआ हो ।

2. "अच्छा मुझे ज़्यादा वक्त नहीं, जल्दी से दो ठो निकाल दो।"

   ● उपर्युक्त वाक्य में 'ठो' के प्रयोग की ओर ध्यान दीजिए। पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार की भाषाओं में इस शब्द का प्रयोग संख्यावाची शब्द के साथ होता है, जैसे, भोजपुरी में–एक ठो लइका, चार ठे आलू, तीन ठे बटुली।

   ● ऐसे शब्दों का प्रयोग भारत की कई अन्य भाषाओं / बोलियों में भी होता है। कक्षा में पता कीजिए कि किस-किस की भाषा-बोली में ऐसा है। इस पर सामूहिक बातचीत कीजिए।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ का भाव अपने शब्दों में बता सकता/सकती हूँ। भावों से संबंधित बातचीत कर सकता/सकती हूँ।		
2. इस स्तर की गद्य सामग्री का भाव पढ़ कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. इस स्तर के गद्यांशों की व्याख्या करते हुए लिख सकता/सकती हूँ ।		
4. पाठ के शब्दों को अपनी बातचीत में प्रयोग कर सकता/सकती हूँ।		
5. पाठ के आधार पर कहानी आगे बढ़ा सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

इकाई–II

6. रक्त और हमारा शरीर

प्रश्न :

1. चित्र में क्या दिखायी दे रहा है?
2. रक्तदान करने से क्या लाभ हैं?
3. आप रक्तदान को बढ़ावा देने के लिए क्या करना चाहेंगे?

छात्रों के लिए सूचनाएँ :

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. पाठ पढ़िए। नये शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

SCERT TELANGANA

दिव्या अनिल की छोटी बहन है। यों तो वह शुरू से ही कमज़ोर है, लेकिन इधर कुछ दिनों से उसे हर समय थकान महसूस होती रहती है। मन किसी काम में नहीं लगता, भूख भी पहले से कम हो गई है। अस्पताल में उसे डॉक्टर ने देखा, तो कहा– "लगता है, दिव्या के शरीर में रक्त की कमी हो गई है। जाँच कराकर देखते हैं।" यह कहकर उन्होंने दिव्या को रक्त की जाँच के लिए पास के एक कमरे में भेज दिया। वहाँ अनिल को अपनी ही जान-पहचान की डॉक्टर दीदी दिखाई दीं।

डॉक्टर दीदी ने कहा, "कहो अनिल, कैसे आना हुआ?"

अनिल ने बताया कि डॉक्टर ने दिव्या को खून की जाँच के लिए आपके पास भेजा है।

इतना सुनते ही डॉक्टर दीदी ने दिव्या की उँगली से रक्त की कुछ बूँदें एक छोटी सी शीशी में डाल दीं और स्लाइड पर लगा दीं। फिर अनिल से बोलीं, "अनिल, तुम कल अस्पताल से रिपोर्ट ले जाना।"

अगले दिन अस्पताल पहुँचकर अनिल ने डॉक्टर दीदी के कमरे के दरवाज़े पर दस्तक दी। भीतर से आवाज़ आई, "आ जाओ।" अनिल ने कमरे में प्रवेश किया तो पाया, डॉक्टर दीदी सूक्ष्मदर्शी द्वारा एक स्लाइड की जाँच कर रही थीं। दीदी के इशारे से वह पास रखी एक कुरसी पर बैठ गया। स्लाइड की जाँच पूरी होने पर डॉक्टर दीदी ने साबुन से हाथ धोए और तौलिए से पोंछती हुई बोलीं, "अनिल, दिव्या को एनीमिया है। चिंता की बात नहीं, कुछ दिन दवा लेगी तो ठीक हो जाएगी।"

अनिल के मन में जिज्ञासा हुई, वह बोला, "दीदी, एक सवाल पूछूँ?"

"हाँ, हाँ, क्यों नहीं", डॉक्टर दीदी ने कहा।

"एनीमिया से आपका क्या मतलब है दीदी?" उसने पूछा।

"यह जानने के लिए तुम्हें रक्त के बारे में जानना होगा," डॉक्टर दीदी ने कहा। फिर बोलीं, "अनिल, देखने में रक्त लाल द्रव के समान दिखता है, किंतु इसे सूक्ष्मदर्शी द्वारा देखें तो यह भानुमती के पिटारे से कम नहीं। मोटेतौर पर इसके दो भाग होते हैं। एक भाग वह जो तरल है, जिसे हम प्लाज़्मा कहते हैं। दूसरा, वह जिसमें छोटे-बड़े कई तरह के कण होते हैं...कुछ लाल, कुछ सफ़ेद और कुछ ऐसे जिनका कोई रंग नहीं, जिन्हें बिंबाणु (प्लेटलैट कण) कहते हैं। ये कण प्लाज़्मा में तैरते रहते हैं।" इतना कहकर डॉक्टर दीदी ने सूक्ष्मदर्शी के नीचे एक स्लाइड लगाई, उसे फोकस किया और बोलीं, "देखो अनिल, सूक्ष्मदर्शी द्वारा जो कण तुम्हें

SCERT TELANGANA

दिखाई दे रहे हैं, ये हैं लाल रक्त-कण।"

स्लाइड देख, मानो आश्चर्य से उछल पड़ा था अनिल! रक्त की एक बूँद में इतने सारे कण! इसकी तो वह कल्पना भी नहीं कर सकता था। वह बोला, "इन्हें देखकर तो ऐसा लग रहा है, मानो बहुत सी छोटी-छोटी बालूशाही रख दी गई हों।"

"हाँ", दीदी बोलीं, "लाल कण बनावट में बालूशाही की तरह ही होते हैं। गोल और दोनों तरफ़ अवतल, यानी बीच में दबे हुए। रक्त की एक बूँद में इनकी संख्या लाखों में होती है। यदि हम एक मिलीमीटर रक्त लें तो उसमें हमें चालीस से पचपन लाख कण मिलेंगे। इनके कारण ही हमें रक्त लाल रंग का नज़र आता है। ये कण शरीर के लिए दिन-रात काम करते हैं। साँस लेने पर साफ़ हवा से जो ऑक्सीजन तुम प्राप्त करते हो उसे शरीर के हर हिस्से में पहुँचाने का काम इन कणों का ही है। इनका जीवनकाल लगभग चार महीने होता है। चार महीने के होते-होते ये नष्ट हो जाते हैं, लेकिन एक साथ नहीं, धीरे-धीरे। कुछ आज, कुछ कल, कुछ उससे अगले दिन...।"

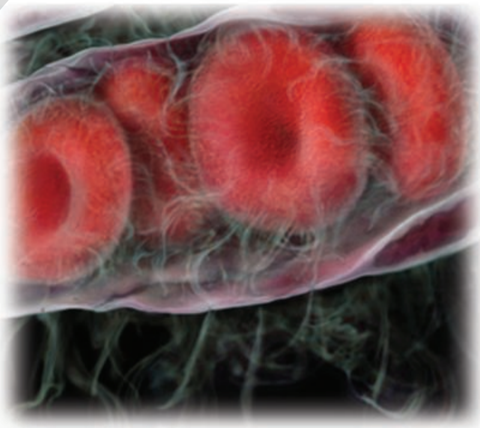

"तब तो कुछ ही महीनों में ये खत्म हो जाते होंगे", अनिल ने कहा। यह सुनकर डॉक्टर दीदी मुसकरा उठीं, बोलीं, "नहीं, ऐसा नहीं होता। शरीर में हर समय नए कण बनते रहते हैं, जो नष्ट कणों का स्थान ले लेते हैं। हड्डियों के बीच के भाग मज्जा में ऐसे बहुत से कारखाने होते हैं जो रक्त कणों के निर्माण-कार्य में लगे रहते हैं। इनके लिए इन कारखानों को प्रोटीन, लौहतत्त्व और विटामिन रूपी कच्चे माल की ज़रूरत होती है। यह पौष्टिक आहार लेते हो? हरी सब्ज़ी, फल, दूध, अंडा और गोश्त में ये तत्त्व उपयुक्त मात्रा में होते हैं। यदि कोई व्यक्ति उचित आहार ग्रहण नहीं करता तो इन कारखानों को आवश्यकतानुसार कच्चा माल नहीं मिल पाता। नतीजा यह होता है कि

SCERT TELANGANA

रक्त-कण बन नहीं पाते, रक्त में इनकी कमी हो जाती है। लाल कणों की इसी कमी को एनीमिया कहते हैं।"

"तो क्या संतुलित आहार लेने मात्र से हम एनीमिया से बचे रह सकते हैं?" अनिल ने सवाल किया।

दीदी बोलीं, "हाँ, यह कहना काफ़ी हद तक सही होगा। यों तो एनीमिया बहुत से कारणों से हो सकता है, किंतु हमारे देश में इसका सबसे बड़ा कारण पौष्टिक आहार की कमी है। इसके अलावा इस रोग का एक और बड़ा कारण है पेट में कीड़ों का हो जाना। ये कीड़े प्राय: दूषित जल और खाद्य पदार्थों द्वारा हमारे शरीर में प्रवेश करते हैं। अत: इनसे बचने के लिए यह आवश्यक है कि हम पूरी सफ़ाई से बनाए गए खाद्य पदार्थ ही ग्रहण करें। भोजन करने से पूर्व अच्छी तरह से हाथ धो लें और साफ़ पानी ही पिएँ। और हाँ, अनिल एक किस्म के कीड़े भी हैं, जिनके अंडे ज़मीन की ऊपरी सतह में पाए जाते हैं। इन अंडों से उत्पन्न हुए लार्वे त्वचा के रास्ते शरीर में प्रवेश कर आँतों में अपना घर बना लेते हैं। इनसे बचने का सहज उपाय है कि शौच के लिए हम शौचालय का ही प्रयोग करें और इधर-उधर नंगे पैर न घूमें।"

"दीदी, यह तो बहुत ही महत्त्वपूर्ण बात बताई आपने", अनिल बोला। वह पलभर सोच में डूबा रहा। फिर बोला, "आपने बताया था कि रक्त में सफ़ेद कण और बिंबाणु (प्लेटलैट कण) भी होते हैं, शरीर में उनका क्या काम है?"

दीदी बोलीं, "सफ़ेद कण वास्तव में हमारे शरीर के वीर सिपाही हैं। जब रोगाणु शरीर पर धावा बोलने की कोशिश करते हैं तो सफ़ेद कण उनसे डटकर मुकाबला करते हैं और जहाँ तक संभव हो पाता है रोगाणुओं को भीतर घर नहीं करने देते। बस, संक्षेप में यों मान लो कि वे बहुत से रोगों से हमारी रक्षा करते हैं।"

"और बिंबाणुओं का काम है चोट लगने पर रक्त जमाव क्रिया में मदद करना। रक्त के तरल भाग प्लाज़्मा में एक विशेष किस्म की प्रोटीन होती है जो रक्तवाहिका की कटी-फटी दीवार में मकड़ी के जाले के समान एक जाला बुन देती है। बिंबाणु इस जाले से चिपक जाते हैं और इस तरह दीवार में आई दरार भर जाती है, जिससे रक्त बाहर निकलना बंद हो जाता है।"

अनिल बोला, "दीदी, लेकिन घाव गहरा हो तब तो खून बहता ही चला जाता है।"

"हाँ, ऐसे समय में उस व्यक्ति को जल्दी से डॉक्टर के पास ले जाना चाहिए। ज़रूरत समझने

SCERT TELANGANA

पर ऐसी स्थिति से निपटने के लिए कुछ टाँके भी लगाने पड़ सकते हैं, किंतु डॉक्टर के पास पहुँचने तक के समय में चोट के स्थान पर कसकर एक साफ़ कपड़ा बाँध देना चाहिए। दबाव पड़ने से रक्त का बहना कम हो जाता है, जो उस व्यक्ति के लिए काफ़ी लाभप्रद सिद्ध हो सकता है। किंतु अगरबहुत अधिक रक्त बह जाए तो उसे रक्त चढ़ाने की ज़रूरत भी पड़ सकती है", दीदी ने समझाते हुए कहा।

अनिल ने कहा, "क्या ऐसे समय में किसी भी व्यक्ति का खून काम आ सकता है?"

दीदी बोलीं, "अनिल, हर किसी का रक्त एक-सा नहीं होता। कुछ विशेष गुणों के आधार पर रक्त को चार मुख्य वर्गों में बाँट दिया गया है। ज़रूरतमंद व्यक्ति के रक्त-समूह की जाँच करने के बाद उसे उसी रक्त-समूह का रक्त चढ़ाया जाता है।"

"लेकिन ज़रूरत के समय यदि उस रक्त-समूह का कोई व्यक्ति मिले ही नहीं तब?" अनिल ने पूछा।

"ऐसी आपातस्थिति के लिए ही ब्लड-बैंक बनाए गए हैं। प्रायः हर बड़े अस्पताल में इस तरह के बैंक होते हैं, जहाँ, सभी प्रकार के रक्त-समूहों का रक्त तैयार रखा जाता है। किंतु इन ब्लड-बैंकों में रक्त का भंडार सुरक्षित रहे, इसके लिए यह आवश्यक है कि हम समय-समय पर रक्तदान करते रहें", दीदी ने कहा।

"क्या मैं भी रक्तदान कर सकता हूँ?" अनिल ने पूछा।

"नहीं, अभी तुम छोटे हो। अठारह वर्ष से अधिक उम्र के स्वस्थ व्यक्ति ही रक्तदान कर सकते हैं। एक समय में उनसे लगभग 300 मिलीलिटर रक्त ही लिया जाता है। प्रायः यह समझा जाता है कि रक्तदान करने से कमज़ोरी हो जाएगी, किंतु यह विचार बिलकुल निराधार है। हमारा शरीर इतना रक्त तो कुछ ही दिनों में बना लेता है। वैसे भी शरीर में लगभग पाँच लीटर खून होता है। इसमें से यदि कुछ रक्त किसी ज़रूरतमंद व्यक्ति के लिए जीवन-दान बन जाए तो इससे बड़ी बात क्या होगी!" दीदी समझाते हुए बोलीं।

"फिर तो बड़ा होने पर मैं नियमित रूप से रक्तदान किया करूँगा", अनिल ने कहा।

"शाबाश, अनिल!" डॉक्टर दीदी ने अनिल की पीठ ठोकते हुए कहा।

❒ यतीश अग्रवाल

SCERT TELANGANA

सुनिए-बोलिए

1. रक्तदान क्यों करना चाहिए?
2. रक्त को बहाव को रोकने के लिए क्या करना चाहिए?
3. खून को भानुमती का पिटारा क्यों कहा जाता है?

पढ़िए

1. रक्त में हीमोग्लोबिन के लिए किस खनिज की आवश्यकता पड़ती है–

जस्ता	शीशा
लोहा	प्लैटिनम

2. साँस लेने पर शुद्ध वायु से जो ऑक्सीजन प्राप्त होती है उससे शरीर के हर हिस्से में कौन पहुँचाता है–

सफ़ेद कण	साँस नली
लाल कण	फेफड़े

3. बिंबाणु (प्लैटलैट कण) की कमी किस बीमारी में पायी जाती है?

डेंगू	टाइफाइड
मलेरिया	फ़ाइलेरिया

लिखिए

1. एनीमिया से बचने के लिए हमें क्या-क्या खाना चाहिए?
2. पेट में कीड़े क्यों हो जाते हैं? इनसे कैसे बचा जा सकता है?
3. रक्त के सफ़ेद कणों को 'वीर सिपाही' क्यों कहा गया है?
4. ब्लड-बैंक में रक्तदान से क्या लाभ है?

शब्द भंडार

- इस पाठ में जीव विज्ञान से संबंधित बहुत से शब्द आये हैं। उन्हें चुनिए। उनके बारे में जानकारी एकत्र कीजिए।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

- रक्तदान को प्रोत्साहित करते हुए पाँच नारे लिखिए।

SCERT TELANGANA

प्रशंसा

■ रक्तदान महादान है। यह दूसरों के जीवन के लिए वरदान है। यदि आपका कोई मित्र रक्तदान करे तो आप उसकी प्रशंसा किस प्रकार करेंगे? बताइए।

भाषा की बात

■ 1. (क) चार महीने के होते-होते ये नष्ट हो जाते हैं–

- इस वाक्य को ध्यान से पढ़िए। इस वाक्य में 'होते-होते' के प्रयोग से यह बताया गया है कि चार महीने से पूर्व ही ये नष्ट हो जाते हैं। इस तरह के पाँच वाक्य बनाइए जिनमें इन शब्दों का प्रयोग हो–

बनते-बनते, पहुँचते-पहुँचते, लेते-लेते, करते-करते

(ख) इन प्रयोगों को पढ़िए–

सड़क के किनारे-किनारे पेड़ लगे हैं।
आज दूर-दूर तक वर्षा होगी।

- इन वाक्यों में 'होते-होते' की तरह 'किनारे-किनारे' और 'दूर-दूर' शब्द दोहराए गए हैं। पर हर वाक्य में अर्थ भिन्न है। किनारे-किनारे का अर्थ है–किनारे से लगा हुआ और दूर-दूर का–बहुत दूर तक।

- आप भी निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए और उनके अर्थ लिखिए–

ठीक-ठीक, घड़ी-घड़ी, कहीं-कहीं, घर-घर, क्या-क्या

2. इस पाठ में दिए गए मुहावरों और कहावतों को पढ़िए और वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

भानुमती का पिटारा, दस्तक देना, धावा बोलना, घर करना, पीठ ठोकना

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ का भाव अपने शब्दों में बता सकता/सकती हूँ। भावों से संबंधित बातचीत कर सकता/सकती हूँ।		
2. इस स्तर की गद्य सामग्री का भाव पढ़ कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. इस स्तर के गद्यांशों की व्याख्या करते हुए लिख सकता/सकती हूँ।		
4. पाठ के शब्दों को अपनी बातचीत में प्रयोग कर सकता/सकती हूँ।		
5. पाठ के आधार पर नारे लिख सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

इकाई – II

7. चिड़िया की बच्ची

प्रश्न :

1. चित्र में क्या दिखायी दे रहा है?
2. गाय और बछड़े साथ क्यों खड़े हैं?
3. तुम्हें अपनी माताजी के साथ रहना क्यों अच्छा लगता है?

छात्रों के लिए सूचनाएँ :

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. पाठ पढ़िए। नये शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

SCERT TELANGANA

माधवदास ने अपनी संगमरमर की नयी कोठी बनवाई है। उसके सामने बहुत सुहावना बगीचा भी लगवाया है। उनको कला से बहुत प्रेम है। धन की कमी नहीं है और कोई व्यसन छू नहीं गया है। सुंदर अभिरुचि के आदमी हैं। फूल-पौधे, रकाबियों से हौज़ों में लगे फव्वारों में उछलता हुआ पानी उन्हें बहुत अच्छा लगता है। समय भी उनके पास काफ़ी है। शाम को जब दिन की गरमी ढल जाती है और आसमान कई रंग का हो जाता है तब कोठी के बाहर चबूतरे पर तख्त डलवाकर मसनद के सहारे वह गलीचे पर बैठते हैं और प्रकृति की छटा निहारते हैं। इनमें मानो उनके मन को तृप्ति मिलती है। मित्र हुए तो उनसे विनोद-चर्चा करते हैं, नहीं तो पास रखे हुए फर्शी हुक्के की सटक को मुँह में दिए खयाल ही खयाल में संध्या को स्वप्न की भाँति गुज़ार देते हैं।

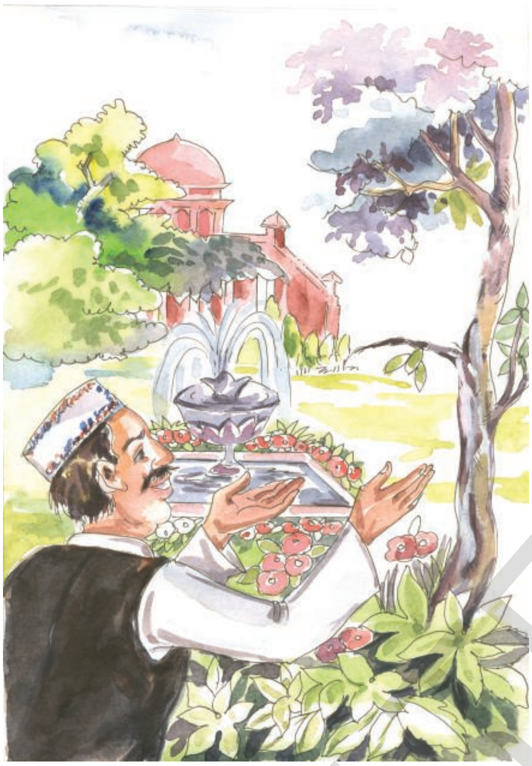

आज कुछ-कुछ बादल थे। घटा गहरी नहीं थी। धूप का प्रकाश उनमें से छन-छनकर आ रहा था। माधवदास मसनद के सहारे बैठे थे। उन्हें ज़िंदगी में क्या स्वाद नहीं मिला है? पर जी भरकर भी कुछ खाली सा रहता है।

उस दिन संध्या समय उनके देखते-देखते सामने की गुलाब की डाली पर एक चिड़िया आन बैठी। चिड़िया बहुत सुंदर थी। उसकी गरदन लाल थी और गुलाबी होते-होते किनारों पर ज़रा-ज़रा नीली पड़ गई थी। पंख ऊपर से चमकदार स्याह थे। उसका नन्हा सा सिर तो बहुत प्यारा लगता था और शरीर पर चित्र-विचित्र चित्रकारी थी। चिड़िया को मानो माधवदास की सत्ता का कुछ पता नहीं था और मानो तनिक देर का आराम भी उसे नहीं चाहिए था। कभी पर हिलाती थी, कभी फुदकती थी। वह खूब खुश मालूम होती थी। अपनी नन्ही सी चोंच से प्यारी-प्यारी आवाज़ निकाल रही थी।

माधवदास को वह चिड़िया बड़ी मनमानी लगी। उसकी स्वच्छंदता बड़ी प्यारी जान पड़ती थी। कुछ देर तक वह उस चिड़िया का इस डाल से उस डाल थिरकना देखते रहे। इस समय वह अपना बहुत-कुछ भूल गए। उन्होंने उस चिड़िया से कहा, "आओ, तुम बड़ी अच्छी आईं। यह बगीचा तुम लोगों के बिना सूना लगता है। सुनो चिड़िया तुम खुशी से यह समझो कि यह बगीचा मैंने तुम्हारे लिए ही बनवाया है। तुम बेखटके यहाँ आया करो।"

चिड़िया पहले तो असावधान रही। फिर जानकर कि बात उससे की जा रही है, वह एकाएक तो घबराई। फिर संकोच को जीतकर बोली, "मुझे मालूम नहीं था कि यह बगीचा आपका है। मैं अभी चली जाती हूँ। पलभर साँस लेने मैं यहाँ टिक गई थी।"

माधवदास ने कहा, "हाँ, बगीचा तो मेरा है। यह संगमरमर की कोठी भी मेरी है। लेकिन, इस सबको तुम अपना भी समझ सकती हो। सब कुछ तुम्हारा है। तुम कैसी भोली हो, कैसी प्यारी हो।

SCERT TELANGANA

जाओ नहीं, बैठो। मेरा मन तुमसे बहुत खुश होता है।"

चिड़िया बहुत-कुछ सकुचा गई। उसे बोध हुआ कि यह उससे गलती तो नहीं हुई कि वह यहाँ बैठ गई है। उसका थिरकना रुक गया। भयभीत-सी वह बोली, "मैं थककर यहाँ बैठ गई थी। मैं अभी चली जाऊँगी। बगीचा आपका है। मुझे माफ़ करें!"

माधवदास ने कहा, "मेरी भोली चिड़िया, तुम्हें देखकर मेरा चित्त प्रफुल्लित हुआ है। मेरा महल भी सूना है। वहाँ कोई भी चहचहाता नहीं है। तुम्हें देखकर मेरी रागनियों का जी बहलेगा। तुम कैसी प्यारी हो, यहाँ ही तुम क्यों न रहो?"

चिड़िया बोली, "मैं माँ के पास जा रही हूँ, सूरज की धूप खाने और हवा से खेलने और फूलों से बात करने मैं ज़रा घर से उड़ आई थी, अब साँझ हो गई है और माँ के पास जा रही हूँ। अभी-अभी मैं चली जा रही हूँ। आप सोच न करें।"

माधवदास ने कहा, "प्यारी चिड़िया, पगली मत बनो। देखो, तुम्हारे चारों तरफ़ कैसी बहार है। देखो, वह पानी खेल रहा है, उधर गुलाब हँस रहा है। भीतर महल में चलो, जाने क्या-क्या न पाओगी! मेरा दिल वीरान है। वहाँ कब हँसी सुनने को मिलती है? मेरे पास बहुत सा सोना-मोती है। सोने का एक बहुत सुंदर घर मैं तुम्हें बना दूँगा, मोतियों की झालर उसमें लटकेगी। तुम मुझे खुश रखना। और तुम्हें क्या चाहिए! माँ के पास बताओ क्या है? तुम यहाँ ही सुख से रहो, मेरी भोली गुड़िया।"

चिड़िया इन बातों से बहुत डर गई। वह बोली, "मैं भटककर तनिक आराम के लिए इस डाली पर रुक गई थी। अब भूलकर भी ऐसी गलती नहीं होगी। मैं अभी यहाँ से उड़ी जा रही हूँ। तुम्हारी बातें मेरी समझ में नहीं आती हैं। मेरी माँ के घोंसले के बाहर बहुतेरी सुनहरी धूप बिखरी रहती है। मुझे और क्या करना है? दो दाने माँ ला देती है और जब मैं पर खोलने बाहर जाती हूँ तो माँ मेरी बाट देखती रहती है। मुझे तुम और कुछ मत समझो, मैं अपनी माँ की हूँ।"

माधवदास ने कहा, "भोली चिड़िया, तुम कहाँ रहती हो? तुम मुझे नहीं जानती हो?"

चिड़िया, "मैं माँ को जानती हूँ, भाई को जानती हूँ, सूरज को और उसकी धूप को जानती हूँ। घास, पानी और फूलों को जानती हूँ। महामान्य, तुम कौन हो? मैं तुम्हें नहीं जानती।"

माधवदास, "तुम भोली हो चिड़िया! तुमने मुझे नहीं जाना, तब तुमने कुछ नहीं जाना। मैं ही तो हूँ सेठ माधवदास। मेरे पास क्या नहीं है! जो माँगो, मैं वही दे सकता हूँ।"

चिड़िया, "पर मेरी तो छोटी सी जात है। आपके पास सब कुछ है। तब मुझे जाने दीजिए।"

माधवदास, "चिड़िया, तू निरी अनजान है। मुझे खुश करेगी तो तुझे मालामाल कर सकता हूँ।"

SCERT TELANGANA

चिड़िया, “तुम सेठ हो। मैं नहीं जानती, सेठ क्या होता है। पर सेठ कोई बड़ी बात होती होगी। मैं अनसमझ ठहरी। माँ मुझे बहुत प्यार करती है। वह मेरी राह देखती होगी। मैं मालामाल होकर क्या होऊँगी, मैं नहीं जानती। मालामाल किसे कहते हैं? क्या मुझे वह तुम्हारा मालामाल होना चाहिए?”

सेठ, “अरी चिड़िया तुझे बुद्धि नहीं है। तू सोना नहीं जानती, सोना? उसी की जगत को तृष्णा है। वह सोना मेरे पास ढेर का ढेर है। तेरा घर समूचा सोने का होगा। ऐसा पिंजरा बनवाऊँगा कि कहीं दुनिया में न होगा, ऐसा कि तू देखती रह जाए। तू उसके भीतर थिरक-फुदककर मुझे खुश करियो। तेरा भाग्य खुल जाएगा। तेरे पानी पीने की कटोरी भी सोने की होगी।”

चिड़िया, “वह सोना क्या चीज़ होती है?”

सेठ, “तू क्या जानेगी, तू चिड़िया जो है। सोने का मूल्य सीखने के लिए तुझे बहुत सीखना है। बस, यह जान ले कि सेठ माधवदास तुझसे बात कर रहा है। जिससे मैं बात तक कर लेता हूँ उसकी किस्मत खुल जाती है। तू अभी जग का हाल नहीं जानती। मेरी कोठियों पर कोठियाँ हैं, बगीचों पर बगीचे हैं। दास-दासियों की संख्या नहीं है। पर तुझसे मेरा चित्त प्रसन्न हुआ है। ऐसा वरदान कब किसी को मिलता है? री चिड़िया! तू इस बात को समझती क्यों नहीं?”

चिड़िया, “सेठ, मैं नादान हूँ। मैं कुछ समझती नहीं। पर, मुझे देर हो रही है। माँ मेरी बाट देखती होगी।”

सेठ, “ठहर-ठहर, इस अपने पास के फूल को तूने देखा? यह एक है। ऐसे अनगिनत फूल हैं। ऐसे अनगिनत फूल मेरे बगीचों में हैं। वे भाँति-भाँति के रंग के हैं। तरह-तरह की उनकी खुशबू हैं। चिड़िया, तैंने मेरा चित्त प्रसन्न किया है और वे सब फूल तेरे लिए खिला करेंगे। वहाँ घोंसले में तेरी माँ है, पर माँ क्या है? इस बहार के सामने तेरी माँ क्या है? वहाँ तेरे घोंसले में कुछ भी तो नहीं है। तू अपने को नहीं देखती? कैसी सुंदर तेरी गरदन। कैसी रंगीन देह! तू अपने मूल्य को क्यों नहीं देखती? मैं तुझे सोने से मढ़कर तेरे मूल्य को चमका दूँगा। तैंने मेरे चित्त को प्रसन्न किया है। तू मत जा, यहीं रह।”

चिड़िया, “सेठ, मैं आपको नहीं जानती। इतना जानती हूँ कि माँ मेरी माँ है और मुझे यहाँ देर हो रही है। सेठ, मुझे रात मत करो, रात में अँधेरा बहुत हो जाता है और मैं राह भूल जाऊँगी।”

सेठ ने कहा, “अच्छा, चिड़िया जाती हो तो जाओ। पर, इस बगीचे को अपना ही समझो। तुम बड़ी सुंदर हो।”

यह कहने के साथ ही सेठ ने एक बटन दबा दिया। उसके दबने से दूर कोठी के अंदर आवाज़ हुई जिसे सुनकर एक दास झटपट भागकर बाहर आया। यह सब छनभर में हो गया और चिड़िया कुछ भी नहीं समझी।

सेठ कहते रहे, “तुम अभी माँ के पास जाओ। माँ बाट देखती होगी। पर, कल आओगी न? कल आना, परसों आना, रोज़ आना।”

SCERT TELANGANA

यह कहते-कहते दास को सेठ ने इशारा कर दिया और वह चिड़िया को पकड़ने के जतन में चला।

सेठ कहते रहे, "सच तुम बड़ी सुंदर लगती हो! तुम्हारे भाई-बहिन हैं? कितने भाई-बहिन हैं?"

चिड़िया, "दो बहिन, एक भाई। पर मुझे देर हो रही है।"

"हाँ हाँ जाना। अभी तो उजेला है। दो बहन, एक भाई है? बड़ी अच्छी बात है।"

पर चिड़िया के मन के भीतर जाने क्यों चैन नहीं था। वह चौकन्नी हो-हो चारों ओर देखती थी। उसने कहा, "सेठ मुझे देर हो रही है।"

सेठ ने कहा, "देर अभी कहाँ? अभी उजेला है, मेरी प्यारी चिड़िया! तुम अपने घर का इतने और हाल सुनाओ। भय मत करो।"

चिड़िया ने कहा, "सेठ मुझे डर लगता है। माँ मेरी दूर है। रात हो जाएगी तो राह नहीं सूझेगी।"

इतने में चिड़िया को बोध हुआ कि जैसे एक कठोर स्पर्श उसके देह को छू गया। वह चीख देकर चिचियाई और एकदम उड़ी। नौकर के फैले हुए पंजे में वह आकर भी नहीं आ सकी। तब वह उड़ती हुई एक साँस में माँ के पास गई और माँ की गोद में गिरकर सुबकने लगी, "ओ माँ, ओ माँ!"

माँ ने बच्ची को छाती से चिपटाकर पूछा, "क्या है मेरी बच्ची, क्या है?"

पर, बच्ची काँप-काँपकर माँ की छाती से और चिपक गई, बोली कुछ नहीं, बस सुबकती रही, "ओ माँ, ओ माँ!"

बड़ी देर में उसे ढाढ़स बँधा और तब वह पलक मींच उस छाती में ही चिपककर सोई। जैसे अब पलक न खोलेगी।

❒जैनेंद्र कुमार

SCERT TELANGANA

सुनिए–बोलिए

1. इस कहानी को कोई और शीर्षक देना हो तो आप क्या देना चाहेंगे और क्यों?
2. "माँ मेरी बाट देखती होगी"– नन्हीं चिड़िया बार–बार इसी बात को कहती है। आप अपने अनुभव के आधार पर बताइए कि हमारी ज़िंदगी में माँ का क्या महत्व है?
3. चिड़ियाघर के जीव–जंतुओं के बारे में अपने विचार बताइए।

पढ़िए

1. किन बातों से ज्ञात होता है कि– माधवदास का जीवन संपन्नता से भरा था?
2. किन बातों से पता चलता है कि माधवदास सुखी नहीं था?
3. माधवदास क्यों बार–बार चिड़िया से कहता है कि यह बगीचा तुम्हारा ही है?
4. माधवदास ने चिड़िया से संबोधन के लिए किन–किन शब्दों का प्रयोग किया है?

लिखिए

1. माधवदास के बार–बार समझाने पर चिड़िया सोने के पिंजरे को महत्व नहीं दे रही थी। क्यों?
2. ऐसा क्यों कहा जाता है कि "पराधीन व्यक्ति को सपने में भी सुख नहीं मिल पाता"? अपने विचार लिखिए।
3. कहानी के अंत में नयी चिड़िया का सेठ के नौकर के पंजे से भाग निकलने की बात सुनकर तुम्हें कैसा लगा?
4. "तू क्या जानेगी, तू चिड़िया जो है। सोने का मूल्य सीखने के लिए तुझे बहुत सीखना है।" भाव लिखिए।

शब्द भंडार

रेखांकित शब्दों से दो–दो वाक्य बनाइए।

1. मैं भटककर <u>तनिक</u> आराम के लिए इस डाली पर रुक गयी थी।

SCERT TELANGANA

2. तुम <u>बेखटके</u> यहाँ आया करो।

3. यह बगीचा <u>आपका</u> है।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

■ चिड़िया की बच्ची जब अपनी माँ के पास पहुँची होगी, तो उसने क्या बातें की होगी? दोनों की बातें संवाद रूप में लिखिए।

प्रशंसा

■ इस पाठ में चिड़िया को सेठ ने बहुत लालच दिये, लेकिन वह उसकी बातों में नहीं आयी। इस बात के लिए चिड़िया की प्रशंसा करते हुए अपने विचार लिखिए।

भाषा की बात

1. पाठ में <u>पर</u> शब्द के तीन प्रकार के प्रयोग हुए हैं–

   क. गुलाब की डाली पर एक चिड़िया <u>आन</u> बैठी है।

   ख. कभी <u>पर</u> हिलाती थी।

   ग. <u>पर</u> बच्ची काँप–काँप कर माँ की छाती से और चिपक गयी।

   तीनों पर के प्रयोग तीन उद्देश्यों से हुए है। इन वाक्यों का आधार लेकर आप भी पर का प्रयोग कर ऐसे तीन वाक्य बनाइए जिनमें अलग–अलग उद्देश्यों के लिए पर के प्रयोग हुए हों।

2. पाठ में **तैंने, छनभर, खुश करियो**–तीन वाक्यांश ऐसे हैं जो खड़ी बोली हिंदी के वर्तमान रूप में तूने, क्षणभर, खुश करना लिखे–बोले जाते हैं। लेकिन हिंदी के निकट की बोलियों में कहीं–कहीं इनके प्रयोग होते हैं। इस तरह के कुछ अन्य शब्दों की खोज कीजिए।

परियोजना कार्य

■ दस पक्षियों के चित्र एकत्र कीजिए। और उनके बारे में तीन–तीन वाक्य लिखिए।

SCERT TELANGANA

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ का भाव अपने शब्दों में बता सकता/सकती हूँ। भावों से संबंधित बातचीत कर सकता/सकती हूँ।		
2. इस स्तर की गद्य सामग्री का भाव पढ़ कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. इस स्तर के गद्यांशों की व्याख्या करते हुए लिख सकता/सकती हूँ।		
4. पाठ के शब्दों को अपनी बातचीत में प्रयोग कर सकता/सकती हूँ।		
5. पाठ के आधार पर संवाद लिख सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

इकाई – II

पापा खो गए

(उपवाचक पाठ)

पात्र	
बिजली का खंभा	नाचनेवाली
पेड़	लड़की
लैटरबक्स	आदमी
कौआ	

सड़क। रात का समय। समुद्र के सामने फुटपाथ। वहीं पर एक बिजली का खंभा। एक पेड़। एक लैटरबक्स। दूसरी ओर धीमे प्रकाश में एक सिनेमा का पोस्टर। पोस्टर पर नाचने की भंगिमा में एक औरत की आकृति। समुद्र से सनसनाती हवा का बहाव। दूर कहीं कुत्तों के भौंकने की आवाज़।

खंभा : ***(जम्हाई रोकते हुए)*** राम राम राम! रात बहुत हो गई।

पेड़ : आजकल की रातें कैसी हैं! जल्दी बीतने में ही नहीं आतीं।

खंभा : दिन तो कैसे-न-कैसे हड़बड़ी में बीत जाता है।

पेड़ : लेकिन रात को बड़ी बोरियत होती है।

खंभा : तब भी बरसात की रातों से तो ये रातें कहीं अच्छी हैं, पेड़राजा! बरसात की रातों में तो रातभर भीगते रहो, बादलों से आनेवाले पानी की मार खाते रहो, तेज़ हवाओं में भी बल्ब को कसकर पकड़े बराबर एक टाँग पर खड़े रहो–बिलकुल अच्छा नहीं लगता। उस वक्त लगता है, इससे तो अच्छा था... न होता बिजली के खंभे का जन्म! बल्ब फेंक, तब दूर कहीं भाग जाने का जी होता है।

पेड़ : मुझ पर भी एक रात आसमान से गड़गड़ाती बिजली आकर पड़ी थी। अरे, बाप रे! वो बिजली थी या आफ़त! याद आते ही अब भी दिल धक-धक करने लगता है और बिजली जहाँ गिरी थी वहाँ खड्डा कितना गहरा पड़ गया था, खंभे महाराज! अब जब कभी बारिश होती है तो मुझे उस रात की याद हो आती है। अंग थरथर काँपने लगते हैं।

खंभा : मेरी तबीयत ही लोहे की है जो मैं बीमार नहीं पड़ता, वरना कोई भी इस तरह बारिश, ठंडी, धूप में खड़ा रहे, तो ज़रूर बीमार पड़ जाए। पड़ जाएगा या नहीं? कितने दिन बीत गए, कितनी रातें, लेकिन मैं बराबर इसी तरह खड़ा हूँ। ***(लंबी ठंडी साँस छोड़कर)*** छे! चुंगी की यह नौकरी भी कोई नौकरी है!

SCERT TELANGANA

पेड़ : अपने पत्तों का कोट पहनकर मुझे सरदी, बारिश या धूप में उतनी तकलीफ़ नहीं होती, तो भी तुमसे बहुत पहले का खड़ा हूँ मैं यहाँ। यहीं मेरा जन्म हुआ—इसी जगह। तब सब कुछ कितना अलग था यहाँ। वहाँ के, वे सब ऊँचे-ऊँचे घर नहीं थे तब। यह सड़क भी नहीं थी। वह सिनेमा का बड़ा सा पोस्टर और उसमें नाचनेवाली औरत भी तब नहीं थी। सिर्फ़ सामने का यह समुद्र था। बहुत अकेलापन महसूस होता था। तुम्हें जब यहाँ लाकर खड़ा किया गया तो सोचा, चलो कोई साथी तो मिला—इतना ही सही। लेकिन वो भी कहाँ? तुम शुरू-शुरू में मुझसे बोलने को ही तैयार नहीं थे। मैंने बहुत बार कोशिश की, पर तुम्हारी अकड़ जहाँ थी वहीं कायम! बाद में मैंने भी सोच लिया, इसकी नाक इतनी ऊँची है तो रहने दो। मैंने भी कभी आवाज़ नहीं लगाई, हाँ! अपना भी स्वभाव ज़रा ऐसा ही है।

खंभा : और एक दिन जब आँधी-पानी में मैं बिलकुल तुम्हारे ऊपर ही आ पड़ा?

पेड़ : बाप रे! कैसा था वो आँधी-पानी का तूफ़ान! अबबऽब!

खंभा : तुम खड़े थे, इसीलिए मैं कुछ संभल गया, हाँ। तुमने मुझे ऊपर का ऊपर झेल लिया, वह अच्छा हुआ। चाहे तुम खुद काफ़ी ज़ख्मी हो गए। बाद में मेरा गरूर भी झड़ गया और अपनी दोस्ती हो गई।

पेड़ : हूँ! हवा आज भी बहुत है।

दोनों चुप। हवा की आवाज़। कुत्ते का भौंकना। पोस्टर पर बनी नाचनेवाली औरत टेढ़ी हो जाती है। उसके घुँघरू बजते हैं। वह फिर पहले की तरह स्थिर हो जाती है। लैटरबक्स किसी दोहे का एक चरण गुनगुनाता है और रुक जाता है।

कौआ : ***(पेड़ के पीछे से झाँककर)*** काँऽव। कौन है जो रात के वक्त इतनी मीठी आवाज़ें लगाकर मेरी नींद खराब करता है? ज़राभर चैन नहीं इन्हें।

लैटरबक्स : हूँ! मीठी आवाज़ में नहीं गाएँ तो क्या इस कौए जैसी कर्कश काँव-काँव करें? कहता है—ज़राभर भी चैन नहीं। ***(पेट में हाथ डालकर एक पत्र निकालता है। धीरे से जीभ को लगाकर खोलता है। उसमें से कागज़ निकालकर रोशनी में पढ़ने लगता है।)*** यह किसकी चिट्ठी आकर पड़ी है? हैडमास्टर? ठीक। क्या कहता है? श्रीमान, श्रीयुत् गोविंद राव जी...ऊँ-ऊँ...आपका लड़का परीक्षित पढ़ाई में काफ़ी कमज़ोर है। क्लास में उसका ध्यान पढ़ाई में बिलकुल नहीं रहता। इसकी बजाय उसे क्लास से गायब रहकर बंटे खेलना ज़्यादा अच्छा लगता है। आप एक बार खुद आकर मुझसे मिलिए...मिलिए? परीक्षित के पापा हैडमास्टर से मिल भी लेंगे, तो क्या हो जाएगा? स्कूल में बच्चे पढ़ें नहीं, क्लास से गायब रहकर बंटे खेलते रहें, इसका क्या मतलब? फ़ीस के पैसे क्या फोकट में आते हैं? सभी पापा लोग आफ़िस में इतना काम करते हैं तब कहीं जाकर मिलते हैं पैसे। उन्हें ये बच्चे फोकट के समझें, आखिर क्यों? छे!

SCERT TELANGANA

मुझे हैडमास्टर होना चाहिए था। इस परीक्षित के होश तब मैं अच्छी तरह ठिकाने लगाता। ***(वह पत्र रखकर दूसरा निकालता है।)*** यह किसका है?

खंभा : क्यों, लाल ताऊ, आज किस-किस के पत्र चोरी-चोरी पढ़ते रहे?

लैटरबक्स : ***(आश्चर्य से)*** चोरी-चोरी? चोरी किसलिए? सभी चिट्ठियाँ मेरे ही तो कब्ज़े में होती हैं। अच्छी तरह रोज़-रोज़ पढ़ता हूँ।

पेड़ : कब्ज़े में होने का मतलब यह तो नहीं, लाल ताऊ, कि लोगों की चिट्ठियाँ फाड़-फाड़कर पढ़ते रहो? पोस्टमास्टर को पता चल गया तो?

लैटरबक्स : चलता है पता तो चल जाने दो। मेरी तरह यहाँ रात-दिन बैठकर दिखाएँ तब पता चले। परसों वह पोस्टमैन मेरे पेट में से चिट्ठियाँ निकाल रहा था और मुझे इतनी लंबी जम्हाई आई कि रोके नहीं रुकी। ***(जम्हाई लेता है।)*** वह देखता ही रह गया। चिट्ठियों का बंडल बनाकर जल्दी-जल्दी चलता बना वह। लेकिन यह लैटरबक्स, इसे नहीं बोरियत होती एक जगह बैठे-बैठे? मैं कहता हूँ, चार चिट्ठियाँ मन बहलाने के लिए पढ़ भी लीं तो क्या हो गया?

पेड़ : लेकिन चिट्ठी जिसे लिखी गई हो, लाल ताऊ, उसे ही पढ़नी चाहिए। वह प्राइवेट होती है प्राइवेट।

लैटरबक्स : मैं कहाँ किसी की चिट्ठी पास रख लेता हूँ? जिसकी होती है उसे मिल ही जाती है। किसी की गुप्त बातें मैं कब बाहर निकलने देता हूँ? वह मुझ तक ही रहती हैं। इसीलिए तो मुझे अपना बहुत महत्त्व लगता है।

पेड़ : कोई आ रहा लगता है–

सब चुप हो जाते हैं। पोस्टर पर बनी नाचनेवाली का संतुलन फिर से बिगड़ता है। फिर पहले की तरह स्थिर और स्तब्ध हो जाती है। तेज़ हवा की भनभनाहट। भिखारी जैसा एक आदमी आता है। उसके कंधे पर सोई हुई एक लड़की है।

आदमी : मैं बच्चे उठानेवाला हूँ। दूसरा कोई काम करने की मेरी इच्छा नहीं होती। अभी थोड़ी देर पहले एक घर से यह लड़की उठाई है मैंने। गहरी नींद सो रही थी। अब तक उठी नहीं है। उठेगी भी नहीं, मैंने इसे थोड़ी बेहोशी की दवा जो दी है। अब मुझे लगी है भूख। दिनभर कुछ खाने का वक्त ही नहीं मिला। पेट में जैसे चूहे दौड़ रहे हों!...तो ऐसा किया जाए...इसे यहीं लेटाकर अपने लिए ज़रा कुछ खाने की तलाश करें...देखें कुछ मिल जाए तो! इतनी रात गए यहाँ इस वक्त अब किसी का आना मुमकिन नहीं।

पेड़ की ओट में लड़की को डाल देता है। उस पर अपना कोट फैला देता है और इधर-उधर ज़रा चौकस होकर देखता है। फिर एक-एक कदम सावधानी से रखता हुआ निकल जाता है।

खंभा : ***(पेड़ से)*** श-ऽऽ! पेड़ राजा, दाल में कुछ काला नज़र आता है।

SCERT TELANGANA

पेड़	:	वह ज़रूर बहुत बुरा आदमी है कोई। और यह लड़की तो छोटी सी है।
लैटरबक्स	:	वह उसे कहीं से उठाकर लाया है। मैंने सुना है।
पेड़	:	***(कौए को जगाते हुए)*** श श श! एऽए कौए, जाग न? जाग!
कौआ	:	दिन हो गया?
पेड़	:	नहीं, दिन नहीं हुआ, पर एक दुष्ट आदमी एक छोटी सी लड़की को कहीं से उठाकर ले आया है। चुप्प! वो आदमी इस वक्त यहाँ नहीं है। वो लड़की उठ जाएगी तो चिल्लाएगी।
कौआ	:	***(आलस से उठते हुए)*** आँखों पर एक चुल्लू पानी डालकर अभी आया। ***(जाता है।)***
खंभा	:	भयंकर, बहुत ही भयंकर!
पेड़	:	***(झुककर लड़की को देखकर)*** बच्ची बहुत प्यारी है। कौन जाने किसकी है!
लैटरबक्स	:	***(मुड़कर देखते हुए)*** नासपीटे ने सोई हुई को उठा लिया कहीं से। चील जैसे चूहा उठा लेती है, वैसे।
खंभा	:	मैं भी देखना चाहता हूँ उसे, पर मुझसे झुका ही नहीं जाता। लाल ताऊ, अभी भी सो रही है क्या वो?
लैटरबक्स	:	हाँ–हाँ...हाँ, खंभे महाराज।
कौआ	:	***(आकर)*** कौन उठा लाया? किसे? बोलो अब।
पेड़	:	इसे...इस छोटी लड़की को एक दुष्ट आदमी उठा लाया है।
कौआ	:	***(देखकर)*** अच्छा...यह लड़की! और वह दुष्ट आदमी कहाँ है? इसे उठाकर लानेवाला?
खंभा	:	वह ज़रा गया है खाने की तलाश में...भूख लगी थी उसे।
लैटरबक्स	:	थोड़ी ही देर में आ जाएगा नासपीटा! और यह खिलौने-सी बच्ची...***(गला रुँध जाता है।)*** नहीं नहीं, ऐसी कल्पना भी नहीं की जा सकती। कौन जाने क्या होगा इस बच्ची का!
कौआ	:	हाँ सच! आजकल कुछ दुष्ट लोग बच्चों को उठा ले जाते हैं। मैं तो घूमता रहता हूँ न? ऐसा होते देखा है।
पेड़	:	मैं बताऊँ? अपन यह काम नहीं होने देंगे।
लैटरबक्स	:	पर मैं कहता हूँ, यह होगा कैसे?
खंभा	:	होगा कैसे मतलब? उस दुष्ट को मज़े से इस बच्ची को उठा ले जाने दें?
कौआ	:	वह दुष्ट है कौन? पहले उसे नज़र तो आने दीजिए।
लैटरबक्स	:	मैंने देखा है नासपीटे को। अच्छी तरह करीब से देखा है। बहुत ही दुष्ट लगा मुझे तो। कैसी नज़र थी उसकी! घड़ीभर को तो मुझे लगा, कहीं यह मुझे ही न उठा ले जाए।

SCERT TELANGANA

कौआ : ताऊ, आपको?

खो खो करके हँसता है। छोटी लड़की अब तक कुछ जाग चुकी है। अधखुली आँखों से सामने देखती है—पेड़, खंभा, लैटरबक्स और कौआ एक दूसरे से बातें कर रहे हैं।

लैटरबक्स : इतना मुँह फाड़कर हँसने की क्या बात है इसमें?

खंभा : उसकी वह गंदी नज़र, यहाँ से मुझे भी खूब अच्छी तरह दिखाई दे रही थी।

पेड़ : छोटे बच्चों को उठाने से ज़्यादा बुरा काम और क्या हो सकता है?

लड़की उठकर बैठ जाती है। स्वप्न देखने जैसी भाव-मुद्रा।

लैटरबक्स : कैसा मन होता है नासपीटों का? उनका वहीं जानें! उनका वही जानें!

कौआ : ताऊ, एक जगह बैठे रहकर यह कैसे जान सकोगे? उसके लिए तो मेरी तरह रोज़ चारों दिशाओं में गश्त लगानी पड़ेगी, तब जान पाओगे यह सब।

पेड़ : काफ़ी समझदार है तू। अरे यह हमसे कैसे हो सकेगा?

लड़की स्वप्न देखती हुई-सी खड़ी है।

लड़की : अं? क्या? ये सब बोल रहे हैं? लैटरबक्स, बिजली का खंभा, यह पेड़...कौआ...

कौआ सबको इशारा करता है। तभी सब एकदम चुप, स्तब्ध हो जाते हैं। लड़की इन सबके पास जाकर खड़ी हो जाती है। अच्छी तरह सबको देखती है, पर सभी निर्जीव लगते हैं।

लड़की : ये तो ठीक लग रहे हैं। फिर मुझे जो दिखाई दिया वह सपना था...या कुछ और? ***(फिर गौर से देखती है, सभी निःस्तब्ध।)*** कौन बोल रहा था? कौन गप्पें मार रहा था? ***(सभी चुप)*** कौन बातें कर रहा था? मुझे...मुझे डर लग रहा है। मैं कहाँ हूँ? यह... यह सब क्या है? मेरा घर कहाँ है? मेरे पापा कहाँ हैं? मम्मी कहाँ हैं? कहाँ हूँ मैं? मुझे...मुझे बहुत डर लग रहा है...बहुत डर लग रहा है। कैसा अँधेरा है चारों तरफ़! रात है...सपना देख रही थी मैं। पर सब सच है...कोई तो बोलो न...नहीं तो चीखूँगी मैं... चीखूँगी।

सभी चुप। स्तब्ध। लड़की घबराकर एक कोने में अंग सिकोड़कर बैठ जाती है। फिर अपना सिर घुटनों में डाल लेती है।

लड़की : मुझे डर लग रहा है...मुझे डर लग रहा है...

लैटरबक्स : ***(पेड़ से)*** अब मुझसे चुप नहीं रहा जाता...बहुत घबरा गई है। ***(आगे सरककर)*** बच्ची घबरा मत...

लड़की : ***(पहले ऊपर देखती है फिर सामने)*** कौन?

लैटरबक्स : मैं हूँ, लैटरबक्स।

लड़की : तुम...तुम बोलते हो?

लैटरबक्स : हाँ, मेरे मुँह नहीं है क्या?

लड़की : तुम चलते भी हो?

SCERT TELANGANA

लैटरबक्स : हाँ, आदमियों को देख-देखकर।
लड़की : सच?
लैटरबक्स : उसमें क्या है? ***(थोड़ा चलकर दिखाता है)*** पर तू घबरा मत।
लड़की : ***(एकदम खिलखिलाकर हँसती है।)*** मज़्ज़ा!
लैटरबक्स बोलता है...चलता भी है!
लैटरबक्स : ***(खुश होकर)*** वैसे मैं थोड़ा सा गा भी लेता हूँ। कुछ भजन वगैरह।
लड़की : सच?
लैटरबक्स : ***(भजन की एक लाइन गाता है।)*** हूँ!
लड़की : तुम मज़ेदार हो। बहुत-बहुत अच्छे हो।
लैटरबक्स : पर मैं बहुत लाल हूँ। नासपीटों के पास जैसे दूसरा रंग ही नहीं था। लाल रंग पोत दिया मुझ पर।
लड़की : लैटरबक्स, तुम सच्ची बहुत अच्छे हो। पर मुझे न, अभी भी बिलकुल सच नहीं लग रहा है। सपना लग रहा है...सपना।
लैटरबक्स : कभी न देखी हो ऐसी चीज़ देख लो यों ही लगता है। तू रहती कहाँ है?
लड़की : मैं अपने घर में रहती हूँ।
लैटरबक्स : बहुत अच्छे! हर किसी को अपने घर ही रहना चाहिए। पर तेरा यह घर है कहाँ?
लड़की : हँ? घर...हमारी गली में है।
लैटरबक्स : हम जैसे अपने घरों में रहते हैं वैसे ही घर भी गली में हो तो अच्छा रहता है। पर यह गली है कहाँ?
लड़की : सड़क पर। आसान तो है मिलनी। हमारी गली एक बड़ी सड़क पर है, हाँ। उस सड़क पर न, आदमी-ही-आदमी आते-जाते रहते हैं।
लैटरबक्स : यह तो अच्छा ही है कि हम घरों में हों, घर गली में, गलियाँ सड़कों पर और सड़कों पर बहुत से लोग हों। इससे चोरी-वोरी भी कम होती है। पर तुम्हारी इस सड़क का नाम क्या है?
लड़की : नाम? हमारे घरवाली सड़क।
लैटरबक्स : अरे, वह तो तुम्हारा दिया हुआ नाम है न? जैसे मुझे सबने नाम दिया है लाल ताऊ। पर मेरा असली नाम तो लैटरबक्स है।
लड़की : ये सब कौन? ये सब यानी कौन? यहाँ तो कोई नहीं है।
लैटरबक्स : ***(हड़बड़ाकर)*** है। नहीं-नहीं...यहाँ तो कोई नहीं। मैं वैसे बता रहा था तुझे...कोई मुझे ऐसे कहे तो...

पेड़, खंभा, कौआ-सभी ठंडी लंबी साँस लेते हैं।

लैटरबक्स : तो तेरी उस सड़क का-लोगों का दिया हुआ नाम क्या है?
लड़की : मुझे नहीं पता। सभी उसे सड़क कहते हैं, सच। कोई-कोई रोड भी कहता है, रोड।

SCERT TELANGANA

लैटरबक्स : ***(पेट से लिफ़ाफ़े निकालकर दिखाते हुए)*** यह देख, इस पर जैसे पता लिखा हुआ है, वैसा पता नहीं है तेरा?

लड़की : मुझे नहीं पता। सच्ची, मुझे नहीं पता।

खंभा : ***(बीच में ही)*** कमाल है!

लड़की आश्चर्य से खंभे की तरफ़ देखती है। वह चुप।

लड़की : कौन बोला यह, कमाल है? अँ...कौन?

लैटरबक्स : खंभा...***(जीभ काटकर)*** नहीं-नहीं, यूँ ही लगा है तुझे। यूँ ही...

लड़की : मुझे सुनाई दिया है वहाँ से...ऊपर से।

पेड़ : हँ! ***(एकदम मुँह पर टहनी रखता है।)***

लड़की : देखो, वहाँ से...वहाँ से आई है आवाज़। ज़रूर आई है। उस पेड़ पर से आई है।

कौआ : मैंने नहीं की। ***(चोंच दबाकर रखता है।)***

लड़की : कौन बोला यह? कौन? कौआ?

खंभा : गधा है यह भी।

पेड़ : जब न बोलना हो तो ज़रूर...

पोस्टर पर बनी नाचनेवाली का संतुलन पुनः बिगड़ता है। वह फिर से अपने पाँव टिकाती है। घुँघरुओं की आवाज़।

लड़की : वो देखो, देखो, कोई नाच रहा है। ***(सभी एकटक देखते रहते हैं।)*** क्या है यह? क्या है? कौन बोलता है? कौन नाच रहा है? कौन?

लैटरबक्स : ***(प्यार से)*** देख, तू बिलकुल घबरा मत। हमीं बोल रहे हैं, हमीं नाच रहे हैं, चल रहे हैं, गा भी रहे हैं।

लड़की : हमीं मतलब कौन? बताओ न? बताओ जल्दी।

लैटरबक्स : हमीं...यानी कि हमीं...मैं लैटरबक्स, यह पेड़...वह बिजली का खंभा...यह कौआ भी। वह सिनेमा का पोस्टर।

लड़की : कसम से?

लैटरबक्स : कसम से। बस इनसानों के सामने हम नहीं करते यह सब। इनसानों को ऐसा दिखाई देता है, भूत करते हैं यह सब तो। घबरा जाते हैं। इसीलिए जब हम अकेले होते हैं तब बोलते, चलते, नाचते...

नाचनेवाली का संतुलत पुनः बिगड़ता है। घुँघरुओं की आवाज़। वह फिर पहले की स्थिति में आती है।

SCERT TELANGANA

लड़की : मज़े हैं। खूब-खूब मज़े हैं! ***(अपने इर्द-गिर्द सबको देखती है।)*** लैटरबक्स, अब मुझे यहाँ डर नहीं लगता...ज़रा भी डर नहीं लगता।

खंभा
पेड़ : शाब्बाश!
कौआ

लड़की हैरान होती है, फिर ताली बजाकर खिलखिलाकर हँसती है।

लड़की : सब चलकर पहले मेरे पास आओ। ***(सभी पहले हिचकिचाते हैं।)*** आओ न पास. ..। नहीं तो मैं नहीं बोलूँगी, जाओ। ***(सब बारी-बारी से पास आते हैं।)*** बैठो। ***(सब बैठ जाते हैं, सिर्फ़ खंभा सीधा खड़ा है।)*** खंभे...खंभे, नीचे बैठो। ***(वह अभी भी खड़ा है।)*** बैठो न! देखो, नहीं तो मैं रोऊँगी।

लैटरबक्स : अरे, मैं बताता हूँ तुझे। उससे बिलकुल बैठा नहीं जाता।

लड़की : क्यों?

पेड़ : क्योंकि जब से वह यहाँ खड़ा किया गया तबसे कभी बिलकुल बैठा ही नहीं।

लड़की : ***(व्याकुल होकर)*** अय्या रे! मतलब यह बिच्चारा लगातार खड़ा ही रहता है, टीचर से जैसे सज़ा मिली हो? ***(खंभा स्वीकृतिसूचक गरदन हिलाता है।)*** फिर तो चलो, हम सब मिलकर इसे बिठाते हैं। हँ? चलो...

सब मिलकर बड़े यत्न से खंभे को बैठाते हैं। बैठने में उसे बहुत तकलीफ़ होती है, लेकिन बाद में बैठ जाता है।

लड़की : ***(ताली बजाती है।)*** एक लड़का बैठ गया। बैठ गया जी, एक लंबा लड़का बैठ गया!

खंभा : ***(ज़रा सुख महसूस करते हुए)*** बहुत अच्छा लग रहा है बैठकर। सच-सच बताऊँ? हम खड़े रहते हैं न, तब बैठने का सपना देखते हैं। सपने में भी बैठना कितना अच्छा लगता है!

लड़की : मुझे भी वैसा ही लग रहा है। मैं यहाँ कैसे आ गई? मुझे बिलकुल भी पता नहीं।

पेड़ : मैंने देखा था...***(जीभ काटता है।)*** अहँ...मैंने नहीं देखा, मैं यह कह रहा था।

लड़की : यह लड़का जो जी में आए बोल देता है। तुम्हें ज़ीरो नंबर।

पेड़ : ***(खंभे को आँख मारकर)*** चलो ठीक। ज़ीरो तो ज़ीरो सही।

लड़की : ए, हम अब खेलें? हँ? ***(पोस्टर पर बनी नाचनेवाली का संतुलन फिर खोता है। घुँघरुओं की आवाज़।)*** मज़्ज़ा! एक लड़की बार-बार गिर रही है। गिर रही है। ***(ज़रा सोचकर)*** ए, मैं तुम्हें नाच करके दिखाऊँ? हँ? मेरी मम्मी ने सिखाया है मुझे। दिखाऊँ करके?

सभी : हाँ, हाँ, दिखाओ न? वाह!

लड़की नाच करने लगती है।

पेड़ : ***(खंभे से धीरे से)*** थोड़ी देर में वह भी आ जाएगा।

SCERT TELANGANA

खंभा : कौन?
पेड़ : वह...वही...दुष्ट आदमी...वह बच्चे उठानेवाला।
खंभा : सचमुच! ***(कौए से)*** उसके आने का वक्त हो गया।
कौआ : किसके?
खंभा : हूँ...उस बच्चे उठानेवाले का। इसे अभी ले जाएगा वह।
लैटरबक्स : बाप रे! तब फिर?
पेड़ : क्या किया जाए?
खंभा : कुछ तो करना ही पड़ेगा!
पेड़ : लेकिन क्या?

पोस्टर पर बनी नाचनेवाली आती है। लड़की और वह दोनों मिलकर नाचने लगती हैं। सभी दाद देते हैं। नाच खूब रंग में आता है। सभी भाग लेते हैं पर बीच में ही एक दूसरे के कान में कुछ फुसफुसाते हैं। पुनः नाचते हैं। दाद देते हैं। तभी वह दुष्ट आदमी आता है। देखते ही सब निःस्तब्ध। नाचनेवाली पोस्टर के बीच जा खड़ी होती है। सभी अपनी-अपनी जगह पर और वह लड़की घबराकर पेड़ के पीछे दुबक जाती है।

आदमी : ***(मूँछों पर हाथ फेरकर डकार लेता है।)*** वाह! पेट भर खा लिया। अब आगे चला जाए। ***(लड़की जहाँ सो रही थी वहाँ देखता है, सिर्फ़ कोट ही वहाँ दिखाई पड़ता है। उसका चेहरा बदलता है।)*** कहाँ गई? गई कहाँ वह छोकरी? मैं छोड़ूँगा नहीं उसे। अभी, पकड़ के लाता हूँ। मुझे चकमा देती है!

ढूँढ़ने लगता है। पेड़, खंभा, लैटरबक्स, पोस्टर इन सबके बीचोंबीच लपक-झपक कर लड़की बचने का प्रयत्न करती है और वह दुष्ट आदमी पीछे-पीछे। होते-होते सभी वस्तुएँ सरकते-सरकते उसके रास्ते में आने लगती हैं। उस छोटी लड़की का संरक्षण करने लगती हैं। धीरे-धीरे इस सारे क्रम का वेग बढ़ने लगता है जिसे ढोलक या तबले की ताल भी मिलती है। लड़की किसी भी तरह उस दुष्ट आदमी के हाथ नहीं लगती। तभी एकदम से कौआ चिल्लाता है।

कौआ : भूत!

पीछे-पीछे पेड़, खंभा, लैटरबक्स नाचते हुए चिल्लाने लगते हैं।

पेड़
खंभा
लैटरबक्स : भूत...भूत!

तीनों और ज़्यादा ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाते-चीखते हैं। इसी के साथ 'भूत-भूत' करता वह दुष्ट आदमी घबराकर भाग निकलता है। सभी पेट पर हाथ रखे जी भरकर हँसते हैं।

SCERT TELANGANA

खंभा : मज़ा आ गया!

कौआ : खूब भद्द उड़ाई!

पेड़ : क्यों उठाकर लाया था बच्ची को? बड़ा आया बच्चे चुराकर भागनेवाला! अच्छी खातिर की उसकी!

लैटरबक्स : अच्छी नाक कटी दुष्ट की।

खंभा : अरे, पर वो कहाँ है?

कौआ : वो कौन?

पेड़ : कौन?

खंभा : वो...वो छोटी...लड़की अपनी...

लैटरबक्स : अरे-अरे वो...वो कहाँ गई?

पेड़ : कौन?

कौआ : देखूँ...देखते हैं...

इधर-उधर देखते हैं, पर लड़की का कहीं पता नहीं। सभी चिंताग्रस्त।

खंभा : गई कहाँ?

कौआ : यहीं तो थी।

पेड़ : कहीं नहीं मिल रही।

लैटरबक्स : उठाकर तो नहीं ले गया बच्ची को बदमाश?

फिर से ढूँढ़ते हैं। लड़की नहीं मिलती। सभी घबराए हुए हैं। पोस्टर पर बनी नाचनेवाली भी जहाँ की तहाँ उसी भंगिमा में बैठी है।

कौआ : ***(निराश)*** नहीं भई, कहीं दिखाई नहीं देती।

पेड़ : मुझे तो लगता है, बहुत करके वही ले गया होगा उसे...

लैटरबक्स : कितनी प्यारी बच्ची थी रे, कितनी प्यारी!

खंभा : और स्वभाव कितना अच्छा था उसका।

सभी शोकग्रस्त बैठे हैं। तभी नाचनेवाली के पीछे से लड़की धीरे से झाँकती है।

लड़की : ***(शरारत से)*** मैं यहाँ हूँ...मुझे पकड़ो!

सभी आनंदित होकर इधर-उधर देखने लगते हैं। उसे पकड़ने दौड़ते हैं। वह पकड़ में नहीं आती। सबको भगाती रहती है। सब थक जाते हैं। आखिर कौआ उसे पकड़ता है।

कौआ : ***(धप से)*** कैसे पकड़ ली!

लड़की : पर पहले कैसे घबरा गए थे सब? अहा! मज़्ज़ा! ***(ताली बजाती है। पोस्टर पर बनी नाचनेवाली भी ताली बजाती है। लड़की थककर बैठ जाती है।)*** खूब मज़्ज़ा आया।

SCERT TELANGANA

मुझे ज़रा साँस लेने दो अब। ए, पर मैं बहुत घबरा गई थी उस दुष्ट आदमी से। तुम्हीं ने बचा लिया मुझे। अहा मुझे...बहुत नींद आ रही है। थक गई मैं। ***(लेटती है।)*** बहुत थक गई। मुझे उठा देना, हाँ...फिर हम मज़ा करेंगे...बहुत थक गई। मुझे उठा देना, हाँ... फिर हम मज़ा करेंगे। ***(गहरी नींद सो जाती है। सब उसे देखते हुए खड़े हैं–प्यार से)।***

कौआ : सो गई बच्ची।

पेड़ : थक गई थी न बहुत? तभी झट से सो गई।

लैटरबक्स लड़की को प्रेम से थपथपाने लगता है। कौआ उसके पैर दबाता है।

खंभा : थोड़ी देर बाद सुबह हो जाएगी।

पेड़ : तब यह कहाँ जाएगी?

लैटरबक्स : उसे अपने घर का पता–ठिकाना ही नहीं मालूम, अपनी गली का नाम तक नहीं बता सकती वह। बेचारी को अपने पापा का नाम भी नहीं मालूम। छोटी है अभी।

खंभा : तो इसका क्या होगा? कहाँ जाएगी यह?

लैटरबक्स : सचमुच रे, कहाँ जाएगी?

कौआ : मैं बताऊँ?

सभी : क्या?

कौआ : हम सब मिलकर कुछ करें तो इसको पापा से मिलवा सकते हैं।

सभी : ***(उठकर)*** कैसे?

कौआ : आसान है। सुबह जब हो जाए पेड़ राजा, तो आप अपनी घनी–घनी छाया इस पर किए रहें, वह आराम से देर तक सोती रहेगी और खंभे महाराज, आप ज़रा टेढ़े होकर खड़े रहिए।

खंभा : इससे क्या होगा?

कौआ : पुलिस को लगेगा, एक्सीडैंट हो गया। वो यहाँ आएगी और हमारी इस छोटी सहेली को देखेगी। वो लगाएगी इसके घर का पता। पुलिस सबके घर का पता मालूम करती है। खोए हुए बच्चों को उनके घर पहुँचाती है।

खंभा : रहूँगा, मैं आड़ा होकर खड़ा रहूँगा। पर मान लो, पुलिस नहीं आई तो?

कौआ : मैं बराबर यहाँ ज़ोर–ज़ोर से काँव–काँव करता रहूँगा। लोगों का ध्यान इधर खींचूँगा। उनकी चीज़ें अपनी चोंच से उठा–उठाकर लाता जाऊँगा।

लैटरबक्स : पर तब भी कोई नहीं आया तो?

कौआ : तो आपको एक काम करना होगा, लाल ताऊ।

लैटरबक्स : ज़रूर करूँगा, अपनी अच्छी गुड़िया के लिए तो कुछ भी करूँगा। एक बार घर पहुँचा दिया कि सब ठीक हो गया समझो। क्या करूँ? बता।

कौआ : आपको लिखना–पढ़ना आता है न ?

कान में बात करने लगता है। तभी पोस्टर पर बनी नाचनेवाली गिर पड़ती हैं।

SCERT TELANGANA

घुँघरुओं की आवाज़। पुनः जैसे-तैसे वह अपनी पहले जैसी भंगिमा बनाकर खड़ी होती है।

लैटरबक्स : *(बीच में ही कौए से)* उससे क्या होगा?

कौआ उसके कान में और कुछ कहता है। लैटरबक्स स्वीकृति में गरदन हिलाता है। अँधेरा। कुछ देर बाद उजाला। सुबह होती है। खंभा अपनी जगह पर टेढ़ा होकर खड़ा है। पेड़ सोई हुई लड़की पर झुककर अपनी छाया किए हुए है। कौए की काँव-काँव ज़ोर-ज़ोर से सुनाई दे रही है और सिनेमा के पोस्टर पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा है—पापा खो गए हैं। पोस्टर पर बनी नाचनेवाली की इससे मेल खानेवाली भंगिमा। लैटरबक्स धीरे से सरकता हुआ प्रेक्षकों की ओर आता है।

लैटरबक्स : शः! शः! लाल ताऊ बोल रहा हूँ। आप में से किसी को अगर हमारी इस प्यारी सी बच्ची के पापा मिल जाएँ तो उन्हें जितनी जल्दी हो सके यहाँ ले आइएगा।

परदा गिरता है।

❐ *विजय तेंदुलकर*

प्रश्न

1. नाटक में आपको सबसे बुद्धिमान पात्र कौन लगा और क्यों?
2. पेड़ और खंभे में दोस्ती कैसे हुई?
3. लैटरबक्स को सभी लाल ताऊ कहकर क्यों पुकारते थे?
4. लाल ताऊ किस प्रकार बाकी पात्रों से भिन्न है?
5. नाटक में बच्ची को बचानेवाले पात्रों में एक ही सजीव पात्र है। उसकी कौन-कौन सी बातें आपको मज़ेदार लगीं? लिखिए।
6. क्या वजह थी कि सभी पात्र मिलकर भी लड़की को उसके घर नहीं पहुँचा पा रहे थे?

SCERT TELANGANA

8. अपूर्व अनुभव

प्रश्न :

1. चित्र में क्या दिखायी दे रहा है?
2. आपको क्या करना अच्छा लगता है और क्यों?
3. अपने किसी एक अनुभव के बारे में बताइए?

छात्रों के लिए सूचनाएँ :

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. पाठ पढ़िए। नये शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

SCERT TELANGANA

सभागार में शिविर लगने के दो दिन बाद तोत्तो-चान के लिए एक बड़ा साहस करने का दिन आया। इस दिन उसे यासुकी-चान से मिलना था। इस भेद का पता न तो तोत्तो-चान के माता-पिता को था, न ही यासुकी-चान के। उसने यासुकी-चान को अपने पेड़ पर चढ़ने का न्योता दिया था।

तोमोए में हरेक बच्चा बाग के एक-एक पेड़ को अपने खुद के चढ़ने का पेड़ मानता था। तोत्तो-चान का पेड़ मैदान के बाहरी हिस्से में कुहोन्बुत्सु जानेवाली सड़क के पास था। बड़ा सा पेड़ था उसका, चढ़ने जाओ तो पैर फिसल-फिसल जाते। पर, ठीक से चढ़ने पर ज़मीन से कोई छह फुट की ऊँचाई पर एक द्विशाखा तक पहुँचा जा सकता था। बिलकुल किसी झूले सी आरामदेह जगह थी यह। तोत्तो-चान अकसर खाने की छुट्टी के समय या स्कूल के बाद ऊपर चढ़ी मिलती। वहाँ से वह सामने दूर तक ऊपर आकाश को या नीचे सड़क पर चलते लोगों को देखा करती थी।

बच्चे अपने-अपने पेड़ को निजी संपत्ति मानते थे। किसी दूसरे के पेड़ पर चढ़ना हो तो उससे पहले पूरी शिष्टता से, "माफ़ कीजिए, क्या मैं अंदर आ जाऊँ?" पूछना पड़ता था।

यासुकी-चान को पोलियो था, इसलिए वह न तो किसी पेड़ पर चढ़ पाता था और न किसी पेड़ को निजी संपत्ति मानता था। अतः तोत्तो-चान ने उसे अपने पेड़ पर आमंत्रित किया था। पर यह बात उन्होंने किसी से नहीं कही, क्योंकि अगर बड़े सुनते तो ज़रूर डाँटते।

घर से निकलते समय तोत्तो-चान ने माँ से कहा कि वह यासुकी-चान के घर डेनेनचोफु जा रही है। चूँकि वह झूठ बोल रही थी, इसलिए उसने माँ की आँखों में नहीं झाँका। वह अपनी नज़रें जूतों के फीतों पर ही गड़ाए रही। रॉकी उसके पीछे-पीछे स्टेशन तक आया। जाने से पहले उसे सच बताए बिना तोत्तो-चान से रहा नहीं गया।

"मैं यासुकी-चान को अपने पेड़ पर चढ़ने देनेवाली हूँ", उसने बताया।

SCERT TELANGANA

जब तोत्तो-चान स्कूल पहुँची तो रेल-पास उसके गले के आसपास हवा में उड़ रहा था। यासुकी-चान उसे मैदान में क्यारियों के पास मिला। गरमी की छुट्टियों के कारण सब सूना पड़ा था। यासुकी-चान उससे कुल जमा एक ही वर्ष बड़ा था, पर तोत्तो-चान को वह अपने से बहुत बड़ा लगता था।

जैसे ही यासुकी-चान ने तोत्तो-चान को देखा, वह पैर घसीटता हुआ उसकी ओर बढ़ा। उसके हाथ अपनी चाल को स्थिर करने के लिए दोनों ओर फैले हुए थे। तोत्तो-चान उत्तेजित थी। वे दोनों आज कुछ ऐसा करनेवाले थे जिसका भेद किसी को भी पता न था। वह उल्लास में ठिठियाकर हँसने लगी। यासुकी-चान भी हँसने लगा।

तोत्तो-चान यासुकी-चान को अपने पेड़ की ओर ले गई और उसके बाद वह तुरंत चौकीदार के छप्पर की ओर भागी, जैसा उसने रात को ही तय कर लिया था। वहाँ से वह एक सीढ़ी घसीटती हुई लाई। उसे तने के सहारे ऐसे लगाया, जिससे वह द्विशाखा तक पहुँच जाए। वह कुरसी से ऊपर चढ़ी और सीढ़ी के किनारे को पकड़ लिया। तब उसने पुकारा, "ठीक है, अब ऊपर चढ़ने की कोशिश करो।"

यासुकी-चान के हाथ-पैर इतने कमज़ोर थे कि वह पहली सीढ़ी पर भी बिना सहारे के चढ़ नहीं पाया। इस पर तोत्तो-चान नीचे उतर आई और यासुकी-चान को पीछे से धकियाने लगी। पर तोत्तो-चान थी छोटी और नाज़ुक-सी, इससे अधिक सहायता क्या करती! यासुकी-चान ने अपना पैर सीढ़ी पर से हटा लिया और हताशा से सिर झुकाकर खड़ा हो गया। तोत्तो-चान को पहली बार लगा कि काम उतना आसान नहीं है जितना वह सोचे बैठी थी। अब क्या करे वह?

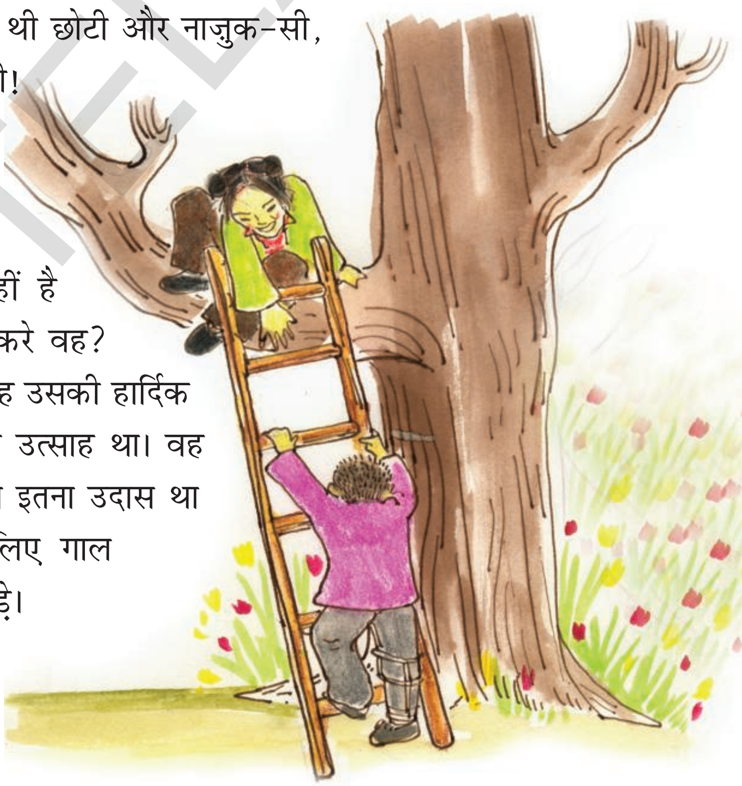

यासुकी-चान उसके पेड़ पर चढ़े, यह उसकी हार्दिक इच्छा थी। यासुकी-चान के मन में भी उत्साह था। वह उसके सामने गई। उसका लटका चेहरा इतना उदास था कि तोत्तो-चान को उसे हँसाने के लिए गाल फुलाकर तरह-तरह के चेहरे बनाने पड़े।

"ठहरो, एक बात सूझी है।"

वह फिर चौकीदार के छप्पर की ओर दौड़ी और हरेक चीज़ उलट-पुलटकर देखने लगी। आखिर उसे एक तिपाई-सीढ़ी मिली जिसे थामे रहना भी ज़रूरी नहीं था।

वह तिपाई-सीढ़ी को घसीटकर ले आई तो अपनी शक्ति पर हैरान होने लगी। तिपाई की ऊपरी सीढ़ी द्विशाखा तक पहुँच रही थी।

"देखो, अब डरना मत," उसने बड़ी बहन की-सी आवाज़ में कहा, "यह डगमगाएगी नहीं।"

SCERT TELANGANA

यासुकी-चान ने घबराकर तिपाई-सीढ़ी और पसीने से तरबतर तोत्तो-चान की ओर देखा। उसे भी काफ़ी पसीना आ रहा था। उसने पेड़ की ओर देखा और तब निश्चय के साथ पाँव उठाकर पहली सीढ़ी पर रखा।

उन दोनों को यह बिलकुल भी पता न चला कि कितना समय यासुकी-चान को ऊपर तक चढ़ने में लगा। सूरज का ताप उन पर पड़ रहा था, पर दोनों का ध्यान यासुकी-चान के ऊपर तक पहुँचने में रमा था। तोत्तो-चान नीचे से उसका एक-एक पैर सीढ़ी पर धरने में मदद कर रही थी। अपने सिर से वह उसके पिछले हिस्से को भी स्थिर करती रही। यासुकी-चान पूरी शक्ति के साथ जूझ रहा था और आखिर वह ऊपर पहुँच गया।

"हुर्रे!" पर, उसे अचानक सारी मेहनत बेकार लगने लगी। तोत्तो-चान तो सीढ़ी पर से छलाँग लगाकर द्विशाखा पर पहुँच गई, पर यासुकी-चान को सीढ़ी से पेड़ पर लाने की हर कोशिश बेकार रही। यासुकी-चान सीढ़ी थामे तोत्तो-चान की ओर ताकने लगा। तोत्तो-चान की रुलाई छूटने को हुई। उसने चाहा था कि यासुकी-चान को अपने पेड़ पर आमंत्रित कर तमाम नयी-नयी चीज़ें दिखाए।

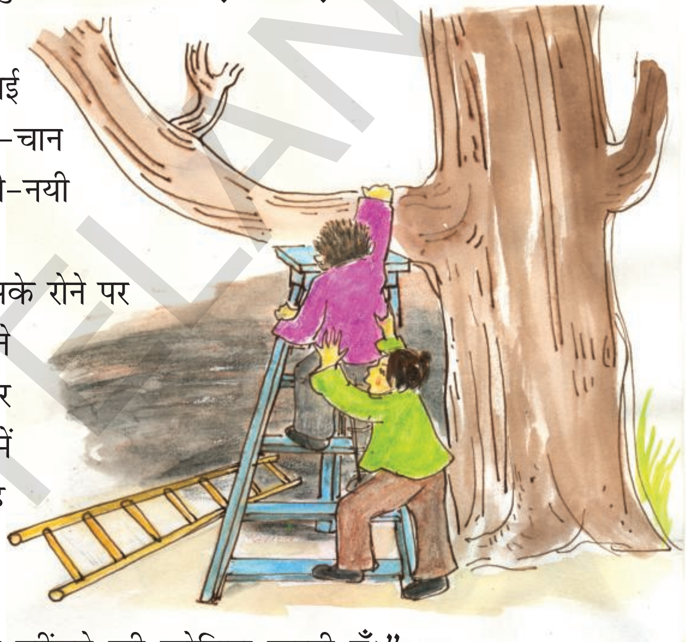

पर, वह रोई नहीं। उसे डर था कि उसके रोने पर यासुकी-चान भी रो पड़ेगा। उसने यासुकी-चान का पोलियो से पिचकी और अकड़ी उँगलियोंवाला हाथ अपने हाथ में थाम लिया। उसके खुद के हाथ से वह बड़ा था, उँगलियाँ भी लंबी थीं। देर तक तोत्तो-चान उसका हाथ थामे रही। तब बोली, "तुम लेट जाओ, मैं तुम्हें पेड़ पर खींचने की कोशिश करती हूँ।"

उस समय द्विशाखा पर खड़ी तोत्तो-चान द्वारा यासुकी-चान को पेड़ की ओर खींचते अगर कोई बड़ा देखता तो वह ज़रूर डर के मारे चीख उठता। उसे वे सच में जोखिम उठाते ही दिखाई देते। पर यासुकी-चान को तोत्तो-चान पर पूरा भरोसा था और वह खुद भी यासुकी-चान के लिए भारी खतरा उठा रही थी। अपने नन्हें-नन्हें हाथों से वह पूरी ताकत से यासुकी-चान को खींचने लगी। बादल का एक बड़ा टुकड़ा बीच-बीच में छाया करके उन्हें कड़कती धूप से बचा रहा था।

काफ़ी मेहनत के बाद दोनों आमने-सामने पेड़ की द्विशाखा पर थे। पसीने से तरबतर अपने बालों को चेहरे पर से हटाते हुए तोत्तो-चान ने सम्मान से झुककर कहा, "मेरे पेड़ पर तुम्हारा स्वागत है।"

यासुकी-चान डाल के सहारे खड़ा था। कुछ झिझकता हुआ वह मुसकराया। तब उसने पूछा, "क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?"

उस दिन यासुकी-चान ने दुनिया की एक नयी झलक देखी, जिसे उसने पहले कभी न देखा था।

SCERT TELANGANA

"तो ऐसा होता है पेड़ पर चढ़ना", यासुकी-चान ने खुश होते हुए कहा।

वे बड़ी देर तक पेड़ पर बैठे-बैठे इधर-उधर की गप्पें लड़ाते रहे।

"मेरी बहन अमरीका में है, उसने बताया है कि वहाँ एक चीज़ होती है—टेलीविजन।" यासुकी-चान उमंग से भरा बता रहा था, "वह कहती है कि जब वह जापान में आ जाएगा तो हम घर बैठे-बैठे ही सूमो-कुश्ती देख सकेंगे। वह कहती है कि टेलीविजन एक डिब्बे जैसा होता है।"

तोत्तो-चान उस समय यह तो न समझ पाई कि यासुकी-चान के लिए, जो कहीं भी दूर तक चल नहीं सकता था, घर बैठे चीज़ों को देख लेने के क्या अर्थ होंगे? वह तो यह ही सोचती रही कि सूमो पहलवान घर में रखे किसी डिब्बे में कैसे समा जाएँगे? उनका आकार तो बड़ा होता है, पर बात उसे बड़ी लुभावनी लगी। उन दिनों टेलीविजन के बारे में कोई नहीं जानता था। पहले-पहल यासुकी-चान ने ही तोत्तो-चान को उसके बारे में बताया था।

पेड़ मानो गीत गा रहे थे और दोनों बेहद खुश थे। यासुकी-चान के लिए पेड़ पर चढ़ने का यह पहला और अंतिम मौका था।

❒ *तेत्सुको कुरियानागी*
(अनुवाद–पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा)

पाठ के बारे में

'तोत्तो-चान' विश्व साहित्य की एक अमूल्य निधि है, जो मूलत: जापानी भाषा में लिखी गई है। इसका अनुवाद विश्व की कई भाषाओं में हो चुका है। यह एक ऐसी अद्‌भुत पाठशाला और उसमें पढ़नेवाले बच्चों की कहानी है जिनके लिए रेल के डिब्बे कक्षाएँ थीं, गहरी जड़ोंवाले पेड़, पाठशाला का गेट, शाखा, बच्चों के खेलने के कोने। इस अनोखे स्कूल के संस्थापक थे श्री कोबायाशी। लेखिका स्वयं इस स्कूल की छात्रा थीं। उन्हीं के बचपन के अनुभवों पर आधारित है पुस्तक 'तोत्तो-चान' का यह अंश 'अपूर्व अनुभव'।

SCERT TELANGANA

सुनिए–बोलिए

1. तोत्तो–चान के मन में यासुकी–चान को पेड़ पर चढ़ाने की दृढ़ इच्छाएँ बुद्धि और कठोर परिश्रम से अवश्य पूरी हो जाती हैं। आप किस तरह की सफलता के लिए तीव्र इच्छा और बुद्धि का उपयोग कर कठोर परिश्रम करना चाहते हैं?
2. यदि तुम्हारी कक्षा में कोई यासुकी–चान जैसा बालक आये, तो तुम उसके लिए क्या–क्या करोगे?
3. तोत्तो–चान यासुकी–चान को पेड़ पर क्यों चढ़ाना चाहती थी?

पढ़िए

1. पाठ में खोजकर देखिए–कब सूरज का ताप यासुकी–चान और तोत्तो–चान पर पड़ रहा था, वे दोनों पसीने से तर बतर हो रहे थे और कब बादल का एक टुकड़ा उन्हें छाया देकर कड़कती धूप से बचाने लगा था। आपके अनुसार इस प्रकार परिस्थिति के बदलने के कारण क्या हो सकते हैं?
2. यासुकी–चान के लिए पेड़ पर चढ़ने का यह ... अंतिम मौका था। इस अधूरे वाक्य को पूरा कीजिए और लिखकर बताइए कि लेखिका ने ऐसा क्यों लिखा होगा?

लिखिए

1. यासुकी–चान को अपने पेड़ पर चढ़ाने के लिए तोत्तो–चान ने अथक प्रयास क्यों किया?
2. दृढ़ निश्चय और अथक परिश्रम से सफलता पाने के बाद तोत्तो–चान और यासुकी–चान को अपूर्व अनुभव मिला, इन दोनों के अपूर्व अनुभव कुछ अलग–अलग थे। दोनों में क्या अंतर है?
3. अपनी माँ से झूठ बोलते समय तोत्तो–चान की नज़रें नीचे क्यों थीं?
4. हम अकसर बहादुरी के बड़े–बड़े कारनामों के बारे में सुनते रहते हैं, लेकिन 'अपूर्व अनुभव', कहानी एक मामूली बहादुरी और जोखिम की ओर हमारा ध्यान खींचती है। यदि आपको अपने आसपास के संसार में कोई रोमांचकारी अनुभव प्राप्त करना हो तो कैसे प्राप्त करेंगे?

SCERT TELANGANA

शब्द भंडार

1. वह सामने दूर तक ऊपर आकाश को या नीचे सड़क पर चलते लोगों को देखा करती थी। इस वाक्य में ऊपर, नीचे विलोमार्थी शब्द आए हैं। इनका प्रयोग करते हुए दो वाक्य लिखिए।

   1. ....

   2. ....

2. बच्चे "अपने–अपने" पेड़ को निजी संपत्ति मानते थे। इस वाक्य में आये अपने–अपने शब्द का प्रयोग करते हुए तीन वाक्य लिखिए।
3. उसे भी काफ़ी पसीना आ रहा था। "काफ़ी" शब्द का दूसरा अर्थ क्या है, लिखिए।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

■ यासुकीचान अगर तुम्हारे पास आये तो तुम उससे क्या बातें करोगे? संभाषण रूप में लिखिए।

प्रशंसा

■ सभी लोग सारे काम नहीं कर सकते। फिर भी प्रत्येक आदमी में एक विशेष गुण होता है। जैसे– कुछ लोग गाना गा सकते हैं, कुछ लोग अच्छा चित्र बना सकते हैं, कुछ लोग अच्छी कविताएँ लिख सकते हैं। अपने किसी मित्र की विशेष प्रतिभा की प्रशंसा करते हुए दस वाक्य लिखिए।

भाषा की बात

1. **द्विशाखा** शब्द **द्वि** और **शाखा** के योग से बना है। द्वि का अर्थ है–दो और शाखा का अर्थ है–डाला। द्विशाखा पेड़ के तने का वह भाग है जहाँ से दो मोटी–मोटी डालियाँ एक साथ निकलती हैं। द्वि की भाँति आप त्रि से बननेवाला शब्द त्रिकोण जानते होंगे। त्रि का अर्थ है तीन। इस प्रकार चार, पाँच, छह, सात, आठ, नौ और दस संख्यावाची संस्कृत शब्द उपयोग में अक्सर आते हैं। इन संख्यावाची शब्दों की जानकारी प्राप्त कीजिए और देखिए कि क्या इन शब्दों की ध्वनियाँ अंग्रेज़ी संख्या के नामों से कुछ–कुछ मिलती–जुलती हैं, जैसे–हिंदी–आठ, संस्कृत–अष्ट, अंग्रेज़ी–एट।

SCERT TELANGANA

2. पाठ में 'ठिठियाकर हँसने लगी', 'पीछे से धकियाने लगी' जैसे वाक्य आए हैं। ठिठियाकर हँसने के मतलब का आप अवश्य अनुमान लगा सकते हैं। ठी–ठी–ठी हँसना या ठठा माकर हँसना बोलचाल में प्रयोग होता है। इनमें हँसने की ध्वनि के एक खास अंदाज़ को हँसी का विशेषण बना दिया गया है। साथ ही ठिठियाना और धकियाना शब्द में 'आना' प्रत्यय का प्रयोग हुआ है। इस प्रत्यय से फिल्माना शब्द भी बन जाता है। 'आना' प्रत्यय से बननेवाले चार सार्थक शब्द लिखिए।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ का भाव अपने शब्दों में बता सकता/सकती हूँ। भावों से संबंधित बातचीत कर सकता/सकती हूँ।		
2. इस स्तर की गद्य सामग्री का भाव पढ़ कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. इस स्तर के गद्यांशों की व्याख्या करते हुए लिख सकता/सकती हूँ ।		
4. पाठ के शब्दों को अपनी बातचीत में प्रयोग कर सकता/सकती हूँ।		
5. पाठ के आधार पर संभाषण लिख सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

इकाई – III

9. रहीम के दोहे

प्रश्न :

1. ऊपर दिये गये चित्रों को पहचानिए?
2. कबीरदास का एक दोहा सुनाइए।
3. रहीम के बारे में आप क्या जानते हैं?
4. तुलसीदास किसके भक्त थे?
5. मीराबाई के बारे में आप क्या जानते हैं?

छात्रों के लिए सूचनाएँ :

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. पाठ पढ़िए। नये शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

SCERT TELANGANA

कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत।
बिपति कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत।।1।।

जाल परे जल जात बहि, तजि मीनन को मोह।
रहिमन मछरी नीर को, तऊ न छाँड़ति छोह।।2।।

तरुवर फल नहिं खात है, सरवर पियत न पान।
कहि रहीम परकाज हित, संपति-सचहिं सुजान।।3।।

थोथे बादर क्वार के, ज्यों रहीम घहरात।
धनी पुरुष निर्धन भए, करें पाछिली बात।।4।।

धरती की-सी रीत है, सीत घाम औ मेह।
जैसी परे सो सहि रहे, त्यों रहीम यह देह।।5।।

SCERT TELANGANA

सुनिए–बोलिए

1. संपत्ति के साथ मित्र लोगों की संख्या क्यों बढ़ती है? ऐसे मित्रों के बारे में **आपके** क्या विचार हैं?
2. रहीम के दोहे में वर्णित बादलों के बारे में अपने विचार बताइए।

पढ़िए

1. पाठ में दिए गए दोहों की कोई पंक्ति कथन है और कोई कथन को प्रमाणित करने वाला उदाहरण। इन दोनों प्रकार की पंक्तियों को पहचान कर अलग–अलग लिखिए।
2. निम्न भाव वाले दोहे लिखिए।
   क. संपत्ति में बहुत सारे मित्र मिल जाते हैं लेकिन विपत्ति में साथ देने वाले ही सच्चे मित्र होते हैं।
   ख. जिस प्रकार वृक्ष फल नहीं खाते, सरोवर पानी नहीं पीते, उसी तरह परमार्थ के लिए सज्जन संपत्ति का संचय करते हैं।

लिखिए

1. रहीम के अनुसार सच्चा मित्र कौन है?
2. रहीम ने शरीर की क्या विशेषता बतायी है?
3. रहीम ने क्वार के मास में गरजनेवाले बादलों की तुलना ऐसे निर्धन व्यक्तियों से क्यों की है? जो पहले कभी धनी थे और बीती बातों को बताकर दूसरों को प्रभावित करना चाहते हैं? दोहे के आधार पर आप सावन के बरसने और गरजने वाले बादलों के विषय में क्या कहना चाहेंगे?

शब्द भंडार

पर्याय शब्दों के संदर्भ में बेमेल शब्द चुनकर लिखिए।

1. नीर, पीर, जल, पानी ( )
2. सरवर, सरोवर, परिवार, तालाब ( )
3. मीत, रीत, मित्र, दोस्त ( )
4. तरु, अरु, पेड़, वृक्ष ( )

SCERT TELANGANA

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

- पाठ के दोहों के आधार पर सूक्तियाँ बनाइए।

प्रशंसा

- नीचे दिये गये दोहों में बताई गई सच्चाइयों को यदि हम अपने जीवन में उतार लें तो क्या लाभ होंगे? सोचिए और लिखिए।

  क. तरुवर फल .... संचहि सुजान।।

  ख. धरती की–सी .... यह देह।।

भाषा की बात

1.निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित हिंदी रूप लिखिए।

जैसे–परे–पड़े (रे, ड़े)

बिपति बादर मछरी सीत

2. नीचे दिये उदाहरण पढ़िए।

क. बनत बहुत बहु रीत

ख. जाल परे जल जात बहि

उपर्युक्त उदाहरणों की पहली पंक्ति में 'ब' का प्रयोग कई बार किया गया है और दूसरी में 'ज' का प्रयोग। इस प्रकार बार–बार एक ध्वनि के आने से भाषा की सुंदरता बढ़ जाती है। वाक्य रचना की इस विशेषता के अन्य उदाहरण खोजकर लिखिए।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. कविता गा सकता हूँ। सुना सकता हूँ। भाव बता सकता/सकती हूँ।		
2. इस स्तर की कविताओं का भाव पढ़कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. इस स्तर की कविताओं का भाव व्याख्या करते हुए लिख सकता/सकती हूँ।		
4. कविता के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ।		
5. इस पाठ के दोहों के आधार पर सूक्तियाँ लिख सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

इकाई – III

10. कंचा

प्रश्न :

1. चित्र में क्या दिखायी दे रहा है?
2. बच्चे क्या कर रहे हैं?
3. बच्चे कौनसे खेल खेलना पसंद करते हैं?

छात्रों के लिए सूचनाएँ :

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. पाठ पढ़िए। नये शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

SCERT TELANGANA

वह नीम के पेड़ों की घनी छाँव से होता हुआ सियार की कहानी का मज़ा लेता आ रहा था। हिलते-डुलते उसका बस्ता दोनों तरफ़ झूमता-खनकता था। स्लेट कभी छोटी शीशी से टकराती तो कभी पेंसिल से। यों वे सब उस बस्ते के अंदर टकरा रहे थे। मगर वह न कुछ सुन रहा था, न कुछ देख रहा था। उसका पूरा ध्यान कहानी पर केंद्रित था। कैसी मज़ेदार कहानी! कौए और सियार की।

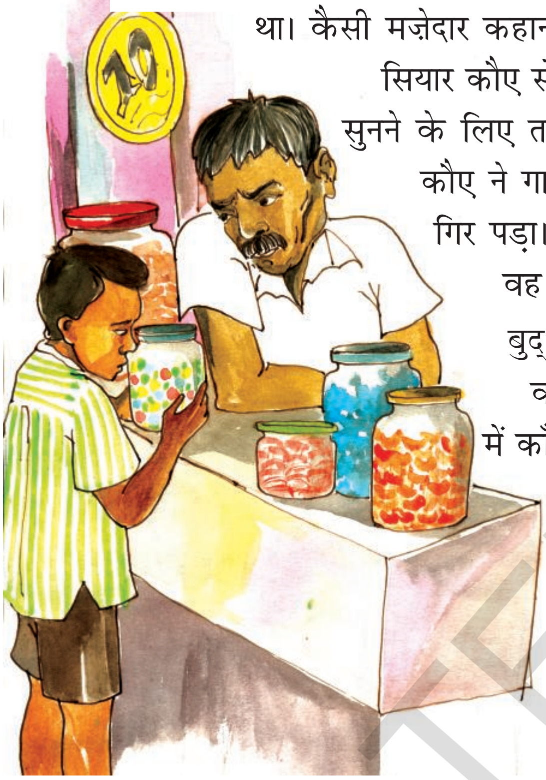

सियार कौए से बोला—"प्यारे कौए, एक गाना गाओ न, तुम्हारा गाना सुनने के लिए तरस रहा हूँ।"

कौए ने गाने के लिए मुँह खोला तो रोटी का टुकड़ा ज़मीन पर गिर पड़ा। सियार उसे उठाकर नौ दो ग्यारह हो गया।

वह ज़ोर से हँसा।

बुद्धू कौआ।

वह चलते-चलते दुकान के सामने पहुँचा। वहाँ अलमारी में काँच के बड़े-बड़े जार कतार में रखे थे। उनमें चॉकलेट, पिपरमेंट और बिस्कुट थे। उसकी नज़र उनमें से किसी पर नहीं पड़ी। क्यों देखे? उसके पिता जी उसे ये चीज़ें बराबर ला देते हैं।

फिर भी एक नए जार ने उसका ध्यान आकृष्ट किया। वह कंधे से लटकते बस्ते का फीता एक तरफ़ हटाकर, उस जार के सामने खड़ा टुकर-टुकर ताकता रहा। नया-नया लाकर रखा गया है। उससे पहले उसने वह चीज़ यहाँ नहीं देखी है।

पूरे जार में कंचे हैं। हरी लकीरवाले बढ़िया सफ़ेद गोल कंचे। बड़े आँवले जैसे। कितने खूबसूरत हैं! अब तक ये कहाँ थे? शायद दुकान के अंदर। अब दुकानदार ने दिखाने के लिए बाहर रखा होगा।

उसके देखते-देखते जार बड़ा होने लगा। वह आसमान-सा बड़ा हो गया तो वह भी उसके भीतर आ गया। वहाँ और कोई लड़का तो नहीं था। फिर भी उसे वही पसंद था। छोटी बहन के हमेशा के लिए चले जाने के बाद वह अकेले ही खेलता था।

वह कंचे चारों तरफ़ बिखेरता मज़े में खेलता रहा।

तभी एक आवाज़ आई।

"लड़के, तू उस जार को नीचे गिरा देगा।"

वह चौंक उठा।

जार अब छोटा बनता जा रहा था। छोटे जार में हरी लकीरवाले सफ़ेद गोल कंचे। छोटे आँवले जैसे।

SCERT TELANGANA

सिर्फ़ दो जने वहाँ हैं। वह और बूढ़ा दुकानदार। दुकानदार के चेहरे पर कुछ चिड़चिड़ाहट थी।

"मैंने कहा न! जो चाहते हो वह मैं निकालकर दूँ।"

वह उदास हो अलग खड़ा रहा।

"क्या कंचा चाहिए?"

दुकानदार ने जार का ढक्कन खोलना शुरू किया। उसने निषेध में सिर हिलाया।

"तो फिर?"

सवाल खूब रहा। क्या उसे कंचा चाहिए? क्या चाहिए? उसे खुद मालूम नहीं है। जो भी हो, उसने कंचे को छूकर देखा। जार को छूने पर कंचे का स्पर्श करने का अहसास हुआ। अगर वह चाहता तो कंचा ले सकता था।

लिया होता तो?

स्कूल की घंटी सुनकर वह बस्ता थामे हुए दौड़ पड़ा।

देर से पहुँचनेवाले लड़कों को पीछे बैठना पड़ता है। उस दिन वही सबके बाद पहुँचा था। इसलिए वह चुपचाप पीछे की बेंच पर बैठ गया।

सब अपनी-अपनी जगह पर हैं। रामन अगली बेंच पर है। वह रोज़ समय पर आता है। तीसरी बेंच के आखिर में मल्लिका के बाद अम्मु बैठी है।

जॉर्ज दिखाई नहीं पड़ता।

लड़कों के बीच जॉर्ज ही सबसे अच्छा कंचे का खिलाड़ी है। कितना भी बड़ा लड़का उसके साथ खेले, जॉर्ज से मात खाएगा। हारने पर यों ही विदा नहीं हो सकता। हारे हुए को अपनी बंद मुट्ठी ज़मीन पर रखनी होगी। तब जॉर्ज कंचा चलाकर बंद मुट्ठी के जोड़ों की हड्डी तोड़ेगा।

जॉर्ज क्यों नहीं आया?

अरे हाँ! जॉर्ज को बुखार है न! उसे रामन ने यह सूचना दी थी। उसने मल्लिका को सब बताया था। जॉर्ज का घर रामन के घर के रास्ते में पड़ता है।

अप्पू कक्षा की तरफ़ ध्यान नहीं दे रहा है।

मास्टर जी!

उसने हड़बड़ी में पुस्तक खोलकर सामने रख ली। रेलगाड़ी का सबक था।

रेलगाड़ी...रेलगाड़ी। पृष्ठ सैंतीस। घर पर उसने यह पाठ पढ़ लिया है।

मास्टर जी बीच-बीच में बेंत से मेज़ ठोकते हुए ऊँची आवाज़ में कह रहे थे-"बच्चो! तुममें से कई ने रेलगाड़ी देखी होगी। उसे भाप की गाड़ी भी कहते हैं क्योंकि उसका यंत्र भाप की शक्ति

SCERT TELANGANA

से ही चलता है। भाप का मतलब पानी से निकलती भाप से है। तुम लोगों के घरों के चूल्हे में भी...।"

अप्पू ने भी सोचा–रेलगाड़ी! उसने रेलगाड़ी देखी है। छुक-छुक...यही रेलगाड़ी है। वह भाप की भी गाड़ी का मतलब...।

मास्टर जी की आवाज़ अब कम ऊँची थी। वे रेलगाड़ी के हर एक हिस्से के बारे में समझा रहे थे।

"पानी रखने के लिए खास जगह है। इसे अंग्रेज़ी में बॉयलर कहते हैं। यह लोहे का बड़ा पीपा है।"

लोहे का एक बड़ा काँच का जार। उसमें हरी लकीरवाले सफ़ेद गोल कंचे। बड़े आँवले जैसे। जॉर्ज जब अच्छा होकर आ जाएगा, तब उससे कहेगा। उस समय जॉर्ज कितना खुश होगा! सिर्फ़ वे दोनों खेलेंगे। और किसी को साथ खेलने नहीं देंगे।

उसके चेहरे पर चॉक का टुकड़ा आ गिरा। अनुभव के कारण वह उठकर खड़ा हो गया। मास्टर जी गुस्से में हैं।

"अरे, तू उधर क्या कर रहा है?"

उसका दम घुट रहा था।

"बोल।"

वह खामोश खड़ा रहा।

"क्या नहीं बोलेगा?"

वे अप्पू के पास पहुँचे।

सारी कक्षा साँस रोके हुए उसी तरफ़ देख रही है।

उसकी घबराहट बढ़ गई।

"मैं अभी किसके बारे में बता रहा था?"

कर्मठ मास्टर जी उस लड़के का चेहरा देखकर समझ गए कि उसके मन में और कुछ है। शायद उसने पाठ पर ध्यान दिया भी हो। अगर दिया है तो उसका जवाब उसके मन से बाहर ले आना है। इसी में उनकी सफलता है।

"हाँ, हाँ, बता। डरना मत।"

मास्टर जी ने देखा, अप्पू की ज़बान पर जवाब था।

"हाँ, हाँ...।"

वह काँपते हुए बोला –"कंचा।"

"कंचा...!"

वे सकपका गए।

कक्षा में भूचाल आ गया।

"स्टैंड अप!"

SCERT TELANGANA

मास्टर साहब की आँखों में चिनगारियाँ सुलग रही थीं।

अप्पू रोता हुआ बेंच पर चढ़ा।

पड़ोसी कक्षा की टीचर ने दरवाज़े से झाँककर देखा।

फिर सम्मिलित हँसी।

रोकने की पूरी कोशिश करने पर भी वह अपना दुख रोक नहीं सका। सुबकता रहा।

रोते-रोते उसका दुख बढ़ता ही गया। सब उसकी तरफ़ देख-देखकर उसकी हँसी उड़ा रहे हैं। रामन, मल्लिका...सब।

बेंच पर खड़े-खड़े उसने सोचा, दिखा दूँगा सबको। जॉर्ज को आने दो। जॉर्ज जब आए...जॉर्ज के आने पर वह कंचे खरीदेगा। इनमें से किसी को वह खेलने नहीं बुलाएगा। कंचे को देख ये ललचाएँगे। इतना खूबसूरत कंचा है।

हरी लकीरवाले सफ़ेद गोल कंचे। बड़े आँवले जैसे।

तब...

शक हुआ। कंचा मिले कैसे? क्या माँगने पर दुकानदार देगा? जॉर्ज को साथ लेकर पूछें तो, नहीं दे तो?

"किसी को शक हो तो पूछ लो।"

मास्टर जी ने उस घंटे का सबक समाप्त किया।

"क्या किसी को कोई शक नहीं?"

अप्पू की शंका अभी दूर नहीं हुई थी। वह सोच रहा था—क्या जॉर्ज को साथ ले चलने पर दुकानदार कंचा नहीं देगा? अगर खरीदना ही पड़े तो कितने पैसे लगेंगे?

रामन ने मास्टर जी से सवाल किया और उसे सवाल का जवाब मिला।

अम्मिणि ने शंका का समाधान कराया।

कई छात्रों ने यह दुहराया।

"अप्पू, क्या सोच रहे हो?"

मास्टर जी ने पूछा।

"हूँ, पूछ लो न? शंका क्या है?"

शंका ज़रूर है।

क्या जॉर्ज को साथ ले चलने पर दुकानदार कंचे देगा? नहीं तो कितने पैसे लगेंगे? क्या पाँच पैसे में मिलेगा, दस पैसे में?

"क्या सोच रहे हो?"

"पैसे?"

"क्या?"

"कितने पैसे चाहिए!"

"किसके लिए?"

वह कुछ नहीं बोला।

SCERT TELANGANA

हरी लकीरवाले सफ़ेद गोल कंचे उसके सामने से फिसलते गए।
मास्टर जी ने पूछा।
"क्या रेलगाड़ी के लिए?"
उसने सिर हिलाया।
"बेवकूफ़! रेलगाड़ी को पैसे से खरीद नहीं सकते। अगर मिले तो उसे लेकर क्या करेगा?"
वह खेलेगा। जॉर्ज के साथ खेलेगा।
रेलगाड़ी नहीं, कंचा।
चपरासी एक नोटिस लाया।
मास्टर जी ने कहा, "जो फ़ीस लाए हैं, वे ऑफ़िस जाकर जमा कर दें।"
बहुत से छात्र गए।
राजन ने जाते-जाते अप्पू के पैर में चिकोटी काट ली।
उसने पैर खींच लिया।
उसे याद आया। उसे भी फ़ीस जमा करनी है। पिता जी ने उसे डेढ़ रुपया इसके लिए दिया है।
उसने अपनी जेब टटोलकर देखा–
एक रुपये का नोट और पचास पैसे का सिक्का।
वह बेंच से उतरा।
"किधर?" मास्टर जी ने पूछा।
उसके कंठ से खुशी के बुलबुले उठे।
"फ़ीस देनी है।"
"फ़ीस मत देना।" मास्टर ने कहा।
वह झिझकता रहा।
"ऑन दि बेंच।"
वह बेंच पर चढ़कर रोने लगा।
"क्या भविष्य में कक्षा में ध्यान से पढ़ेगा?"
"ध्या...ध्यान दूँगा।"

वह दफ़्तर गया।
दफ़्तर में बड़ी भीड़ थी।
बच्चो, एक-एक करके आओ। क्लर्क बाबू बता रहे हैं।
पहले मैं आया हूँ।
हूँ...मैं ही आया हूँ।
मेरे बाकी पैसे?
इस शोरगुल से अप्पू दूर खड़ा रहा।
रामन ने फ़ीस जमा की। मल्लिका ने जमा की। अब थोड़े से लड़के ही बचे हैं।

SCERT TELANGANA

वह सोच रहा था–जॉर्ज को साथ लेकर चलूँ तो देगा न? शायद दे। नहीं तो कितने पैसे लगेंगे? पाँच पैसे–दस पैसे।

हरी लकीरोंवाले गोल सफ़ेद कंचे।

घंटी बजने पर फ़ीस जमा किए हुए सभी बच्चे उधर से चले।

वह भी चला, मानो नींद से जागकर चल रहा हो।

"क्या सब फ़ीस जमा कर चुके?"

कक्षा छोड़ने के पहले मास्टर जी ने पूछा। वह नहीं उठा।

शाम को थोड़ी देर इधर-उधर टहलता रहा। लड़के गीली मिट्टी में छोटे गड्ढे खोदकर कंचे खेल रहे थे। वह उनके पास नहीं गया।

फाटक के सींखचे थामे, उसने सड़क की तरफ़ देखा। वहाँ उस मोड़ पर दुकान है। दुकान में अलमारी। बाहर खड़े-खड़े छू सकेगा। अलमारी में शीशे के जार हैं। उनमें एक जार में पूरा.

..

बस्ता कंधे पर लटकाए वह चलने लगा।

दुकान नज़दीक आ रही है।

उसकी चाल की तेज़ी बढ़ी।

वह अलमारी के सामने खड़ा हो गया।

दुकानदार हँसा।

उसे मालूम हुआ कि दुकानदार उसके इंतज़ार में है।

वह भी हँसा।

"कंचा चाहिए, है न?"

उसने सिर हिलाया।

दुकानदार जार का ढक्कन जब खोलने लगा तब अप्पू ने पूछा–"अच्छे कंचे हैं न?"

"बढ़िया, फ़र्स्ट क्लास कंचे। तुम्हें कितने कंचे चाहिए?"

कितने कंचे चाहिए, कितने चाहिए, कितने? उसने जेब में हाथ डाला। एक रुपया और पचास पैसे हैं।

उसने वह निकालकर दिखाया।

दुकानदार चौंका–"इतने सारे पैसों के?"

"सबके।"

पहले कभी किसी लड़के ने इतनी बड़ी रकम से कंचे नहीं खरीदे थे।

"इतने कंचों की ज़रूरत क्या है?"

"वह मैं नहीं बताऊँगा।"

दुकानदार समझ गया। वह भी किसी ज़माने में बच्चा रहा था। उसके साथी मिलकर खरीद रहे होंगे।

SCERT TELANGANA

यही उनके लिए खरीदने आया होगा।

वह कंचे खरीदने की बात जॉर्ज के सिवा और किसी को बताना नहीं चाहता था।

दुकानदार ने पूछा–"क्या तुम्हें कंचा खेलना आता है?"

वह नहीं जानता था।

"तो फिर?"

कैसे-कैसे सवाल पूछ रहा है। उसका धीरज जवाब दे रहा था।

उसने हाथ फैलाया।

"दे दो।"

दुकानदार हँस पड़ा।

वह भी हँस पड़ा।

कागज़ की पोटली छाती से चिपटाए वह नीम के पेड़ों की छाँव में चलने लगा।

कंचे अब उसकी हथेली में हैं। जब चाहे बाहर निकाल ले।

उसने पोटली हिलाकर देखा।

वह हँस रहा था।

उसका जी चाहता था– काश! पूरा जार उसे मिल जाता। जार मिलता तो उसके छूने से ही कंचे को छूने का अहसास होता।

एकाएक उसे शक हुआ। क्या सब कंचों में लकीर होगी?

उसने पोटली खोलकर देखने का निश्चय किया। बस्ता नीचे रखकर वह धीरे से पोटली खोलने लगा।

पोटली खुली और सारे कंचे बिखर गए। वे सड़क के बीचोंबीच पहुँच रहे हैं।

क्षणभर सकपकाने के बाद वह उन्हें चुनने लगा। हथेली भर गई। वह चुने हुए कंचे कहाँ रखे?

स्लेट और किताब बस्ते से बाहर रखने के बाद कंचे बस्ते में डालने लगा।

एक, दो, तीन, चार...

एक कार सड़क पर ब्रेक लगा रही थी।

वह उस वक्त भी कंचे चुनने में मगन था।

ड्राइवर को इतना गुस्सा आया कि उस लड़के को कच्चा खा जाने की इच्छा हुई। उसने बाहर झाँककर देखा, वह लड़का क्या कर रहा है?

SCERT TELANGANA

हॉर्न की आवाज़ सुन कंचे चुनते अप्पू ने बीच में सिर उठाकर देखा। सामने एक मोटर है और उसके भीतर ड्राइवर। उसने सोचा—क्या कंचे उसे भी अच्छे लग रहे हैं? शायद वह भी मज़ा ले रहा है।

एक कंचा उठाकर उसे दिखाया और हँसा—"बहुत अच्छा है न!"

ड्राइवर का गुस्सा हवा हो गया। वह हँस पड़ा।

बस्ता कंधे पर लटकाए, स्लेट, किताब, शीशी, पेंसिल—सब छाती से चिपकाए वह घर आया।

उसकी माँ शाम की चाय तैयार कर उसकी राह देख रही थी।

बरामदे की बेंच पर स्लेट व किताबें फेंककर वह दौड़कर माँ के गले लग गया। उसके लौटने में देर होते देख माँ घबराई हुई थी।

उसने बस्ता ज़ोर से हिलाकर दिखाया।

"अरे! यह क्या है?" माँ ने पूछा।

"मैं नहीं बताऊँगा।" वह बोला।

"मुझसे नहीं कहेगा?"

"कहूँगा। माँ, आँखें बंद कर लो।"

माँ ने आँखें बंद कर लीं।

उसने गिना, वन, टू, थ्री...

माँ ने आँखें खोलकर देखा। बस्ते में कंचे-ही-कंचे थे। वह कुछ और हैरान हुई।

"इतने सारे कंचे कहाँ से लाया?"

"खरीदे हैं।"

"पैसे?"

पिता जी की तसवीर की ओर इशारा करते हुए उसने कहा—"दोपहर को दिए थे न?"

माँ ने दाँतों तले उँगली दबाई। फ़ीस के पैसे? इतने सारे कंचे काहे को लिए? आखिर खेलोगे किसके साथ? उस घर में सिर्फ़ वही है। उसके बाद एक मुन्नी हुई थी। उसकी छोटी बहन। मगर. ..

माँ की पलकें भीग गईं।

उसकी माँ रो रही है।

अप्पू नहीं जान सका कि माँ क्यों रो रही है। क्या कंचा खरीदने से? ऐसा तो नहीं हो सकता। तो फिर?

उसकी आँखों के सामने बूढ़ा दुकानदार और कार का ड्राइवर खड़े-खड़े हँस रहे थे। वे सब पसंद करते हैं। सिर्फ़ माँ को कंचे क्यों पसंद नहीं आए?

शायद कंचे अच्छे नहीं हैं।

बस्ते से आँवले जैसे कंचे निकालते हुए उसने कहा—"बुरे कंचे हैं, हैं न?"

"नहीं, अच्छे हैं।"

"देखने में बहुत अच्छे लगते हैं न?"

"बहुत अच्छे लगते हैं।"

SCERT TELANGANA

सुनिए–बोलिए

1. आपके गली–मोहल्लों में बच्चे कौन–कौन से खेल खेलते हैं? उनके बारे में बताइए।
2. दुकानदार और ड्राइवर के सामने अप्पू की क्या स्थिति है? वे दोनों उसको देखकर पहले परेशान होते हैं, फिर हँसते हैं। कारण बताइए।
3. गुल्ली–डंडा और क्रिकेट में कुछ समानता है और कुछ अंतर। बताइए, कौन सी समानताएँ हैं और क्या–क्या अंतर हैं?

पढ़िए

1. पाठ पढ़िए वाक्यों को क्रम में रखिए।

1.शायद कंचे अच्छे नहीं हैं।	( )
2.उसकी माँ भी हँस पड़ी।	( )
3.इतने सारे कंचे कहाँ से लाया।	( )
4.एक बार सड़क पर ब्रेक लगा रही थी।	( )
5.दुकानदार चौंका–'इतने सारे पैसों के?'	( )
6.बस्ता कंधे पर लटकाए वह चलने लगा।	( )
7.दफ़्तर में बड़ी भीड़ थी।	( )
8.चपरासी एक नोटिस लाया।	( )
9.पानी रखने के लिए खास जगह है।	( )
10.वह चलते–चलते दुकान के सामने पहुँचा।	( )

2. पाठ से युग्म शब्द चुनकर लिखिए।

   जैसे–अपनी–अपनी

लिखिए

1. कंचे जब जार से निकलकर अप्पू के मन की कल्पना में समा जाते हैं, तब क्या होता है?
2. 'मास्टर जी की आवाज़ जब कम ऊँची थी, वे रेलगाड़ी के बारे में बता रहे थे।' मास्टर जी की आवाज़ धीमी

SCERT TELANGANA

क्यों हो गई होगी? लिखिए।

3. आप इस कहानी को क्या शीर्षक देना चाहेंगे? क्यों? लिखिए।

शब्द भंडार

1. निम्न मुहावरों का अर्थ जानो और वाक्य में प्रयोग करो।

जैसे–नौ दो ग्यारह होना=भाग जाना, शेर को देखकर रमेश नौ दो ग्यारह हो गया।

1. मात खाना–
2. आँखों में चिनगारियाँ सुलगना–
3. हँसी उड़ाना–
4. खुशी के बुलबुले–
5. सकपकाना–
6. कच्चा खा जाना–
7. दाँतों तले उँगली दबाना–
8. पलकें भीगना

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

■ अप्पू और जॉर्ज के बीच हुई किसी बातचीत को कल्पना कर संवाद रूप में लिखिए।

प्रशंसा

■ खेल से अनेक लाभ हैं। इनसे हमारा शारीरिक एवं मानसिक विकास होता है। साथ ही साथ मनोरंजन होता है। खेल खेलने के लिए कई बच्चे एक जगह एकत्र होते हैं। इससे दोस्ती भी बढ़ती है। इस प्रकार बताओ कि खेल हमारे लिए क्यों ज़रूरी हैं?

SCERT TELANGANA

भाषा की बात

1. नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित मुहावरे किन भावों को प्रकट करते हैं? इन भावों से जुड़े दो–दो मुहावरे बताइए और उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए।

   माँ ने दाँतों तले उँगली दबाई।

   सारी कक्षा साँस रोके हुए उसी तरफ देख रही है।

2. विशेषण कभी–कभी एक से अधिक शब्दों के भी होते हैं। नीचे लिखे वाक्यों में रेखांकित हिस्से क्रमश: रकम और कंचे के बारे में बताते हैं, इसलिए वे विशेषण हैं।

   पहले कभी किसी ने इतनी बड़ी रकम से कंचे नहीं खरीदे।

   बढ़िया सफेद गोल कंचे

   इसी प्रकार के कुछ विशेषण नीचे दिए गए हैं इनका प्रयोग कर वाक्य बनाएँ।

   ठंडी अँधेरी रात   खट्टी–मीठी गोलियाँ

   ताज़ा स्वादिष्ट भोजन   स्वच्छ रंगीन कपड़े

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ का भाव अपने शब्दों में बता सकता/सकती हूँ। भावों से संबंधित बातचीत कर सकता/सकती हूँ।		
2. इस स्तर की गद्य सामग्री का भाव पढ़ कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. इस स्तर के गद्यांशों की व्याख्या करते हुए लिख सकता/सकती हूँ।		
4. पाठ के शब्दों को अपनी बातचीत में प्रयोग कर सकता हूँ।		
5. किसी भी खेल का वर्णन कर सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

इकाई – III

11. एक तिनका

प्रश्न :

1. चित्र में क्या दिखायी दे रहा है?
2. लड़का क्या कर रहा है और क्यों?
3. आँखों में तिनका गिरने पर क्या होता है?

छात्रों के लिए सूचनाएँ :

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. पाठ पढ़िए। नये शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

SCERT TELANGANA

मैं

घमंडों में भरा ऐंठा हुआ,
एक दिन जब था मुंडेरे पर खड़ा।
आ अचानक दूर से उड़ता हुआ,
एक तिनका आँख में मेरी पड़ा।

मैं झिझक उठा, हुआ बेचैन-सा,
लाल होकर आँख भी दुखने लगी।
मूँठ देने लोग कपड़े की लगे,
ऐंठ बेचारी दबे पाँवों भगी।

जब किसी ढब से निकल तिनका गया,
तब 'समझ' ने यों मुझे ताने दिए।
ऐंठता तू किसलिए इतना रहा,
एक तिनका है बहुत तेरे लिए।

❐ *अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'*

SCERT TELANGANA

सुनिए–बोलिए

1. हमें घमंड क्यों नहीं करना चाहिए? बताइए।
2. 'एक तिनका' कविता में किस घटना की चर्चा की गई है, जिससे घमंड नहीं करने का संदेश मिलता है?
3. 'ऐंठता तू किसलिए इतना रहा,
   एक तिनका है बहुत तेरे लिए।
   इन पंक्तियों के भाव के बारे में चर्चा कीजिए।

पढ़िए

1. नीचे दी गई कविता की पंक्तियों को सामान्य वाक्य में बदलिए।
   जैसे–एक तिनका आँख में मेरी पड़ा–मेरी आँख में एक तिनका पड़ा।
   मूँठ देने लोग कपड़े की लगे–लोग कपड़े की मूँठ देने लगे।
   क. एक दिन जब था मुंडेरे पर खड़ा...
   ख. लाल होकर आँख थी दुखने लगी...
   ग. ऐंठ बेचारी दबे पाँवों भागी..
   घ. जब किसी ढब से निकल तिनका गया...
2. आँख में तिनका पड़ने के बाद घमंडी की क्या दशा हुई?
3. घमंडी की आँख से तिनका निकालने के लिए उसके आसपास के लोगों ने क्या किया?

लिखिए

1. इस कविता का संदेश क्या है? लिखिए।

SCERT TELANGANA

शब्द भंडार

1. नीचे दी गई कबीर की पंक्तियों में **तिनका** शब्द का प्रयोग एक से अधिक बार किया गया है। इनके अलग–अलग अर्थों की जानकारी प्राप्त करें और उनका वाक्य में प्रयोग करें।

उठा बबूला प्रेम का, तिनका उड़ा अकास।
तिनका–तिनका हो गया, तिनका तिनके पास।।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

1. इस कविता को कवि ने 'मैं' से आरंभ किया है–'मैं घमंडों में भरा ऐंठा हुआ'।
कवि का यह 'मैं' कविता पढ़नेवाले व्यक्ति से भी जुड़ सकता है और तब अनुभव यह होगा कि कविता पढ़नेवाला व्यक्ति अपनी बात बता रहा है। यदि कविता में 'मैं' की जगह 'वह' या कोई नाम लिख दिया जाए, तब कविता के वाक्यों में बदलाव आ जाएगा। कविता में 'मैं' के स्थान पर 'वह' या कोई नाम लिखकर वाक्यों के बदलाव को देखिए और कक्षा में पढ़कर सुनाइए।

2. नीचे दी गई पंक्तियों को ध्यान से पढ़िए–

ऐंठ बेचारी दबे पाँवों भगी,
तब 'समझ' ने यों मुझे ताने दिए।

- इन पंक्तियों में 'ऐंठ' और 'समझ' शब्दों का प्रयोग सजीव प्राणी की भाँति हुआ है। कल्पना कीजिए, यदि 'ऐंठ' और 'समझ' किसी नाटक में दो पात्र होते तो उनका अभिनय कैसा होता?

प्रशंसा

- आदमी को घमंड नहीं करना चाहिए। घमंड से क्या नुकसान होता है। घमंड को दूर करने के लिए हमें क्या करना चाहिए।

भाषा की बात

1. 'किसी ढब से निकलना' का अर्थ है किसी ढंग से निकलना। 'ढब से' जैसे कई वाक्यांशों से आप परिचित होंगे, जैसे–धम से वाक्यांश है लेकिन ध्वनियों में समानता होने के बाद भी ढब से और धम से जैसे वाक्यांशों

SCERT TELANGANA

के प्रयोग में अंतर है। 'धम से', 'छप से' इत्यादि का प्रयोग ध्वनि द्वारा क्रिया को सूचित करने के लिए किया जाता है। नीचे कुछ ध्वनि द्वारा क्रिया को सूचित करनेवाले वाक्यांश और कुछ अधूरे वाक्य दिए गए हैं। उचित वाक्यांश चुनकर वाक्यों के खाली स्थान भरिए–

छप से टप से थर्र से सन् से

क. मेंढक पानी में .... कूद गया।

ख. नल बंद होने के बाद पानी की एक बूँद .... चू गई।

ग. शोर होते ही चिड़िया .... उड़ी।

घ. ठंडी हवा .... गुज़री, मैं ठंड में .... काँप गया।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. कविता गा सकता हूँ। सुना सकता/सकती हूँ। भाव बता सकता/सकती हूँ।		
2. इस स्तर की कविताओं का भाव पढ़कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. इस स्तर की कविताओं का भाव व्याख्या करते हुए लिख सकता/सकती हूँ।		
4. कविता के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ।		
5. कविता के आधार पर अभिनय कर सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

इकाई - III

नीलकंठ (उपवाचक पाठ)

उस दिन एक अतिथि को स्टेशन पहुँचाकर मैं लौट रही थी कि चिड़ियों और खरगोशों की दुकान का ध्यान आ गया और मैंने ड्राइवर को उसी ओर चलने का आदेश दिया।

बड़े मियाँ चिड़ियावाले की दुकान के निकट पहुँचते ही उन्होंने सड़क पर आकर ड्राइवर को रुकने का संकेत दिया। मेरे कोई प्रश्न करने के पहले ही उन्होंने कहना आरंभ किया, "सलाम गुरु जी! पिछली बार आने पर आपने मोर के बच्चों के लिए पूछा था। शंकरगढ़ से एक चिड़ीमार दो मोर के बच्चे पकड़ लाया है, एक मोर है, एक मोरनी। आप पाल लें। मोर के पंजों से दवा बनती है, सो ऐसे ही लोग खरीदने आए थे। आखिर मेरे सीने में भी तो इनसान का दिल है। मारने के लिए ऐसी मासूम चिड़ियों को कैसे दूँ! टालने के लिए मैंने कह दिया–'गुरु जी ने मँगवाए हैं।' वैसे यह कमबख्त रोज़गार ही खराब है। बस, पकड़ो-पकड़ो, मारो-मारो।"

बड़े मियाँ के भाषण की तूफ़ानमेल के लिए कोई निश्चित स्टेशन नहीं है। सुननेवाला थककर जहाँ रोक दे वहीं स्टेशन मान लिया जाता है। इस तथ्य से परिचित होने के कारण ही मैंने बीच में उन्हें रोककर पूछा, "मोर के बच्चे हैं कहाँ?" बड़े मियाँ के हाथ के संकेत का अनुसरण करते हुए मेरी दृष्टि एक तार के छोटे-से पिंजड़े तक पहुँची जिसमें तीतरों के समान दो बच्चे बैठे थे। पिंजड़ा इतना संकीर्ण था कि वे पक्षी-शावक जाली के गोल फ्रेम में किसी जड़े चित्र जैसे लग रहे थे।

मेरे निरीक्षण के साथ-साथ बड़े मियाँ की भाषण-मेल चली जा रही थी, "ईमान कसम, गुरु जी–चिड़ीमार ने मुझसे इस मोर के जोड़े के नकद तीस रुपये लिए हैं। बारहा कहा, भई ज़रा सोच तो, अभी इनमें मोर की कोई खासियत भी है कि तू इतनी बड़ी कीमत ही माँगने चला! पर वह मूँजी क्यों सुनने लगा। आपका खयाल करके अछता-पछताकर देना ही पड़ा। अब आप जो मुनासिब समझें।" अस्तु, तीस चिड़ीमार के नाम के और पाँच बड़े मियाँ के ईमान के देकर जब मैंने वह छोटा पिंजड़ा कार में रखा तब मानो वह जाली के चौखटे का चित्र जीवित हो गया। दोनों पक्षी-शावकों के छटपटाने से लगता था मानो पिंजड़ा ही सजीव और उड़ने योग्य हो गया है।

घर पहुँचने पर सब कहने लगे, "तीतर हैं, मोर कहकर ठग लिया है।"

कदाचित अनेक बार ठगे जाने के कारण ही ठगे जाने की बात मेरे चिढ़ जाने की दुर्बलता बन गई है। अप्रसन्न होकर मैंने कहा, "मोर के क्या सुरखाब के पर लगे हैं। है तो पक्षी ही।" चिढ़ा दिया जाने के कारण ही संभवतः उन दोनों पक्षियों के प्रति मेरे व्यवहार और यत्न में कुछ विशेषता आ गई।

पहले अपने पढ़ने-लिखने के कमरे में उनका पिंजड़ा रखकर उसका दरवाज़ा खोला, फिर दो कटोरों में सत्तू की छोटी-छोटी गोलियाँ और पानी रखा। वे दोनों चूहेदानी जैसे पिंजड़े से निकलकर कमरे में मानो खो गए, कभी मेज़ के नीचे घुस गए, कभी अलमारी के पीछे। अंत में इस लुकाछिपी से थककर उन्होंने मेरे रद्दी कागज़ों की टोकरी को अपने नए बसेरे का गौरव प्रदान किया। दो-चार

SCERT TELANGANA

दिन वे इसी प्रकार दिन में इधर-उधर गुप्तवास करते और रात में रद्दी की टोकरी में प्रकट होते रहे। फिर आश्वस्त हो जाने पर कभी मेरी मेज़ पर, कभी कुरसी पर और कभी मेरे सिर पर अचानक आविर्भूत होने लगे। खिड़कियों में तो जाली लगी थी, पर दरवाज़ा मुझे निरंतर बंद रखना पड़ता था। खुला रहने पर चित्रा (मेरी बिल्ली) इन नवागंतुकों का पता लगा सकती थी और तब उसके शोध का क्या परिणाम होता, यह अनुमान करना कठिन नहीं है। वैसे वह चूहों पर भी आक्रमण नहीं करती, परंतु यहाँ तो दो सर्वथा अपरिचित पक्षियों की अनधिकार चेष्टा का प्रश्न था। उसके लिए दरवाज़ा बंद रहे और ये दोनों (उसकी दृष्टि में) ऐरे-गैरे मेरी मेज़ को अपना सिंहासन बना लें, यह स्थिति चित्रा जैसी अभिमानिनी मार्जारी के लिए असह्य ही कही जाएगी।

जब मेरे कमरे का कायाकल्प चिड़ियाखाने के रूप में होने लगा, तब मैंने बड़ी कठिनाई से दोनों चिड़ियों को पकड़कर जाली के बड़े घर में पहुँचाया जो मेरे जीव-जंतुओं का सामान्य निवास है।

दोनों नवागंतुकों ने पहले से रहनेवालों में वैसा ही कुतूहल जगाया जैसा नववधू के आगमन पर परिवार में स्वाभाविक है। लक्का कबूतर नाचना छोड़कर दौड़ पड़े और उनके चारों ओर घूम-घूमकर गुटरगूँ-गुटरगूँ की रागिनी अलापने लगे। बड़े खरगोश सभ्य सभासदों के समान क्रम से बैठकर गंभीर भाव से उनका निरीक्षण करने लगे। ऊन की गेंद जैसे छोटे खरगोश उनके चारों ओर उछलकूद मचाने लगे। तोते मानो भलीभाँति देखने के लिए एक आँख बंद करके उनका परीक्षण करने लगे। उस दिन मेरे चिड़ियाघर में मानो भूचाल आ गया।

धीरे-धीरे दोनों मोर के बच्चे बढ़ने लगे। उनका कायाकल्प वैसा ही क्रमशः और रंगमय था जैसा इल्ली से तितली का बनना।

मोर के सिर की कलगी और सघन, ऊँची तथा चमकीली हो गई। चोंच अधिक बंकिम और पैनी हो गई, गोल आँखों में इंद्रनी की नीलाभ द्युति झलकने लगी। लंबी नील-हरित ग्रीवा की हर भंगिमा में धूपछाँही तरंगें उठने-गिरने लगीं। दक्षिण-वाम दोनों पंखों में सलेटी और सफ़ेद आलेखन स्पष्ट होने लगे। पूँछ लंबी हुई और उसके पंखों पर चंद्रिकाओं के इंद्रधनुषी रंग उद्दीप्त हो उठे। रंग-रहित पैरों को गरवीली गति ने एक नयी गरिमा से रंजित कर दिया। उसका गरदन ऊँची कर देखना, विशेष भंगिमा के साथ उसे नीची कर दाना चुगना, पानी पीना, टेढ़ी कर शब्द सुनना आदि क्रियाओं में जो सुकुमारता और सौंदर्य था, उसका अनुभव देखकर ही किया जा सकता है। गति का चित्र नहीं आँका जा सकता।

मोरनी का विकास मोर के समान चमत्कारिक तो नहीं हुआ—परंतु अपनी लंबी धूपछाँही गरदन, हवा में चंचल कलगी, पंखों की श्याम-श्वेत पत्रलेखा, मंथर गति आदि से वह भी मोर की उपयुक्त सहचारिणी होने का प्रमाण देने लगी।

नीलाभ ग्रीवा के कारण मोर का नाम रखा गया नीलकंठ और उसकी छाया के समान रहने के कारण मोरनी का नामकरण हुआ राधा।

मुझे स्वयं ज्ञात नहीं कि कब नीलकंठ ने अपने आपको चिड़ियाघर के निवासी जीव-जंतुओं का

SCERT TELANGANA

सेनापति और संरक्षक नियुक्त कर लिया। सवेरे ही वह सब खरगोश, कबूतर आदि की सेना एकत्र कर उस ओर ले जाता जहाँ दाना दिया जाता है और घूम-घूमकर मानो सबकी रखवाली करता रहता। किसी ने कुछ गड़बड़ की और वह अपने तीखे चंचु-प्रहार से उसे दंड देने दौड़ा।

खरगोश के छोटे बच्चों को वह चोंच से उनके कान पकड़कर ऊपर उठा लेता था और जब तक वे आर्तक्रंदन न करने लगते उन्हें अधर में लटकाए रखता। कभी-कभी उसकी पैनी चोंच से खरगोश के बच्चों का कर्णवेध संस्कार हो जाता था, पर वे फिर कभी उसे क्रोधित होने का अवसर न देते थे। दंडविधान के समान ही उन जीव-जंतुओं के प्रति उसका प्रेम भी असाधारण था। प्राय: वह मिट्टी में पंख फैलाकर बैठ जाता और वे सब उसकी लंबी पूँछ और सघन पंखों में छुआ-छुऔअल-सा खेलते रहते थे।

ऐसी ही किसी स्थिति में एक साँप जाली के भीतर पहुँच गया। सब जीव-जंतु भागकर इधर-उधर छिप गए, केवल एक शिशु खरगोश साँप की पकड़ में आ गया। निगलने के प्रयास में साँप ने उसका आधा पिछला शरीर तो मुँह में दबा रखा था, शेष आधा जो बाहर था, उससे चीं-चीं का स्वर भी इतना तीव्र नहीं निकल सकता था कि किसी को स्पष्ट सुनाई दे सके। नीलकंठ दूर ऊपर झूले में सो रहा था। उसी के चौकन्ने कानों ने उस मंद स्वर की व्यथा पहचानी और वह पूँछ-पंख समेटकर सर से एक झपट्टे में नीचे आ गया। संभवत: अपनी सहज चेतना से ही उसने

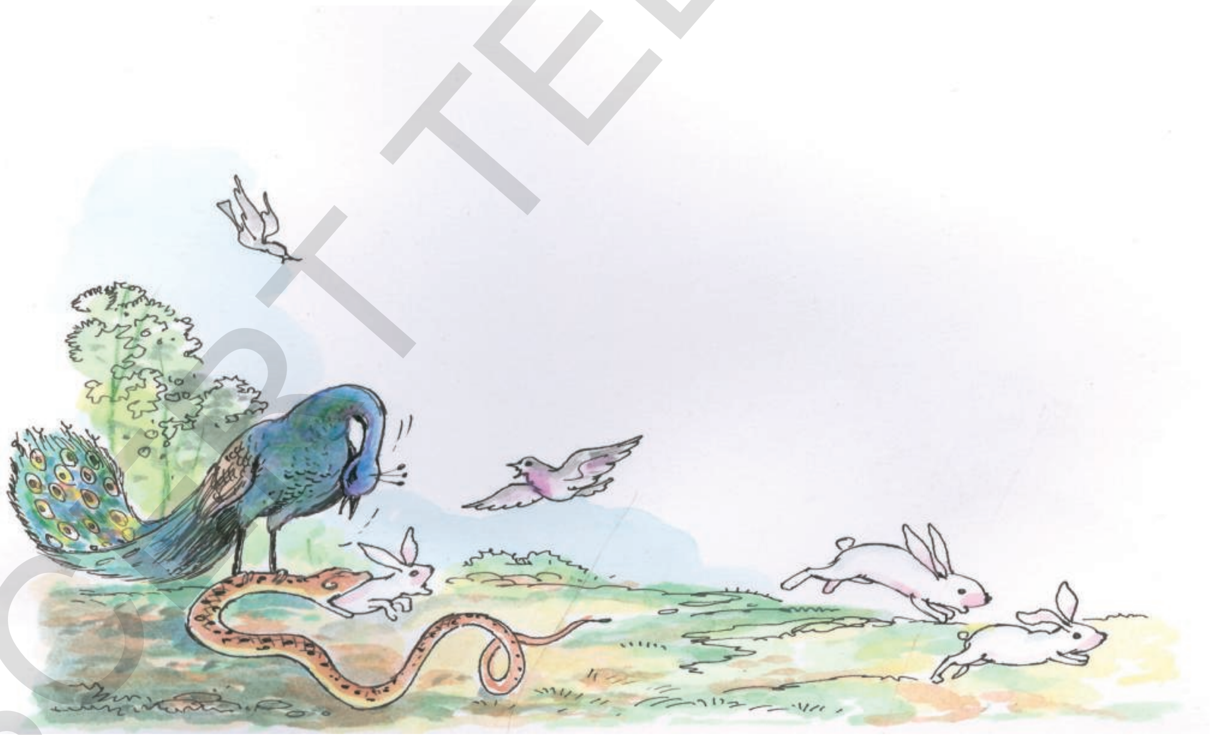

समझ लिया होगा कि साँप के फन पर चोंच मारने से खरगोश भी घायल हो सकता है।

उसने साँप को फन के पास पंजों से दबाया और फिर चोंच से इतने प्रहार किए कि वह अधमरा हो गया। पकड़ ढीली पड़ते ही खरगोश का बच्चा मुख से निकल तो आया, परंतु निश्चेष्ट-सा वहीं

SCERT TELANGANA

पड़ा रहा।

राधा ने सहायता देने की आवश्यकता नहीं समझी, परंतु अपनी मंद केका से किसी असामान्य घटना की सूचना सब ओर प्रसारित कर दी। माली पहुँचा, फिर हम सब पहुँचे। नीलकंठ जब साँप के दो खंड कर चुका, तब उस शिशु खरगोश के पास गया और रातभर उसे पंखों के नीचे रखे उष्णता देता रहा। कार्तिकेय ने अपने युद्ध-वाहन के लिए मयूर को क्यों चुना होगा, यह उस पक्षी का रूप और स्वभाव देखकर समझ में आ जाता है।

मयूर कलाप्रिय वीर पक्षी है, हिंसक मात्र नहीं। इसी से उसे बाज़, चील आदि की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता, जिनका जीवन ही क्रूर कर्म है।

नीलकंठ में उसकी जातिगत विशेषताएँ तो थीं ही, उनका मानवीकरण भी हो गया था। मेघों की साँवली छाया में अपने इंद्रधनुष के गुच्छे जैसे पंखों को मंडलाकार बनाकर जब वह नाचता था, तब उस नृत्य में एक सहजात लय-ताल रहता था। आगे-पीछे, दाहिने-बाएँ क्रम से घूमकर वह किसी अलक्ष्य सम पर ठहर-ठहर जाता था।

राधा नीलकंठ के समान नहीं नाच सकती थी, परंतु उसकी गति में भी एक छंद रहता था। वह नृत्यमग्न नीलकंठ की दाहिनी ओर के पंख को छूती हुई बाईं ओर निकल आती थी और बाएँ पंख

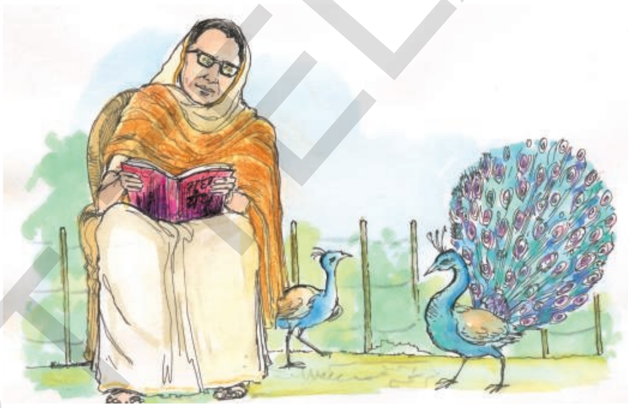

को स्पर्श कर दाहिनी ओर। इस प्रकार उसकी परिक्रमा में भी एक पूरक ताल-परिचय मिलता था। नीलकंठ ने कैसे समझ लिया कि उसका नृत्य मुझे बहुत भाता है, यह तो नहीं बताया जा सकता, परंतु अचानक एक दिन वह मेरे जालीघर के पास पहुँचते ही अपने झूले से उतरकर नीचे आ गया और पंखों का सतरंगी मंडलाकार छाता तानकर नृत्य की भंगिमा में खड़ा हो गया। तब से यह नृत्य-भंगिमा नित्य का क्रम बन गई। प्रायः मेरे साथ कोई-न-कोई देशी-विदेशी अतिथि भी पहुँच जाता था और नीलकंठ की मुद्रा को अपने प्रति सम्मानपूर्वक समझकर विस्मयाभिभूत हो उठता था। कई विदेशी महिलाओं ने उसे 'परफ़ैक्ट जेंटिलमैन' की उपाधि दे डाली। जिस नुकीली पैनी चोंच से वह भयंकर विषधर को खंड-खंड कर सकता था, उसी से मेरी हथेली पर रखे हुए भुने चने ऐसी कोमलता से हौले-हौले उठाकर खाता था कि हँसी भी आती थी और विस्मय भी होता था। फलों के वृक्षों से अधिक उसे पुष्पित और पल्लवित वृक्ष भाते थे।

SCERT TELANGANA

वंसत में जब आम के वृक्ष सुनहली मंजरियों से लद जाते थे, अशोक नए लाल पल्लवों से ढँक जाता था, तब जालीघर में वह इतना अस्थिर हो उठता कि उसे बाहर छोड़ देना पड़ता।

नीलकंठ और राधा की सबसे प्रिय ऋतु तो वर्षा ही थी। मेघों के उमड़ आने से पहले ही वे हवा में उसकी सजल आहट पा लेते थे और तब उनकी मंद केका की गूँज-अनुगूँज तीव्र से तीव्रतर होती हुई मानो बूँदों के उतरने के लिए सोपान-पंक्ति बनने लगती थी। मेघ के गर्जन के ताल पर ही उसके तन्मय नृत्य का आरंभ होता। और फिर मेघ जितना अधिक गरजता, बिजली जितनी अधिक चमकती, बूँदों की रिमझिमाहट जितनी तीव्र होती जाती, नीलकंठ के नृत्य का वेग उतना ही अधिक बढ़ता जाता और उसकी केका का स्वर उतना ही मंद्र से मंद्रतर होता जाता। वर्षा के थम जाने पर वह दाहिने पंजे पर दाहिना पंख और बाएँ पर बायाँ पंख फैलाकर सुखाता। कभी-कभी वे दोनों एक-दूसरे के पंखों से टपकनेवाली बूँदों को चोंच से पी-पीकर पंखों का गीलापन दूर करते रहते। इस आनंदोत्सव की रागिनी में बेमेल स्वर कैसे बज उठा, यह भी एक करुण कथा है।

एक दिन मुझे किसी कार्य से नखासकोने से निकलना पड़ा और बड़े मियाँ ने पहले के समान कार को रोक लिया। इस बार किसी पिंजड़े की ओर नहीं देखूँगी, यह संकल्प करके मैंने बड़े मियाँ की विरल दाढ़ी और सफ़ेद डोरे से कान में बंधी ऐनक को ही अपने ध्यान का केंद्र बनाया। पर बड़े मियाँ के पैरों के पास जो मोरनी पड़ी थी उसे अनदेखा करना कठिन था। मोरनी राधा के समान ही थी। उसके मूँज से बँधे दोनों पंजों की उँगलियाँ टूटकर इस प्रकार एकत्रित हो गई थीं कि वह खड़ी ही नहीं हो सकती थी।

बड़े मियाँ की भाषण-मेल फिर दौड़ने लगी–"देखिए गुरु जी, कमबख्त चिड़ीमार ने बेचारी का क्या हाल किया है। ऐसे कभी चिड़िया पकड़ी जाती है! आप न आई होतीं तो मैं उसी के सिर पर इसे पटक देता। पर आपसे भी यह अधमरी मोरनी ले जाने को कैसे कहूँ!"

सारांश यह कि सात रुपये देकर मैं उसे अगली सीट पर रखवाकर घर ले आई और एक बार फिर मेरे पढ़ने-लिखने का कमरा अस्पताल बना। पंजों की मरहमपट्टी और देखभाल करने पर वह महीनेभर में अच्छी हो गई। उँगलियाँ वैसी ही टेढ़ी-मेढ़ी रहीं, परंतु वह ठूँठ जैसे पंजों पर डगमगाती हुई चलने लगी। तब उसे जालीघर में पहुँचाया गया और नाम रखा गया–कुब्जा। नाम के अनुरूप वह स्वभाव से भी कुब्जा ही प्रमाणित हुई। अब तक नीलकंठ और राधा साथ रहते थे। अब कुब्जा उन्हें साथ देखते ही मारने दौड़ती। चोंच से मार-मारकर उसने राधा की कलगी नोच डाली, पंख नोच डाले। कठिनाई यह थी कि नीलकंठ उससे दूर भागता था और वह उसके साथ रहना चाहती थी। न किसी जीव-जंतु से उसकी मित्रता थी, न वह किसी को नीलकंठ के समीप आने देना चाहती थी। उसी बीच राधा ने दो अंडे दिए, जिनको वह पंखों में छिपाए बैठी रहती थी। पता चलते ही कुब्जा ने चोंच मार-मारकर राधा को ढकेल दिया और फिर अंडे फोड़कर ठूँठ जैसे पैरों से सब ओर छितरा दिए।

इस कलह-कोलाहल से और उससे भी अधिक राधा की दूरी से बेचारे नीलकंठ की प्रसन्नता का अंत हो गया।

कई बार वह जाली के घर से निकल भागा। एक बार कई दिन भूखा-प्यासा आम की शाखाओं

SCERT TELANGANA

में छिपा बैठा रहा, जहाँ से बहुत पुचकारकर मैंने उतारा। एक बार मेरी खिड़की के शेड पर छिपा रहा।

मेरे दाना देने जाने पर वह सदा की भाँति पंखों को मंडलाकार बनाकर खड़ा हो जाता था, पर उसकी चाल में थकावट और आँखों में एक शून्यता रहती थी। अपनी अनुभवहीनता के कारण ही मैं आशा करती रही कि थोड़े दिन बाद सबमें मेल हो जाएगा। अंत में तीन-चार मास के उपरांत एक दिन सवेरे जाकर देखा कि नीलकंठ पूँछ-पंख फैलाए धरती पर उसी प्रकार बैठा हुआ है, जैसे खरगोश के बच्चों को पंखों में छिपाकर बैठता था। मेरे पुकारने पर भी उसके न उठने पर संदेह हुआ।

वास्तव में नीलकंठ मर गया था। 'क्यों' का उत्तर तो अब तक नहीं मिल सका है। न उसे कोई बीमारी हुई, न उसके रंग-बिरंगे फूलों के स्तबक जैसे शरीर पर किसी चोट का चिह्न मिला। मैं अपने शाल में लपेटकर उसे संगम ले गई। जब गंगा की बीच धार में उसे प्रवाहित किया गया, तब उसके पंखों की चंद्रिकाओं से बिंबित-प्रतिबिंबित होकर गंगा का चौड़ा पाट एक विशाल मयूर के समान तरंगित हो उठा। नीलकंठ के न रहने पर राधा तो निश्चेष्ट-सी कई दिन कोने में बैठी रही। वह कई बार भागकर लौट आया था, अत: वह प्रतीक्षा के भाव से द्वार पर दृष्टि लगाए रहती थी। पर कुब्जा ने कोलाहल के साथ खोज-ढूँढ़ आरंभ की। खोज के क्रम में वह प्राय: जाली का दरवाज़ा खुलते ही बाहर निकल आती थी और आम, अशोक, कचनार आदि की शाखाओं में नीलकंठ को ढूँढ़ती रहती थी। एक दिन आम से उतरी ही थी कि कजली (अल्सेशियन कुत्ती) सामने पड़ गई। स्वभाव के अनुसार उसने कजली पर भी चोंच से प्रहार किया। परिणामत: कजली के दो दाँत उसकी गरदन पर लग गए। इस बार उसका कलह-कोलाहल और द्वेष-प्रेम भरा जीवन बचाया न जा सका। परंतु इन तीन पक्षियों ने मुझे पक्षी-प्रकृति की विभिन्नता का जो परिचय दिया है, वह मेरे लिए विशेष महत्त्व रखता है।

राधा अब प्रतीक्षा में ही दुकेली है। आषाढ़ में जब आकाश मेघाच्छन्न हो जाता है तब वह कभी ऊँचे झूले पर और कभी अशोक की डाल पर अपनी केका को तीव्रतर करके नीलकंठ को बुलाती रहती है।

❐ महादेवी वर्मा

1. मोर-मोरनी के नाम किस आधार पर रखे गये?
2. जाली के बड़े घर में पहुँचने पर मोर के बच्चों का किस प्रकार स्वागत हुआ?
3. लेखिका को नीलकंठ की कौन-कौन सी चेष्टाएँ बहुत भाती थीं?
4. 'इस आनंदोत्सव की रागिनी में बेमेल स्वर कैसे बज उठा'—वाक्य किस घटना की ओर संकेत कर रहा है?
5. वसंत ऋतु में नीलकंठ के लिए जालीघर में बंद रहना असहनीय क्यों हो जाता था?
6. जालीघर में रहनेवाले सभी जीव एक-दूसरे के मित्र बन गए थे, पर कुब्जा के साथ ऐसा संभव क्यों नहीं हो पाया?
7. नीलकंठ ने खरगोश के बच्चे को साँप से किस तरह बचाया? इस घटना के आधार पर नीलकंठ के स्वभाव की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

SCERT TELANGANA

इकाई – IV

12. वीर कुँवर सिंह

SCERT TELANGANA

प्रश्न :

1. चित्र में कौन–कौन दिखायी दे रहे हैं?
2. तिरंगा किनकी याद दिलाता है? क्यों?
3. स्वतंत्रता आंदोलन के बारे में आप क्या जानते हैं?

छात्रों के लिए सूचनाएँ :

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. पाठ पढ़िए। नये शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

आपने सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता 'झाँसी की रानी' छठी कक्षा में पढ़ी होगी। इस कविता में ठाकुर कुँवर सिंह का नाम भी आया है। आपको कविता की पंक्तियाँ याद आ रही होंगी। एक बार फिर से इन पंक्तियों को पढ़िए–

> इस स्वतंत्रता-महायज्ञ में कई वीरवर आए काम,
> नाना धुंधूपंत, ताँतिया, चतुर अज़ीमुल्ला सरनाम।
> अहमद शाह मौलवी, ठाकुर कुँवर सिंह सैनिक अभिराम,
> भारत के इतिहास-गगन में अमर रहेंगे जिनके नाम।।

यहाँ स्वतंत्रता संग्राम के उसी वीर कुँवर सिंह के बारे में जानकारी दी जा रही है। सन् 1857 के व्यापक सशस्त्र-विद्रोह ने भारत में ब्रिटिश शासन की जड़ों को हिला दिया। भारत में ब्रिटिश शासन ने जिस दमन नीति को आरंभ किया उसके विरुद्ध विद्रोह शुरू हो गया था। मार्च 1857 में बैरकपुर में अंग्रेज़ों के विरुद्ध बगावत करने पर मंगल पांडे को 8 अप्रैल 1857 को फाँसी दे दी गई। 10 मई 1857 को मेरठ में भारतीय सैनिकों ने ब्रिटिश अधिकारियों के विरुद्ध आंदोलन किया और सीधे दिल्ली की ओर कूच कर गए। दिल्ली में तैनात सैनिकों के साथ मिलकर 11 मई को उन्होंने दिल्ली पर कब्ज़ा कर लिया और अंतिम मुगल शासक बहादुरशाह ज़फ़र को भारत का शासक घोषित कर दिया। यह विद्रोह जंगल की आग की भाँति दूर-दूर तक फैल गया। कई महीनों तक उत्तरी और मध्य भारत के विस्तृत भूभाग पर विद्रोहियों का कब्ज़ा रहा।

कुँवर सिंह

दिल्ली के अतिरिक्त जहाँ अत्यधिक भीषण युद्ध हुआ, वे केंद्र थे–कानपुर, लखनऊ, बरेली, बुंदेलखंड और आरा। इसके साथ ही देश के अन्य कई भागों में भी स्थानीय विद्रोह हुए। विद्रोह के मुख्य नेताओं में नाना साहेब, ताँत्या टोपे, बख्त खान, अज़ीमुल्ला खान, रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हज़रत महल, कुँवर सिंह, मौलवी अहमदुल्लाह, बहादुर खान और राव तुलाराम थे। 1857 का आंदोलन स्वतंत्रता प्राप्ति की दिशा में एक दृढ़ कदम था। आगे चलकर जिस राष्ट्रीय एकता और आंदोलन की नींव पड़ी, उसकी आधारभूमि को निर्मित करने का काम 1857 के आंदोलन ने किया। भारत में सांप्रदायिक सद्भाव को बढ़ाने की दिशा में भी इस आंदोलन का विशेष महत्त्व है।

बेगम हज़रत महल

1857 के आंदोलन में वीर कुँवर सिंह का नाम कई दृष्टियों से उल्लेखनीय है। कुँवर सिंह जैसे वयोवृद्ध व्यक्ति ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ़ बहादुरी के साथ युद्ध किया।

वीर कुँवर सिंह के बचपन के बारे में बहुत अधिक जानकारी नहीं मिलती। कहा जाता है कि कुँवर सिंह का जन्म बिहार में शाहाबाद ज़िले के जगदीशपुर में सन् 1782 ई॰ में हुआ था। उनके पिता

SCERT TELANGANA

का नाम साहबज़ादा सिंह और माता का नाम पंचरतन कुँवर था। उनके पिता साहबज़ादा सिंह जगदीशपुर रियासत के ज़मींदार थे, परंतु उनको अपनी ज़मींदारी हासिल करने में बहुत संघर्ष करना पड़ा। पारिवारिक उलझनों के कारण कुँवर सिंह के पिता बचपन में उनकी ठीक से देखभाल नहीं कर सके। जगदीशपुर लौटने के बाद ही वे कुँवर सिंह की पढ़ाई-लिखाई की ठीक से व्यवस्था कर पाए।

कुँवर सिंह के पिता वीर होने के साथ-साथ स्वाभिमानी एवं उदार स्वभाव के व्यक्ति थे। उनके व्यक्तित्व का प्रभाव कुँवर सिंह पर भी पड़ा। कुँवर सिंह की शिक्षा-दीक्षा की व्यवस्था उनके पिता ने घर पर ही की, वहीं उन्होंने हिंदी, संस्कृत और फ़ारसी सीखी। परंतु पढ़ने-लिखने से अधिक उनका मन घुड़सवारी, तलवारबाज़ी और कुश्ती लड़ने में लगता था।

बहादुरशाह ज़फ़र

बाबू कुँवर सिंह ने अपने पिता की मृत्यु के बाद सन् 1827 में अपनी रियासत की ज़िम्मेदारी सँभाली। उन दिनों ब्रिटिश हुकूमत का अत्याचार चरम सीमा पर था। इससे लोगों में ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ़ भयंकर असंतोष उत्पन्न हो रहा था। कृषि, उद्योग और व्यापार का तो बहुत ही बुरा हाल था। रजवाड़ों के राजदरबार भी समाप्त हो गए थे। भारतीयों को अपने ही देश में महत्त्वपूर्ण और ऊँची नौकरियों से वंचित कर दिया गया था। इससे ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध देशव्यापी संघर्ष की स्थिति बन गई थी। ऐसी स्थिति में कुँवर सिंह ने ब्रिटिश हुकूमत से लोहा लेने का संकल्प लिया।

जगदीशपुर के जंगलों में 'बसुरिया बाबा' नाम के एक सिद्ध संत रहते थे। उन्होंने ही कुँवर सिंह में देशभक्ति एवं स्वाधीनता की भावना उत्पन्न की थी। उन्होंने बनारस, मथुरा, कानपुर, लखनऊ आदि स्थानों पर जाकर विद्रोह की सक्रिय योजनाएँ बनाईं। वे 1845 से 1846 तक काफ़ी सक्रिय रहे और गुप्त ढंग से ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ़ विद्रोह की योजना बनाते रहे। उन्होंने बिहार के प्रसिद्ध सोनपुर मेले को अपनी गुप्त बैठकों की योजना के लिए चुना। सोनपुर के मेले को एशिया का सबसे बड़ा पशु मेला माना जाता है। यह मेला कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर लगता है। यह हाथियों के क्रय-विक्रय के लिए भी विख्यात है। इसी ऐतिहासिक मेले में उन दिनों स्वाधीनता के लिए लोग एकत्र होकर क्रांति के बारे में योजना बनाते थे।

25 जुलाई 1857 को दानापुर की सैनिक टुकड़ी ने विद्रोह कर दिया और सैनिक सोन नदी पार कर आरा की ओर चल पड़े। कुँवर सिंह से उनका संपर्क पहले से ही था। इस मुक्तिवाहिनी के सभी बागी सैनिकों ने कुँवर सिंह का जयघोष करते हुए आरा पहुँचकर जेल की सलाखें तोड़ दीं और कैदियों को आज़ाद कर दिया। 27 जुलाई 1857 को कुँवर सिंह ने आरा पर विजय प्राप्त की। सिपाहियों ने उन्हें फ़ौजी सलामी दी। यद्यपि कुँवर सिंह बूढ़े हो चले थे परंतु वह बूढ़ा शूरवीर इस अवस्था में भी युद्ध के लिए तत्पर हो गया और आरा क्रांति का महत्त्वपूर्ण केंद्र बन गया।

दानापुर और आरा की इस लड़ाई की ज्वाला बिहार में सर्वत्र व्याप्त हो गई थी। लेकिन देशी सैनिकों में अनुशासन की कमी, स्थानीय ज़मींदारों का अंग्रेज़ों के साथ सहयोग करना एवं आधुनिकतम शस्त्रों की कमी के कारण जगदीशपुर का पतन रोका न जा सका। 13 अगस्त को जगदीशपुर में कुँवर सिंह की सेना अंग्रेज़ों से परास्त हो गई। किंतु इससे वीरवर कुँवर सिंह का आत्मबल टूटा नहीं और वे भावी संग्राम की योजना बनाने में तत्पर हो गए। वे क्रांति के अन्य संचालक नेताओं से मिलकर इस आज़ादी की लड़ाई को आगे

SCERT TELANGANA

मंगल पांडे

बढ़ाना चाहते थे। कुँवर सिंह सासाराम से मिर्ज़ापुर होते हुए रीवा, कालपी, कानपुर एवं लखनऊ तक गए। लखनऊ में शांति नहीं थी इसलिए बाबू कुँवर सिंह ने आज़मगढ़ की ओर प्रस्थान किया। उन्होंने आज़ादी की इस आग को बराबर जलाए रखा। उनकी वीरता की कीर्ति पूरे उत्तर भारत में फैल गई। कुँवर सिंह की इस विजय यात्रा से अंग्रेज़ों के होश उड़ गए। कई स्थानों के सैनिक एवं राजा कुँवर सिंह की अधीनता में लड़े। उनकी यह आज़ादी की यात्रा आगे बढ़ती रही, लोग शामिल होते गए और उनकी अगुवाई में लड़ते रहे। इस प्रकार ग्वालियर, जबलपुर के सैनिकों के सहयोग से सफल सैन्य रणनीति का प्रदर्शन करते हुए वे लखनऊ पहुँचे।

आज़मगढ़ की ओर जाने का उनका उद्देश्य था—इलाहाबाद एवं बनारस पर आक्रमण कर शत्रुओं को पराजित करना और अंतत: जगदीशपुर पर अधिकार करना। अंग्रेज़ों और कुँवर सिंह की सेना के बीच घमासान युद्ध हुआ। उन्होंने 22 मार्च 1858 को आज़मगढ़ पर कब्ज़ा कर लिया। अंग्रेज़ों ने दोबारा आज़मगढ़ पर आक्रमण किया। कुँवर सिंह ने एक बार फिर आज़मगढ़ में अंग्रेज़ों को हराया। इस प्रकार अंग्रेज़ी सेना को परास्त कर वीर कुँवर सिंह 23 अप्रैल 1858 को स्वाधीनता की विजय पताका फहराते हुए जगदीशपुर पहुँच गए। किंतु इस बूढ़े शेर को बहुत अधिक दिनों तक इस विजय का आनंद लेने का सौभाग्य न मिला। इसी दिन विजय उत्सव मनाते हुए लोगों ने यूनियन जैक (अंग्रेज़ों का झंडा) उतारकर अपना झंडा फहराया। इसके तीन दिन बाद ही 26 अप्रैल 1858 को यह वीर इस संसार से विदा होकर अपनी अमर कहानी छोड़ गया।

स्वाधीनता सेनानी वीर कुँवर सिंह युद्ध-कला में पूरी तरह कुशल थे। छापामार युद्ध करने में उन्हें महारत हासिल थी। कुँवर सिंह के रणकौशल को अंग्रेज़ी सेनानायक समझने में पूर्णत: असमर्थ थे। दुश्मन को उनके सामने से या तो भागना पड़ता था या कट मरना पड़ता था। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में इन्होंने तलवार की जिस धार से अंग्रेज़ी सेना को मौत के घाट उतारा उसकी चमक आज भी भारतीय इतिहास के पृष्ठों पर अंकित है। उनकी बहादुरी के बारे में अनेक किस्से प्रचलित हैं।

कहा जाता है एक बार वीर कुँवर सिंह को अपनी सेना के साथ गंगा पार करनी थी। अंग्रेज़ी सेना निरंतर उनका पीछा कर रही थी, पर कुँवर सिंह भी कम चतुर नहीं थे। उन्होंने अफ़वाह फैला दी कि वे अपनी सेना को बलिया के पास हाथियों पर चढ़ाकर पार कराएँगे। फिर क्या था, अंग्रेज़ सेनापति डगलस बहुत बड़ी सेना लेकर बलिया के निकट गंगा तट पर पहुँचा और कुँवर सिंह की प्रतीक्षा करने लगा। कुँवर सिंह ने बलिया से सात मील दूर शिवराजपुर नामक स्थान पर अपनी सेना को नावों से गंगा पार करा दिया। जब डगलस को इस घटना की सूचना मिली तो वह भागते हुए शिवराजपुर पहुँचा, पर कुँवर सिंह की तो पूरी सेना गंगा पार कर चुकी थी। एक अंतिम नाव रह गई थी और कुँवर सिंह उसी पर सवार थे। अंग्रेज़ सेनापति डगलस को अच्छा मौका मिल गया। उसने गोलियाँ बरसानी आरंभ कर दीं, तब कुँवर सिंह के बाएँ हाथ की कलाई को भेदती हुई एक गोली निकल गई। कुँवर सिंह को लगा कि अब हाथ तो बेकार हो ही गया और गोली का ज़हर भी फैलेगा, उसी क्षण उन्होंने गंगा मैया की ओर भावपूर्ण नेत्रों से देखा और अपने बाएँ हाथ को काटकर गंगा मैया को अर्पित कर दिया। कुँवर सिंह ने अपने ओजस्वी स्वर में कहा, "हे गंगा मैया! अपने प्यारे की यह अकिंचन भेंट स्वीकार करो।"

वीर कुँवर सिंह ने ब्रिटिश हुकूमत के साथ लोहा तो लिया ही उन्होंने अनेक सामाजिक कार्य भी

SCERT TELANGANA

किए। आरा ज़िला स्कूल के लिए ज़मीन दान में दी जिस पर स्कूल के भवन का निर्माण किया गया। कहा जाता है कि उनकी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी, फिर भी वे निर्धन व्यक्तियों की सहायता करते थे। उन्होंने अपने इलाके में अनेक सुविधाएँ प्रदान की थीं। उनमें से एक है–आरा-जगदीशपुर सड़क और आरा-बलिया सड़क का निर्माण। उस समय जल की पूर्ति के लिए लोग कुएँ खुदवाते थे और तालाब बनवाते थे। वीर कुँवर सिंह ने अनेक कुएँ खुदवाए और जलाशय भी बनवाए।

कुँवर सिंह उदार एवं अत्यंत संवेदनशील व्यक्ति थे। इब्राहीम खाँ और किफ़ायत हुसैन उनकी सेना में उच्च पदों पर आसीन थे। उनके यहाँ हिंदुओं और मुसलमानों के सभी त्योहार एक साथ मिलकर मनाए जाते थे। उन्होंने पाठशालाएँ और मकतब भी बनवाए। बाबू कुँवर सिंह की लोकप्रियता इतनी थी कि बिहार की कई लोकभाषाओं में उनकी प्रशस्ति लोकगीतों के रूप में आज भी गाई जाती है। बिहार के प्रसिद्ध कवि मनोरंजन प्रसाद सिंह ने उनकी वीरता और शौर्य का वर्णन करते हुए लिखा है–

चला गया यों कुँअर अमरपुर, साहस से सब अरिदल जीत,
उसका चित्र देखकर अब भी, दुश्मन होते हैं भयभीत।
वीर-प्रसविनी-भूमि धन्य वह, धन्य वीर वह धन्य अतीत,
गाते थे और गावेंगे हम, हरदम उसकी जय का गीत।
स्वतंत्रता का सैनिक था, आज़ादी का दीवाना था,
सब कहते हैं कुँअर सिंह भी, बड़ा वीर मरदाना था।।

SCERT TELANGANA

सुनिए–बोलिए

1. स्वतंत्रता संग्राम के बारे में आप क्या जानते हैं? बताइए।
2. वीर कुँवर सिंह का पढ़ने के साथ–साथ कुश्ती और घुड़सवारी में अधिक मन लगता था। आपको पढ़ने के अलावा और किन–किन गतिविधियों या कामों में खूब मजा आता है? बताइए।
3. स्वाधीनता की योजना बनाने के लिए सोनपुर के मेले को क्यों चुना गया होगा?

पढ़िए

1. पाठ के किन प्रसंगों से आपको पता चलता है कि कुँवर सिंह साहसी, उदार एवं स्वाभिमानी व्यक्ति थे?
2. पाठ पढ़कर स्वतंत्रता सेनानियों के नाम और उनकी विशेषताएँ बताइए।
3. आम तौर पर मेले मनोरंजन, खरीद फरोख एवं मेलजोल के लिए होते हैं। वीर कुँवर सिंह ने मेले का उपयोग किस रूप में किया?

लिखिए

1. वीर कुँवर सिंह के व्यक्तित्व की कौन–कौन सी विशेषताओं ने आपको प्रभावित किया?
2. सांप्रदायिक सद्‌भाव में कुँवर सिंह की गहरी आस्था थी–पाठ के आधार पर कथन की पुष्टि कीजिए।
3. वीर कुँवर सिंह और अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने देश को स्वतंत्र बनाने के लिए अनेक त्याग किये थे। देश की स्वतंत्रता और विकास के लिए आप क्या करेंगे?

शब्द भंडार

1. दिल्ली की ओर कूच कर गए। रेखांकित शब्द से वाक्य बनाइए।
2. कुँवर सिंह का नाम कई दृष्टियों से उल्लेखनीय है। 'दृष्टि' शब्द का प्रयोग करते हुए भिन्न अर्थ में वाक्य लिखिए।
3. 'हे गंगा मैया! अपने प्यारे की यह अकिंचन भेंट स्वीकार करो।' रेखांकित शब्द के दो पर्याय शब्द लिखिए।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

■ अभी तक आपने कुँवर सिंह के बारे में जानकारी प्राप्त की। कक्षा में कुँवर सिंह का एकल पात्राभिनय कीजिए।

SCERT TELANGANA

प्रशंसा

- एक सच्चे देशभक्त में कौनसे गुण होने चाहिए? अपने विचार लिखिए।

भाषा की बात

1. आप जानते हैं कि किसी शब्द को बहुवचन में प्रयोग करने पर उसकी वर्तनी में बदलाव आता है। जैसे– सेनानी एक व्यक्ति के लिए प्रयोग करते हैं और सेनानियों एक से अधिक के लिए। सेनानी शब्द की वर्तनी में बदलाव यह हुआ है कि अंत के वर्ण 'नी' की मात्रा दीर्घ ' ी ' (ई) से ह्रस्व 'ि' (इ) हो गई है। ऐसे शब्दों को, जिनके अंत में दीर्घ ईकार होता है, बहुवचन बनाने पर वह इकार हो जाता है, यदि शब्द के अंत में ह्रस्व इकार होता है, तो उसमें परिवर्तन नहीं होता जैसे–दृष्टि से दृष्टियों।
2. नीचे दिए गए शब्दों का वचन बदलिए–

नीति .... जिम्मेदारियों .... सलामी ....
स्थिति .... स्वाभिमानियों .... गोली ....

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ का भाव अपने शब्दों में बता सकता/सकती हूँ। भावों से संबंधित बातचीत कर सकता/सकती हूँ।		
2. इस स्तर की गद्य सामग्री का भाव पढ़ कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. इस स्तर के गद्यांशों की व्याख्या करते हुए लिख सकता/सकती हूँ ।		
4. पाठ के शब्दों को अपनी बातचीत में प्रयोग कर सकता/सकती हूँ।		
5. पाठ का एकल अभिनय कर सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

इकाई – IV

13. संघर्ष के कारण मैं तुनुकमिज़ाज हो गया : धनराज

प्रश्न :

1. ध्यान चंद के बारे में आप क्या जानते हैं?
2. हॉकी को भारत का राष्ट्रीय खेल क्यों कहा जाता है?
3. हॉकी के कुछ खिलाड़ियों के नाम बताइए।

छात्रों के लिए सूचनाएँ :

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. पाठ पढ़िए। नये शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

SCERT TELANGANA

हॉकी के सुप्रसिद्ध खिलाड़ी धनराज पिल्लै जब पैतींस वर्ष के हो गए, उनका एक साक्षात्कार विनीता पाण्डेय ने लिया था। इस साक्षात्कार का संपादित अंश यहाँ दिया जा रहा है।

विनीता– खिड़की, पुणे की तंग गलियों से लेकर मुंबई के हीरानंदानी पवई कॉम्प्लेक्स तक आपका सफ़र बहुत लंबा और कष्टसाध्य रहा है। उस सफ़र के बारे में कुछ बताएँ।

धनराज– बचपन मुश्किलों से भरा रहा। हम बहुत गरीब थे। मेरे दोनों बड़े भाई हॉकी खेलते थे। उन्हीं के चलते मुझे भी उसका शौक हुआ। पर, हॉकी-स्टिक खरीदने तक की हैसियत नहीं थी मेरी। इसलिए अपने साथियों की स्टिक उधार माँगकर काम चलाता था। वह मुझे तभी मिलती, जब वे खेल चुके होते थे। इसके लिए बहुत धीरज के साथ अपनी बारी का इंतज़ार करना पड़ता था। मुझे अपनी पहली स्टिक तब मिली, जब मेरे बड़े भाई को भारतीय कैंप के लिए चुन लिया गया। उसने मुझे अपनी पुरानी स्टिक दे दी। वह नयी तो नहीं थी लेकिन मेरे लिए बहुत कीमती थी, क्योंकि वह मेरी अपनी थी।

मैंने अपनी जूनियर राष्ट्रीय हॉकी सन् 1985 में मणिपुर में खेली। तब मैं सिर्फ़ 16 साल का था–देखने में दुबला-पतला और छोटे बच्चे जैसा चेहरा...। अपनी दुबली कद-काठी के बावजूद मेरा ऐसा दबदबा था कि कोई मुझसे भिड़ने की कोशिश नहीं करता था। मैं बहुत जुझारू था–मैदान में भी और मैदान से बाहर भी। 1986 में मुझे सीनियर टीम में डाल दिया गया और मैं बोरिया-बिस्तरा बाँधकर मुंबई चला आया। उस साल मैंने और मेरे बड़े भाई रमेश ने मुंबई लीग में बेहतरीन खेल खेला–हमने खूब धूम मचाई। इसी के चलते मेरे अंदर एक उम्मीद जागी कि मुझे ओलंपिक (1988) के लिए नेशनल कैंप से बुलावा ज़रूर आएगा, पर नहीं आया। मेरा नाम 57 खिलाड़ियों की लिस्ट में भी नहीं था। बड़ी मायूसी हुई। मगर एक साल बाद ही ऑलविन एशिया कप के कैंप के लिए मुझे चुन लिया गया। तब से लेकर आज तक मैंने पीछे मुड़कर नहीं देखा।

विनीता– आपका विद्यार्थी जीवन कैसा रहा? अपने स्कूल के दिनों से आपकी किस प्रकार की यादें जुड़ी हैं?

धनराज– मैं पढ़ने में एकदम फिसड्डी था। किसी तरह दसवीं तक पहुँचा, मगर उसके आगे तो मामला बहुत कठिन था। एक बात कहूँ–अगर मैं हॉकी खिलाड़ी न

SCERT TELANGANA

> धनराज पिल्लै के व्यक्तित्व को रेखांकित करते हुए विनीता पाण्डेय ने लिखा है–'वह आपको कभी हँसाता है, कभी रुलाता है, कभी विस्मय से भर देता है, तो कभी खीझ से भी। उसके व्यक्तित्व में कई रंग हैं और कई भाव। उसने ठेठ ज़मीन से उठकर आसमान का सितारा बनने की यात्रा तय की है।'

होता तो शायद एक चपरासी की नौकरी भी मुझे न मिलती। आज मैं बैचलर ऑफ़ साइंस या आर्ट्स भले ही न होऊँ पर गर्व से कह सकता हूँ कि मैं बैचलर ऑफ़ हॉकी हूँ। (हँसते हुए)...और मेरी शादी के लिए आप मुझे मास्टर ऑफ़ हॉकी कह सकते हैं।

विनीता– आप इतने तुनुकमिज़ाज क्यों हैं? कभी-कभी आप आक्रामक भी हो जाते हैं!

धनराज– इस बात का संबंध मेरे बचपन से जुड़ा हुआ है। मैं हमेशा से ही अपने आपको बहुत असुरक्षित महसूस करता रहा। मैंने अपनी माँ को देखा है कि उन्हें हमारे पालन-पोषण में कितना संघर्ष करना पड़ा है। मेरी तुनुकमिज़ाजी के पीछे कई वजहें हैं। लेकिन मैं बिना लाग-लपेट वाला आदमी हूँ। मन में जो आता है, सीधे-सीधे कह डालता हूँ और बाद को कई बार पछताना भी पड़ता है। मुझसे अपना गुस्सा रोका नहीं जाता। दूसरे लोगों को भी मुझे उकसाने में मज़ा आता है। मुझे ज़िंदगी में हर छोटी-बड़ी चीज़ के लिए जूझना पड़ा, जिससे मैं चिड़चिड़ा हो गया हूँ। साथ-ही-साथ मैं बहुत भावुक इनसान भी हूँ। मैं किसी को तकलीफ़ में नहीं देख सकता। मैं अपने दोस्तों और अपने परिवार की बहुत कद्र करता हूँ। मुझे अपनी गलतियों के लिए माफ़ी माँगने में कोई शरम महसूस नहीं होती।

विनीता– आपके परिवार की आपके लिए क्या अहमियत है?

धनराज– सबसे अधिक प्रेरणा मुझे अपनी माँ से मिली। उन्होंने हम सब भाई-बहनों में अच्छे संस्कार डालने की कोशिश की। मैं उनके सबसे नज़दीक हूँ। मैं चाहे भारत में रहूँ या विदेश में, रोज़ रात में सोने से पहले माँ से ज़रूर बात करता हूँ। मेरी माँ ने मुझे अपनी प्रसिद्धि को विनम्रता के साथ सँभालने की सीख दी है। मेरी सबसे बड़ी भाभी कविता भी मेरे लिए माँ की तरह हैं और वह भी मेरे लिए प्रेरणा-स्रोत रही हैं।

विनीता– आपने सबसे पहले कृत्रिम घास (एस्ट्रो टर्फ़) पर हॉकी कब खेली?

धनराज– मैंने सबसे पहले कृत्रिम घास तब देखी जब राष्ट्रीय खेलों (नेशनल्स) में भाग लेने 1988 में नयी दिल्ली आया। मुझे याद है कि किस तरह सोमय्या और जोक्विम कार्वाल्हो मुझे एक कोने में ले जाकर कृत्रिम घास पर खेलने के गुर बता रहे थे। और जब वे बताने में लगे हुए थे, मैं झुक-झुककर उस मैदान को छू रहा था। मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि विज्ञान इस कदर तरक्की कर सकता है, जिससे कृत्रिम घास तक उगाई जा सके!

विनीता– हर युवक का यह सपना होता है कि उसके पास एक कार हो। आपके पास अपनी पहली कार कब आई?

धनराज– मेरी पहली कार एक सेकेंड हैंड अरमाडा थी, जो मुझे मेरे पहले के इम्प्लॉयर ने दी थी। तब तक मैं काफ़ी नामी खिलाड़ी बन चुका था। मगर यह कोई ज़रूरी नहीं कि शोहरत पैसा साथ लेकर आए! मैं तब भी मुंबई की लोकल ट्रेनों और बसों में सफ़र करता था।

SCERT TELANGANA

क्योंकि टैक्सी में चढ़ने की हैसियत मुझमें नहीं थी। मुझे याद है, एक बार किसी फ़ोटोग्राफ़र ने एक भीड़ से भरे रेलवे स्टेशन पर मेरी तसवीर खींचकर अगली सुबह अखबार में यह खबर छाप दी कि 'हॉकी का सितारा पिल्लै अभी भी मुंबई की लोकल ट्रेनों में सफ़र करता है।' उस दिन मैंने महसूस किया कि मैं एक मशहूर चेहरा बन चुका हूँ और मुझे लोकल ट्रेनों में सफ़र करने से बचना चाहिए। लेकिन मैं कर ही क्या सकता था? मैं जो भी थोड़ा बहुत कमाता, उससे अपना परिवार चलाना पड़ता था। धीरे-धीरे पैसे जमा करके बहन की शादी की और अपनी माँ के लिए हर महीने पुणे पैसा भेजना शुरू किया। आज मेरे पास एक फ़ोर्ड आइकॉन है, जिसे मैंने सन् 2000 में खरीदा था। मगर वह किसी कॉरपोरेट हाउस का दिया हुआ तोहफ़ा नहीं, बल्कि मेरी मेहनत की गाढ़ी कमाई से खरीदी हुई कार है।

विनीता– सफलता का आपके लिए क्या महत्त्व है? हॉकी को आपने इतना कुछ दिया, इसके बदले आपको क्या मिला?

धनराज– कुछ रुपये ईनाम में मिले थे, मगर आज खिलाड़ियों को जितना मिलता है, उसके मुकाबले में पहले कुछ नहीं मिलता था। मेरी पहली ज़िम्मेदारी थी परिवार में आर्थिक तंगी को दूर करना और उन सबको एक बेहतर ज़िंदगी देना। विदेश में जाकर खेलने से जो कमाई हुई, उससे मैंने 1994 में पुणे के भाऊ पाटिल रोड पर दो बेडरूम का एक छोटा सा फ़्लैट खरीदा। घर छोटा ज़रूर है पर हम सबके लिए काफ़ी है। 1999 में महाराष्ट्र सरकार ने मुझे पवई में एक फ़्लैट दिया। वह ऐसा घर है जिसे खरीदने की मेरी खुद की हैसियत कभी नहीं हो पाती।

विनीता– सेलेब्रिटीज़ के साथ एक ही मंच पर बैठना कैसा लगता है?

धनराज– बहुत अच्छा! जब हम राष्ट्रपति से मिले तब यह महसूस हुआ कि हम कितने खास हैं। हॉकी ही है जिसके चलते हर जगह प्रतिष्ठा मिली।

SCERT TELANGANA

सुनिए–बोलिए

1. साक्षात्कार पढ़कर आपके मन में धनराज पिल्लै की कैसी छवि उभरती है? वर्णन कीजिए।
2. किन विशेषताओं के कारण हॉकी भारत का राष्ट्रीय खेल माना जाता है?
3. "यह कोई ज़रूरी नहीं कि शोहरत पैसा भी साथ लेकर आए" – क्या आप धनराज पिल्लै की इस बात से सहमत हैं? बताइए।

पढ़िए

1. 'मेरी माँ ने मुझे अपनी प्रसिद्धि को विनम्रता से सँभालने की सीख दी है'– धनराज पिल्लै की इस बात का क्या अर्थ है?
2. धनराज पिल्लै को अपने जीवन में किन–किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा? साक्षात्कार पढ़कर बताइए ।

लिखिए

1. ध्यानचंद को हॉकी का जादूगर कहा जाता है। क्यों? पता लगाइए।
2. धनराज पिल्लै ने ज़मीन से उठकर आसमान का सितारा बनने तक की यात्रा तय की है। लगभग सौ शब्दों में इस सफ़र का वर्णन कीजिए।
3. इस साक्षात्कार से आपको क्या सीख मिलती है?
4. (क) अपनी गलतियों के लिए माफ़ी माँगना आसान होता है या मुश्किल?
   (ख) क्या आप और आपके आसपास के लोग अपनी गलतियों के लिए माफ़ी माँग लेते हैं?
   (ग) माफ़ी माँगना मुश्किल होता है या माफ़ करना? अपने अनुभव के आधार पर लिखिए।

शब्द भंडार

1. पिल्लै अभी भी मुंबई की लोकल ट्रेनों में <u>सफ़र</u> करता है। (रेखांकित शब्द का पर्याय लिखकर वाक्य प्रयोग कीजिए।)

SCERT TELANGANA

2. मैं अपने दोस्तों और अपने परिवार की बहुत <u>कद्र</u> करता हूँ। (रेखांकित शब्द का पर्याय लिखकर वाक्य प्रयोग कीजिए।)
3. पाठ से पाँच युग्म शब्द चुनकर वाक्य प्रयोग कीजिए।
4. पाठ में कई अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग हुआ है। उनके अर्थ हिंदी और अपनी मातृभाषा में जानो। पाँच शब्दों का वाक्य में प्रयोग करें।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

■ अपने किसी पसंदीदा खिलाड़ी का साक्षात्कार लेने के लिए प्रश्नावली तैयार करें।

प्रशंसा

■ खेल में हार-जीत लगी रहती है। खेलों से हमें जीवन में काम आनेवाली कैसी सीख मिलती है?

भाषा की बात

1. नीचे कुछ शब्द लिखे हैं जिनमें अलग-अलग प्रत्ययों के कारण बारीक अंतर है। इस अंतर को समझाने के लिए इन शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए–

प्रेरणा	प्रेरक	प्रेरित
संभव	संभावित	संभवतः
उत्साह	उत्साहित	उत्साहवर्धक

2. **तुनुकमिज़ाज** शब्द **तुनुक** और **मिज़ाज** दो शब्दों के मिलने से बना है। **क्षणिक**, **तनिक** और **तुनुक** एक ही शब्द के भिन्न रूप हैं। इस प्रकार का रूपांतर दूसरे शब्दों में भी होता है, जैसे–बादल, बादर, बदरा, बदरिया; मयूर, मयूरा, मोर; दर्पण, दर्पन, दरपन। शब्दकोश की सहायता लेकर एक ही शब्द के दो या दो से अधिक रूपों को खोजिए। कम-से-कम चार शब्द और उनके अन्य रूप लिखिए।

SCERT TELANGANA

4. **अनुमानित** शब्द **अनुमान** में **इत** प्रत्यय जोड़कर बना है। इत प्रत्यय जोड़ने पर अनुमान का **न नित** में परिवर्तित हो जाता है। नीचे–इत प्रत्यय वाले कुछ और शब्द लिखे हैं। उनमें मूल शब्द पहचानिए और देखिए कि क्या परिवर्तन हो रहा है–

प्रमाणित	व्यथित	द्रवित	मुखरित
झंकृत	शिक्षित	मोहित	चर्चित

इत प्रत्यय की भाँति **इक** प्रत्यय से भी शब्द बनते हैं और तब शब्द के पहले अक्षर में भी परिवर्तन हो जाता है, जैसे–**सप्ताह** + **इक** = **साप्ताहिक**। नीचे इक प्रत्यय से बनाए गए शब्द दिए गए हैं। इनमें मूल शब्द पहचानिए और देखिए कि क्या परिवर्तन हो रहा है–

मौखिक	संवैधानिक	प्राथमिक
नैतिक	पौराणिक	दैनिक

5. **बैलगाड़ी** और **घोड़ागाड़ी** शब्द दो शब्दों को जोड़ने से बने हैं। इसमें दूसरा शब्द प्रधान है, यानी शब्द का प्रमुख अर्थ दूसरे शब्द पर टिका है। ऐसे समास को तत्पुरुष समास कहते हैं। ऐसे छह शब्द और सोचकर लिखिए और समझिए कि उनमें दूसरा शब्द प्रमुख क्यों है?

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ का भाव अपने शब्दों में बता सकता/सकती हूँ।		
भावों से संबंधित बातचीत कर सकता/सकती हूँ।		
2. इस स्तर की गद्य सामग्री का भाव पढ़ कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. इस स्तर के गद्यांशों की व्याख्या करते हुए लिख सकता/सकती हूँ।		
4. पाठ के शब्दों को अपनी बातचीत में प्रयोग कर सकता/सकती हूँ।		
5. अपने पसंदीदा खिलाड़ी का साक्षात्कार ले सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

इकाई – IV

14. विप्लव गायन

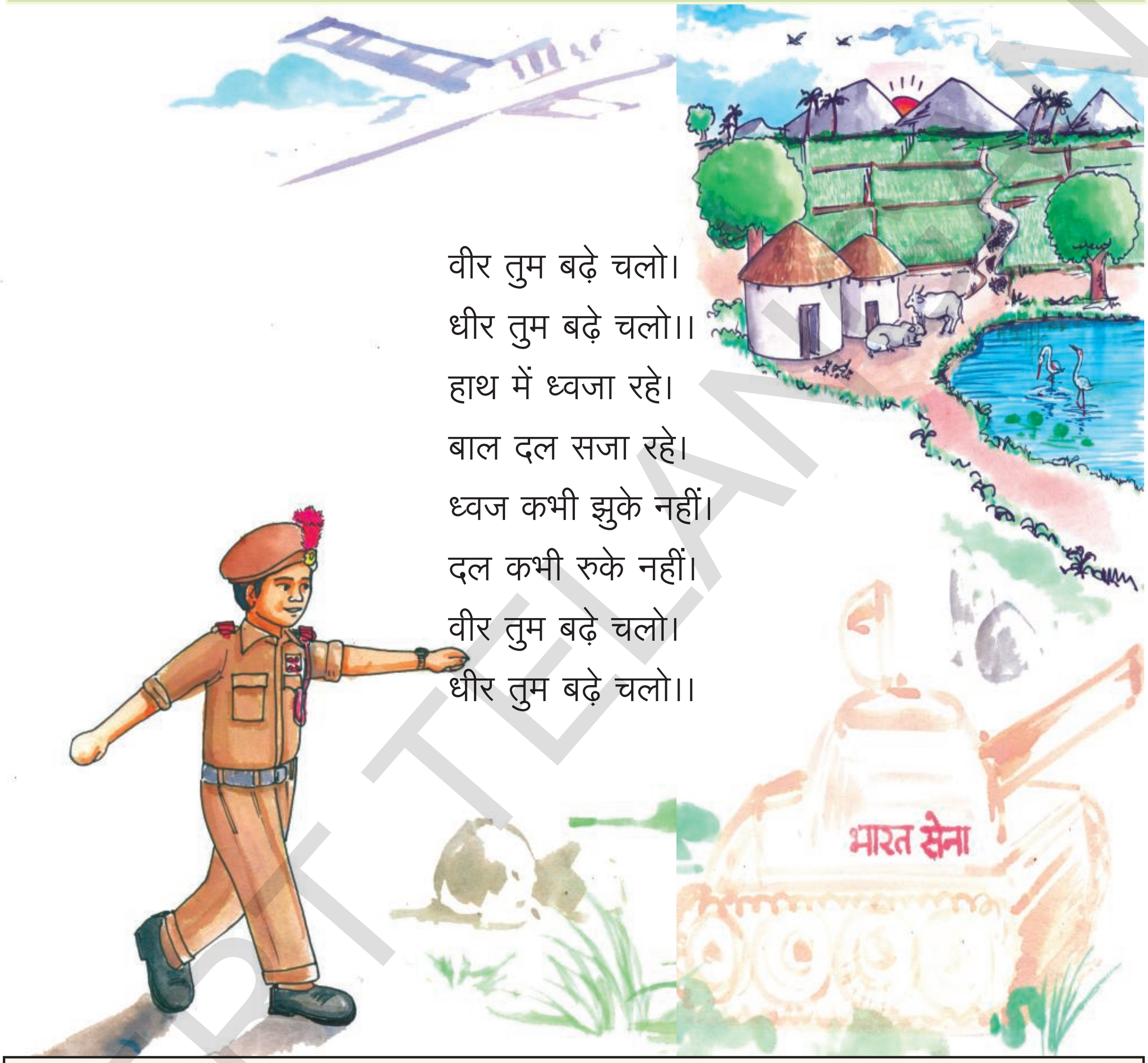

वीर तुम बढ़े चलो।
धीर तुम बढ़े चलो।।
हाथ में ध्वजा रहे।
बाल दल सजा रहे।
ध्वज कभी झुके नहीं।
दल कभी रुके नहीं।
वीर तुम बढ़े चलो।
धीर तुम बढ़े चलो।।

प्रश्न :

1. चित्र में दी गयी कविता पढ़िए।
2. इस कविता में क्या संदेश है?
3. आप देश के लिए क्या करना चाहेंगे?

छात्रों के लिए सूचनाएँ :

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. पाठ पढ़िए। नये शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

SCERT TELANGANA

कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ–
जिससे उथल पुथल मच जाए,
एक हिलोर इधर से आए,
एक हिलोर उधर से आए।
सावधान! मेरी वीणा में
चिनगारियाँ आन बैठी हैं,
टूटी हैं मिज़राबें, अंगुलियाँ
दोनों मेरी ऐंठी हैं।
कंठ रुका है महानाश का
मारक गीत रुद्ध होता है,
आग लगेगी क्षण में, हृत्तल में
अब क्षुब्ध-युद्ध होता है।
झाड़ और झंखाड़ दग्ध है
इस ज्वलंत गायन के स्वर से,
रुद्ध-गीत की क्रुद्ध तान है
निकली मेरे अंतरतर से।
कण-कण में है व्याप्त वही स्वर
रोम-रोम गाता है वह ध्वनि,
वही तान गाती रहती है,
कालकूट फणि की चिंतामणि।
आज देख आया हूँ–जीवन के
सब राज़ समझ आया हूँ,
भ्रू-विलास में महानाश के
पोषक सूत्र परख आया हूँ।

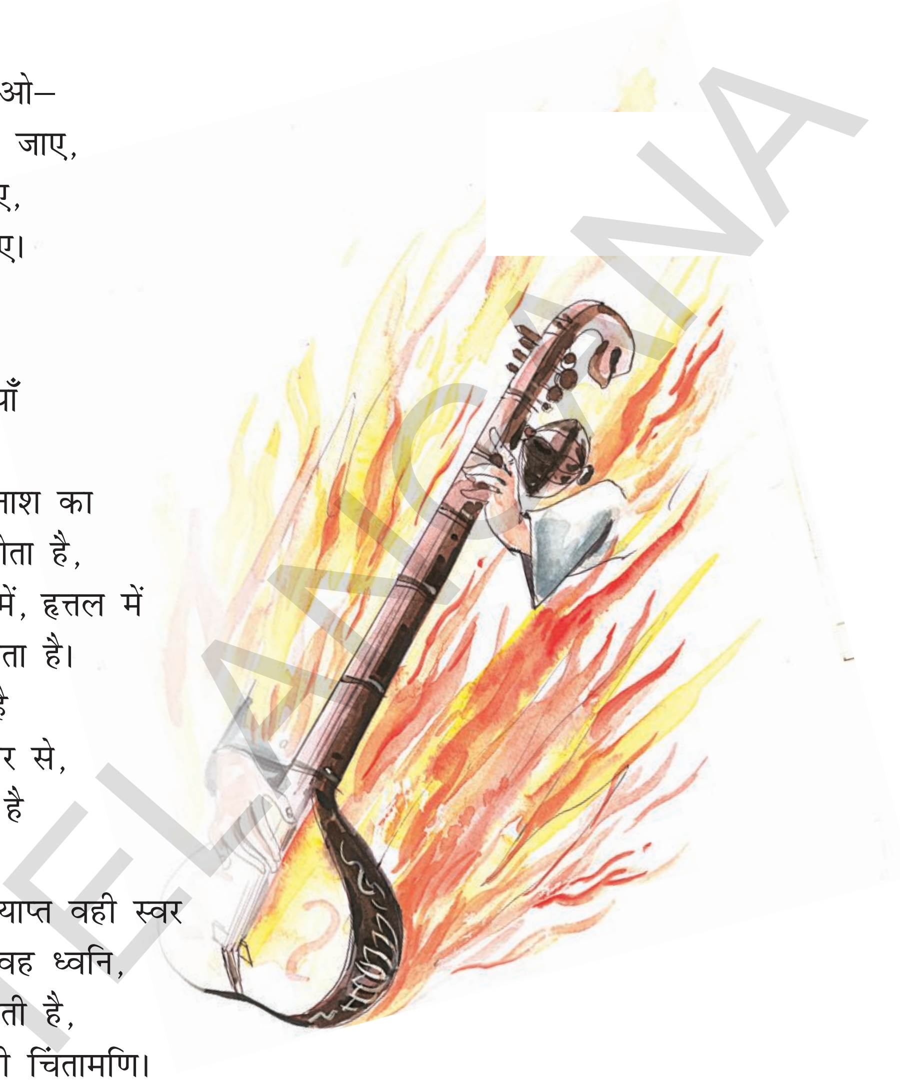

❐ बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

कविता के बारे में

'विप्लव गायन' जड़ता के विरुद्ध विकास एवं गतिशीलता की कविता है। विकास और गतिशीलता को अवरुद्ध करनेवाली प्रवृत्ति से संघर्ष करके कवि नया सृजन करना चाहता है। इसलिए कवि विप्लव के माध्यम से परिवर्तन की हिलोर लाना चाहता है।
आमतौर पर **है** शब्द का प्रयोग वाक्य के अंत में किया जाता है, जैसे–देशराज जाता है। अब कविता की निम्न पंक्तियों को देखिए–

SCERT TELANGANA

सुनिए–बोलिए

1. कविता के मूलभाव को ध्यान में रखते हुए बताइए कि इसका शीर्षक 'विप्लव–गायन' क्यों रखा गया होगा?
2. कवि अपनी कविता के माध्यम से उथल–पुथल क्यों मचाना चाहता है?

पढ़िए

1. 'कण–कण में है व्याप्त वही स्वर....... काल कूट फणि की चिंतामणि...'
   क. 'वही स्वर' 'वह ध्वनि' एवं 'वही तान' आदि वाक्यांश किसके लिए/किस भाव के लिए प्रयुक्त हुए हैं?
2. वही स्वर, वह ध्वनि एवं वही तान से संबंधित भाव का 'रुद्ध–गीत की क्रुद्ध तान है/निकली मेरी अंतरतर से'–पंक्तियों से क्या कोई संबंध बनता है?

लिखिए

1. नीचे दी गई पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए–
   'सावधान! मेरी वीणा में......... दोनों मेरी ऐंठी हैं।'
2. कविता का उद्देश्य अपने शब्दों में लिखिए।

शब्द भंडार

■ भिन्नार्थ शब्द चुनकर लिखिए।

1. तरु, पेड़, स्वर, वृक्ष ( )
2. क्रोध, क्षुब्ध, गुस्सा, क्रुद्ध ( )
3. क्षण, पल, तान ( )

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

■ कविता के आधार पर चार नारे लिखिए।

प्रशंसा

■ विप्लव गायन कविता में कवि ने अपने विचारों के माध्यम से समाज में परिवर्तन लाने की बात कही है। समाज सुधार के लिए तुम क्या–क्या करना चाहोगे ? लिखिए।

SCERT TELANGANA

भाषा की बात

1. कविता में दो शब्दों के मध्य (–) का प्रयोग किया गया है, जैसे–'जिससे उथल–पुथल मच जाए' एवं 'कण–कण में है व्याप्त वही स्वर।' इन पंक्तियों को पढ़िए और अनुमान लगाइए कि कवि ऐसा प्रयोग क्यों करते हैं?
2. कविता में (,–। आदि) विराम चिह्नों का उपयोग रुकने, आगे–बढ़ने अथवा किसी खास भाव को अभिव्यक्त करने के लिए किया जाता है। कविता पढ़ने में इन विराम चिह्नों का प्रभावी प्रयोग करते हुए काव्य हुए काव्य पाठ कीजिए। गद्य में आम तौर पर है शब्द का प्रयोग वाक्य के अंत में किया जाता है, जैसे– देशराज जाता है। अब कविता की निम्न पंक्तियों को देखिए–

   'कण–कण में है व्याप्त..... वही तान गाती रहती है।'

   इन पंक्तियों में हे शब्द का प्रयोग अलग–अलग जगहों पर किया गया है। कविता में अगर आपको ऐसे अन्य प्रयोग मिलें तो उन्हें छाँटकर लिखिए।
3. निम्न पंक्तियों को ध्यान से देखिए–

   'कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ...... एक हिलोर उधर से आए'

   इन पंक्तियों के अंत में आए, जाए जैसे तुक मिलानेवाले शब्दों का प्रयोग किया गया है। इसे तुकबंदी या अंत्यानुप्रास कहते हैं। कविता से तुकबंदी के अन्य शब्दों को छाँटकर लिखिए। छाँटे गए शब्दों से अपनी कविता बनाने की कोशिश कीजिए।

परियोजना कार्य

- स्वाधीनता संग्राम के दिनों में अनेक कवियों ने स्वाधीनता को मुखर करनेवाली ओजपूर्ण कविताएँ लिखीं। माखनलाल चतुर्वेदी, मैथिलीशरण गुप्त और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की ऐसी कविताओं की चार–चार पंक्तियाँ इकट्ठा कीजिए जिनमें स्वाधीनता के भाव ओज से मुखर हुए हैं।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. कविता गा सकता हूँ। सुना सकता/सकती हूँ। भाव बता सकता/सकती हूँ।		
2. इस स्तर की कविताओं का भाव पढ़कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. इस स्तर की कविताओं का भाव व्याख्या करते हुए लिख सकता/सकती हूँ।		
4. कविता के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ।		
5. इस कविता के आधार पर नारे लिख सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

इकाई - IV

बाल–महाभारत

(उपवाचक पाठ)

महाभारत महर्षि व्यास द्वारा लिखी गयी कालजयी रचना है। पुराणों के अनुसार ब्रह्माजी से अत्रि, अत्रि से चन्द्रमा, चन्द्रमा से बुध, और बुध से इलानन्दन पुरूरवा का जन्म हुआ। पुरूरवा से आयु, आयु से राजा नहुष, और नहुष से ययाति उत्पन्न हुए। ययाति से पुरू हुए। पुरू के वंश में भरत और भरत के कुल में राजा कुरु हुए। कुरु के वंश में शान्तनु का जन्म हुआ। शान्तनु से गंगानन्दन भीष्म उत्पन्न हुए। उनके दो छोटे भाई और थे –चित्रांगद और विचित्रवीर्य। ये शान्तनु से सत्यवती के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। शान्तनु के मृत्यु के पश्चात भीष्म ने अविवाहित रह कर अपने भाई विचित्रवीर्य के राज्य का पालन किया। चित्रांगद बाल्यावस्था में ही चित्रांगद नामक गन्धर्व के द्वारा मारे गये। फिर भीष्म संग्राम में विपक्षी को परास्त करके काशी राज की दो कन्याओं –अंबिका और अंबालिका को हर लाये। वे दोनों विचित्रवीर्य की पत्नी हुईं। कुछ काल के बाद राजा विचित्रवीर्य राजयक्ष्मा से ग्रस्त हो स्वर्गवासी हो गये। तब सत्यवती की अनुमति से व्यासजी के द्वारा अम्बिका के गर्भ से राजा धृतराष्ट्र और अम्बालिका के गर्भ से पाण्डु उत्पन्न हुए। धृतराष्ट्र व गान्धारी दंपत्ति के सौ पुत्र हुए, जिनमें दुर्योधन सबसे बड़ा था और पाण्डु के युधिष्ठिर,भीम,अर्जुन,नकुल,सहदेव आदि पाँच पुत्र हुए। धृतराष्ट्र जन्म से ही अन्धे थे अतः उनकी जगह पर पाण्डु को राजा बनाया गया,इससे धृतराष्ट्र को सदा अपनी नेत्रहीनता पर दुख होता था। पाण्डु ने सम्पूर्ण भारतवर्ष को जीतकर कुरु राज्य की सीमाओं का यवनों के देश तक विस्तार कर दिया। एक बार राजा पाण्डु अपनी दोनों पत्नियों – कुन्ती तथा माद्री – के साथ आखेट के लिये वन गये। वहाँ उन्हें एक मृग का जोड़ा दिखायी दिया। पाण्डु ने तत्काल अपने बाण से उस मृग को घायल कर दिया। मरते हुये मृग रूपधारी निर्दोष ऋषि ने पाण्डु को शाप दिया, राजन! तुम्हारे समान क्रूर पुरुष इस संसार में कोई नहीं होगा। तुम्हें इसका परिणाम अवश्य भुगतना पड़ेगा। यही मेरा श्राप है।

इस श्राप से पाण्डु अत्यन्त दुःखी हुये और अपनी रानियों से बोले, हे देवियों! अब मैं अपनी समस्त वासनाओं का त्याग कर के इस वन में ही रहूँगा। तुम लोग हस्तिनापुर लौट जाओ। उनके वचनों को सुन कर दोनों रानियों ने दुःखी होकर कहा, नाथ! आप हमें भी वन में अपने साथ रखने

SCERT TELANGANA

की कृपा कीजिये। पाण्डु ने उनके अनुरोध को स्वीकार कर उन्हें भी वन में अपने साथ रहने की अनुमति दे दी। इसी दौरान राजा पाण्डु ने अमावस्या के दिन ऋषि–मुनियों को ब्रह्मा जी के दर्शनों के लिये जाते हुये देखा। उन्होंने उन ऋषि–मुनियों से स्वयं को साथ ले जाने का आग्रह किया। उनके इस आग्रह पर ऋषि–मुनियों ने कहा, राजन! कोई भी निःसन्तान पुरुष ब्रह्मलोक जाने का अधिकारी नहीं हो सकता। अतः हम आपको अपने साथ ले जाने में असमर्थ हैं। ऋषि–मुनियों की बात सुन कर पाण्डु अपनी पत्नी से बोले, हे कुन्ती! मेरा जन्म लेना ही वृथा हो रहा है क्योंकि सन्तानहीन व्यक्ति पितृ–ऋण, ऋषि–ऋण, देव–ऋण तथा मनुष्य–ऋण से मुक्ति नहीं पा सकता। क्या तुम पुत्र प्राप्ति के लिये मेरी सहायता कर सकती हो? कुन्ती बोली, हे आर्यपुत्र! दुर्वासा ऋषि ने मुझे ऐसा मन्त्र प्रदान किया है जिससे मैं किसी भी देवता का आह्वान करके मनोवांछित वस्तु प्राप्त कर सकती हूँ। आप आज्ञा करें मैं किस देवता को बुलाऊँ। इस पर पाण्डु ने धर्म को आमन्त्रित करने का आदेश दिया। धर्म ने कुन्ती को पुत्र प्रदान किया। जिसका नाम युधिष्ठिर रखा गया। कालान्तर में पाण्डु ने कुन्ती को पुनः दो बार वायुदेव तथा इन्द्रदेव को आमन्त्रित करने की आज्ञा दी। वायुदेव से भीम तथा इन्द्र से अर्जुन की उत्पत्ति हुई। तत्पश्चात् पाण्डु की आज्ञा से कुन्ती ने माद्री को उस मन्त्र की दीक्षा दी। माद्री ने अश्विनी कुमारों को आमन्त्रित किया और नकुल तथा सहदेव का जन्म हुआ। किंतु, पांडु महाराज को श्राप का परिणाम भुगतना पड़ा और जल्द ही उनकी मृत्यु हो गयी। माद्री उनके साथ सती हो गई किन्तु पुत्रों के पालन–पोषण के लिये कुन्ती हस्तिनापुर लौट आयी। वहाँ रहने वाले ऋषि मुनि पांडवों को राजमहल छोड़कर आ गये। ऋषि मुनि तथा कुन्ती के कहने पर सभी ने पांडवों को पाण्डु का पुत्र मान लिया और उनका स्वागत किया।

जब कुन्ती का विवाह नहीं हुआ था, उसी समय (सूर्य के अंश से) उनके गर्भ से कर्ण का जन्म हुआ था। परन्तु लोक लाज के भय से कुन्ती ने कर्ण को एक बक्से में बन्द करके गंगा नदी में बहा दिया। कर्ण गंगाजी में बहता हुआ जा रहा था कि महाराज धृतराष्ट्र के सारथी अधिरथ और उनकी पत्नी राधा ने उसे देखा और उसे गोद ले लिया और उसका लालन–पालन करने लगे। कुमार अवस्था से ही कर्ण की रुचि अपने पिता अधिरथ के समान रथ चलाने की बजाय युद्धकला में अधिक थी। कर्ण और उसके पिता अधिरथ आचार्य द्रोण से मिले जो कि उस समय युद्धकला के सर्वश्रेष्ठ आचार्यों में से एक थे। द्रोणाचार्य उस समय कुरु राजकुमारों को शिक्षा दिया करते थे। उन्होंने कर्ण

को शिक्षा देने से मना कर दिया क्योंकि कर्ण एक सारथी पुत्र था, और द्रोण केवल क्षत्रियों को ही शिक्षा दिया करते थे। द्रोणाचार्य की असम्मति के उपरान्त कर्ण ने परशुराम से सम्पर्क किया जो कि केवल ब्राह्मणों को ही शिक्षा दिया करते थे। कर्ण ने स्वयं को ब्राह्मण बताकर परशुराम से शिक्षा का आग्रह किया। परशुराम ने कर्ण का आग्रह स्वीकार किया और कर्ण को अपने समान ही युद्धकला और धनुर्विद्या में निष्णात किया। इस प्रकार कर्ण परशुराम का एक अत्यंत परिश्रमी और निपुण शिष्य बना। कर्ण दुर्योधन के आश्रय में रहता था। दैवयोग तथा शकुनि के छल कपट से कौरवों और पाण्डवों में बैर की आग प्रज्वलित हो उठी। दुर्योधन बड़ी खोटी बुद्धि का मनुष्य था। उसने शकुनि के कहने पर पांडवों को बचपन में कई बार मारने का प्रयत्न किया। युवावस्था में आकर जब गुणों में उससे अधिक श्रेष्ठ युधिष्ठर को युवराज बना दिया गया तो शकुनि ने लाक्ष के बने हुए घर में पाण्डवों को रखकर आग लगाकर उन्हें जलाने का प्रयत्न किया किन्तु विदुर की सहायता से पाँचों पाण्डव अपनी माता के साथ उस जलते हुए घर से बाहर निकल आये। वहाँ से एकचक्रा नगरी में जाकर वे मुनि के वेष में एक ब्राह्मण के घर में निवास करने लगे। फिर बक नामक राक्षस का वध करके व्यास जी के कहने पर वे पांचाल–राज्य में, जहाँ द्रौपदी का स्वयंवर होने वाला था,गए। पांचाल–राज्य में अर्जुन के लक्ष्य–भेदन के कौशल से मत्स्यभेद होने पर पाँचों पाण्डवों ने द्रौपदी को पत्नी रूप में प्राप्त किया।

द्रौपदी स्वयंवर के पहले विदुर को छोड़ कर, सभी पांडवों को मृत समझने लगे और इस कारण धृतराष्ट्र ने शकुनि के कहने पर दुर्योधन को युवराज बना दिया। द्रौपदी स्वयंवर के तत्पश्चात दुर्योधन आदि को पांडवों के जीवित होने का पता चला। पांडवों ने कौरवों से अपना राज्य मांगा परन्तु गृहयुद्ध के संकट से बचने के लिए युधिष्ठर ने कौरवों द्वारा दिए खण्डहर स्वरुप खाण्डववन को आधे राज्य के रुप में प्राप्त किया। पाण्डुकुमार अर्जुन ने श्रीकृष्ण के साथ खाण्डववन को जला दिया और इन्द्र के द्वारा की हुई वृष्टि का अपने बाणों के (छत्राकार) बाँध से निवारण करते हुए अग्नि को तृप्त किया। वहाँ अर्जुन और कृष्ण जी ने समस्त देवताओं को युद्ध में परास्त कर दिया। इसके फलस्वरुप अर्जुन नेअग्निदेव से दिव्य गाण्डीव धनुष और उत्तम रथ प्राप्त किया और कृष्ण जी ने सुदर्शनचक्र प्राप्त किया था। उन्हें युद्ध में भगवान् कृष्ण–जैसे सारथी मिले थे तथा उन्होंने आचार्य द्रोण से ब्रह्मास्त्र आदि दिव्य आयुध और कभी नष्ट न होने वाले बाण प्राप्त किये थे। इन्द्र अपने पुत्र अर्जुन की वीरता देखकरअति प्रसन्न हुए। इन्द्र के कहने पर देव शिल्पी विश्वकर्मा और मय दानव ने मिलकर खाण्डववन को

इन्द्रपुरी जितने भव्य नगर मे निर्मित कर दिया, जिसे इन्द्रप्रस्थ नाम दिया गया।

सभी पाण्डव सब प्रकार की विद्याओं में प्रवीण थे। पाण्डवों ने संपूर्ण दिशाओं पर विजय पाई और युधिष्ठिर राज्य करने लगे। उन्होंने प्रचुर सुवर्ण राशि से परिपूर्ण राजसूय यज्ञ का अनुष्ठान किया। उनका यह वैभव दुर्योधन के लिये असह्य हो उठा। उसने अपने भाई दुःशासनऔर वैभव प्राप्त सुहृद् कर्ण के कहने से शकुनि को साथ ले, द्यूत–सभा में जुए में प्रवृत्त होकर, युधिष्ठिर को उनके भाइयों,द्रौपदी और उनके राज्य को कपट–द्यूत के द्वारा हँसते–हँसते जीत लिया। दुर्योधन ने कुरु राज्य सभा मे द्रौपदी का बहुत अपमान किया,उसे निर्वस्त्र करने का प्रयास किया। श्रीकृष्ण ने उनकी लाज बचाई। तत्पश्चात द्रौपदी सभी लोगों को श्राप देने ही वाली थी, परन्तु गांधारी ने आकर ऐसा होने से रोक दिया। जुए में परास्त होकर युधिष्ठिर अपने भाइयों के साथ वन में चले गये। वहाँ उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार बारह वर्ष व्यतीत किये। वे वन में भी पहले ही की भाँति प्रतिदिन बहुसंख्यक ब्राह्मणों को भोजन कराते थे। (एक दिन उन्होंने) अठासी हजार द्विजों सहित दुर्वासा मुनि को (श्रीकृष्ण–कृपा से) परितृप्त किया। वहाँ उनके साथ उनकी पत्नी द्रौपदी और पुरोहित धौम्यजी भी थे।

बारहवाँ वर्ष बीतने पर वे विराट नगर में गये। वहाँ युधिष्ठिर सबसे अपरिचित रहकर 'कंक' नामक ब्राह्मण के रूप में रहने लगे। भीमसेन रसोइया बने थे। अर्जुन ने अपना नाम 'बृहन्नला' रखा था। पाण्डव पत्नी द्रौपदी रनिवास में सैरन्ध्री के रूप में रहने लगी। इसी प्रकार नकुल–सहदेव ने भी अपने नाम बदल लिये थे। भीमसेन ने रात्रिकाल में द्रौपदी का सतीत्व–हरण करने की इच्छा रखने वाले कीचक को मार डाला। तत्पश्चात कौरव विराट की गौओं को हरकर ले जाने लगे, तब उन्हें अर्जुन ने परास्त किया। उस समय कौरवों ने पाण्डवों को पहचान लिया। श्रीकृष्ण की बहन सुभद्रा ने अर्जुन से अभिमन्यु नामक पुत्र को उत्पन्न किया था उसे राजा विराट ने अपनी कन्या उत्तरा ब्याह दी।

धर्मराज युधिष्ठिर सात अक्षौहिणी सेना के स्वामी होकर कौरवों के साथ युद्ध करने को तैयार हुए। पहले भगवान् श्रीकृष्ण परम क्रोधी दुर्योधन के पास दूत बनकर गये। उन्होंने ग्यारह अक्षौहिणी सेना के स्वामी राजा दुर्योधन से कहा–

'राजन्! तुम युधिष्ठिर को आधा राज्य दे दो या उन्हें पाँच ही गाँव अर्पित कर दो; नहीं तो उनके साथ युद्ध करो।'

SCERT TELANGANA

श्रीकृष्ण की बात सुनकर दुर्योधन ने कहा– 'मैं उन्हें सुई की नोक के बराबर भूमि भी नहीं दूँगा; हाँ, उनसे युद्ध अवश्य करूँगा।'

ऐसा कहकर वह भगवान श्रीकृष्ण को बंदी बनाने के लिये उद्यत हो गया। उस समय राजसभा में भगवान् श्रीकृष्ण ने अपने परम दुर्धर्ष विश्वरूप का दर्शन कराकर दुर्योधन को भयभीत कर दिया। फिर विदुर ने अपने घर ले जाकर भगवान का पूजन और सत्कार किया।

तदनन्तर वे युधिष्ठिर के पास लौट गये और बोले–'महाराज! आप दुर्योधन के साथ युद्ध कीजिये'

युधिष्ठिर और दुर्योधन की सेनाएँ कुरुक्षेत्र के मैदान में जा डटीं। अपने विपक्ष में पितामह भीष्म तथा आचार्य द्रोण आदि गुरुजनों को देखकर अर्जुन युद्ध से विरत हो गये, तब भगवान् श्रीकृष्ण ने उनसे कहा–'पार्थ! भीष्म आदि गुरुजन शोक के योग्य नहीं हैं। मनुष्य का शरीर विनाशशील है, किंतु आत्मा का कभी नाश नहीं होता। यह आत्मा ही परब्रह्म है।'

'मैं ब्रह्म हूँ'– इस प्रकार तुम उस आत्मा को समझो। कार्य की सिद्धि और असिद्धि में समानभाव से रहकर कर्मयोग का आश्रय ले क्षात्रधर्म का पालन करो।'

श्रीकृष्ण के ऐसा कहने पर अर्जुन रथारूढ़ हो युद्ध में प्रवृत्त हुए। उन्होंने शंखध्वनि की। दुर्योधन की सेना में सबसे पहले पितामह भीष्म सेनापति हुए। पाण्डवों के सेनापति शिखण्डी थे। इन दोनों में भारी युद्ध छिड़ गया। भीष्म सहित कौरव पक्ष के योद्धा उस युद्ध में पाण्डव–पक्ष के सैनिकों पर प्रहार करने लगेऔर शिखण्डी आदि पाण्डव– पक्ष के वीर कौरव–सैनिकों को अपने बाणों का निशाना बनाने लगे।

कौरव और पाण्डव–सेना का वह युद्ध, देवासुर–संग्राम के समान जान पड़ता था। आकाश में खड़े होकर देखने वाले देवताओं को वह युद्ध बड़ा आनन्ददायक प्रतीत हो रहा था। भीष्म ने दस दिनों तक युद्ध करके पाण्डवों की अधिकांश सेना को अपने बाणों से मार गिराया।

दसवें दिन अर्जुन ने वीरवर भीष्म पर बाणों की बड़ी भारी वृष्टि की। इधर द्रुपद की प्रेरणा से शिखण्डी ने भी पानी बरसाने वाले मेघ की भाँति भीष्म पर बाणों की झड़ी लगा दी। दोनों ओर के हाथीसवार, घुड़सवार, रथी और पैदल एक–दूसरे के बाणों से मारे गये। भीष्म की मृत्यु उनकी इच्छा के अधीन थी।जब पांडवों को ये समझ में आ गया कि भीष्म के रहते वे इस युद्ध को नहीं जीत सकते तो श्रीकृष्ण के सुझाव पर उन्होंने भीष्म पितामह से ही उनकी मृत्यु का उपाय पूछा। उन्होंने कहा कि

SCERT TELANGANA

जब तक मेरे हाथ में शस्त्र है तब तक महादेव केअतिरिक्त मुझे कोई नहीं हरा सकता। उन्होंने ने ही पांडवों को सुझाव दिया कि शिखंडी को सामने कर के युद्ध लड़े। वे जानते थे कि शिखंडी पूर्व जन्म में अम्बा थी इसलिए वे उसे कन्या ही मानते थे। दसवें दिन के युद्ध में अर्जुन ने शिखंडी को आगे अपने रथ पर बिठाया। शिखंडी को आगे देख कर भीष्म ने अपना धनुष त्याग दिया। उनके शस्त्र त्यागने के बाद अर्जुन ने उन्हें बाणों की शय्या पर सुला दिया। वे उत्तरायण की प्रतीक्षा में भगवान् विष्णु का ध्यान और स्तवन करते हुए समय व्यतीत करने लगे। भीष्म के बाण–शय्या पर गिर जाने के बाद जब दुर्योधन शोक से व्याकुल हो उठा, तब आचार्य द्रोण ने सेनापतित्व का भार ग्रहण किया। उधर हर्ष मनाती हुई पाण्डवों की सेना में धृष्टद्युम्न सेनापति हुए। उन दोनों में बड़ा भयंकर युद्ध हुआ, जो यमलोक की आबादी को बढ़ाने वाला था। विराट और द्रुपद आदि राजा द्रोणरूपी समुद्र में डूब गये। उस समय द्रोण काल के समान जान पड़ते थे। इतने ही में उनके कानों में यह आवाज आयी कि 'अश्वत्थामा मारा गया'। इतना सुनते ही आचार्य द्रोण ने अस्त्र–शस्त्र त्याग दिये। ऐसे समय में धृष्टद्युम्न के बाणों से आहत होकर वे पृथ्वी पर गिर पड़े

द्रोण बड़े ही दुर्धर्ष थे। वे सम्पूर्ण क्षत्रियों का विनाश करके पाँचवें दिन मारे गये। दुर्योधन पुनः शोक से आतुर हो उठा। उस समय कर्ण उसकी सेना का कर्णधार हुआ्। पाण्डव–सेना का आधिपत्य अर्जुन को मिला। कर्ण और अर्जुन में भाँति–भाँति के अस्त्र–शस्त्रों की मार–काट से युक्त महा भयानक युद्ध हुआ, जो देवासुर–संग्राम को भी मात करने वाला था। कर्ण और अर्जुन के संग्राम में कर्ण ने अपने बाणों से शत्रु–पक्ष के बहुत–से वीरों का संहार कर डाला; यद्यपि युद्ध गतिरोधपूर्ण हो रहा था लेकिन कर्ण तब उलझ गया जब उसके रथ का एक पहिया धरती में धँस गया (धरती माता के श्राप के कारण)। वह अपने को दैवीय अस्त्रों के प्रयोग में भी असमर्थ पाता है, जैसा कि उसके गुरु परशुराम का श्राप था। तब कर्ण अपने रथ के पहिए को निकालने के लिए नीचे उतरता है और अर्जुन से निवेदन करता है कि वह युद्ध के नियमों का पालन करते हुए कुछ देर के लिए उस पर बाण चलाना बंद कर दे। तब श्रीकृष्ण, अर्जुन से कहते हैं कि कर्ण को कोई अधिकार नहीं है कि वह अब युद्ध नियमों और धर्म की बात करे, जबकि स्वयं उसने भी अभिमन्यु वध के समय किसी भी युद्ध नियम और धर्म का पालन नहीं किया था। उन्होंने आगे कहा कि तब उसका धर्म कहाँ गया था जब उसने दिव्य–जन्मा द्रौपदी का पूरी कुरु राजसभा के समक्ष अपमान किया था। द्युत–

SCERT TELANGANA

क्रीड़ा भवन में उसका धर्म कहाँ गया था। इसलिए अब उसे कोई अधिकार नहीं कि वह किसी धर्म या युद्ध नियम की बात करे और उन्होंने अर्जुन से कहा कि अभी कर्ण असहाय है (ब्राह्मण का श्राप फलीभूत हुआ) इसलिए वह उसका वध करे। श्रीकृष्ण कहते हैं कि यदि अर्जुन ने इस निर्णायक मोड़ पर अभी कर्ण को नहीं मारा तो संभवतः पांडव उसे कभी भी नहीं मार सकेंगे और यह युद्ध कभी भी नहीं जीता जा सकेगा। तब, अर्जुन ने एक दैवीय अस्त्र का उपयोग करते हुए कर्ण का सिर धड़ से अलग कर दिया। कर्ण के शरीर के भूमि पर गिरने के बाद एक ज्योति कर्ण के शरीर से निकली और सूर्य में समाहित हो गयी। तदनन्तर राजा शल्य कौरव–सेना के सेनापति हुए, किंतु वे युद्ध में आधे दिन तक ही टिक सके। दोपहर होते–होते राजा युधिष्ठिर ने उन्हें मार दिया।

दुर्योधन की प्राय: सारी सेना युद्ध में मारी गयी थी। अंत में उसका भीमसेन के साथ युद्ध हुआ। उसने पाण्डव–पक्ष के पैदल आदि बहुत–से सैनिकों का वध करके भीमसेन पर धावा किया। उस समय गदा से प्रहार करते हुए दुर्योधन के अन्य छोटे भाई भी भीमसेन के हाथों मारे गये थे। महाभारत–संग्राम के उस अठारहवें दिन रात्रिकाल में महाबली अश्वत्थामा ने पाण्डवों की सोयी हुई एक अक्षौहिणी सेना को सदा के लिये सुला दिया। उसने द्रौपदी के पाँचों पुत्रों, उसके पांचाल देशीय बन्धुओं तथा धृष्टद्‌युम्न को भी जीवित नहीं छोड़ा। द्रौपदी पुत्रहीन होकर रोने–बिलखने लगी। तब अर्जुन ने सींक के अस्त्र से अश्वत्थामा को परास्त करके उसके मस्तक की मणि निकाल ली। (उसे मारा जाता देख द्रौपदी ने ही अनुनय–विनय करके उसके प्राण बचाये)। इतने पर भी दुष्ट अश्वत्थामा ने उत्तरा के गर्भ को नष्ट करने के लिये उस पर अस्त्र का प्रयोग किया। वह गर्भ उसके अस्त्र से प्राय: दग्ध हो गया था; किंतु भगवान् श्रीकृष्ण ने उसको पुन: जीवन–दान दिया। उत्तरा का वही गर्भस्थ शिशु आगे चलकर राजा परीक्षित के नाम से विख्यात हुआ। कृतवर्मा, कृपाचार्य तथा अश्वत्थामा– ये तीन कौरव पक्षीय वीर उस संग्राम से जीवित बचे। दूसरी ओर पाँच पाण्डव, सात्यकि तथा भगवान श्रीकृष्ण–ये सात ही जीवित रह सके; दूसरे कोई नहीं बचे। उस समय सब ओर अनाथ स्त्रियों का आर्तनाद व्याप्त हो रहा था। भीमसेन आदि भाइयों के साथ जाकर युधिष्ठिर ने उन्हें सान्त्वना दी तथा रणभूमि में मारे गये सभी वीरों का दाह–संस्कार करके उनके लिये जलांजलि दे, धन आदि का दान किया। तत्पश्चात कुरुक्षेत्र में शरशय्या पर आसीन शान्तनुनन्दन भीष्म के पास जाकर युधिष्ठिर ने उनसे समस्त शान्तिदायक धर्म, राजधर्म (आपद्‌धर्म), मोक्ष धर्म तथा दानधर्म की बातें सुनीं। फिर

SCERT TELANGANA

वे राजसिंहासन पर आसीन हुए। इसके बाद उन शत्रुमर्दन राजा ने अश्वमेध यज्ञ करके उसमें ब्राह्मणों को बहुत धन दान किया। तदनन्तर द्वारका से लौटे हुए अर्जुन के मुख से मूसलकाण्ड के कारण प्राप्त हुए शाप से पारस्परिक युद्ध द्वारा यादवों के संहार का समाचार सुनकर युधिष्ठिर ने परीक्षित को राजासन पर बिठाया और स्वयं भाइयों के साथ महाप्रस्थान कर स्वर्गलोक को चले गये।

जब युधिष्ठिर राजसिंहासन पर विराजमान हो गये, तब धृतराष्ट्र गृहस्थ–आश्रम से वानप्रस्थ–आश्रम में प्रविष्ट हो वन में चले गये। (ऋषियों के एक आश्रम से दूसरे आश्रमों में होते हुए वे वन को गये।) उनके साथ देवी गान्धारी और पृथा (कुन्ती) भी थीं। विदुर जी दावानल से दग्ध हो स्वर्ग सिधारे। इस प्रकार भगवान् विष्णु ने पृथ्वी का भार उतारा और धर्म की स्थापना तथा अधर्म का नाश करने के लिये पाण्डवों को निमित्त बनाकर दानव–दैत्य आदि का संहार किया।

इस प्रकार महाभारत कथा का मूल उद्देश्य अधर्म का नाश कर धर्म की स्थापना करना था। इस कथा से यह स्पष्ट होता है कि व्यक्ति चाहे कितना भी वीर, शूर, धनी, दानी क्यों न हो, अगर वह धर्म का पालन नहीं करेगा तो उसका विनाश निश्चित ही है।

प्रश्न

1. महाराज पांडु के कितने पुत्र थे? उनकी क्या विशेषता थी?
2. पांडवों को अंत में कौरवों से युद्ध क्यों करना पड़ा?
3. महाभारत युद्ध में श्रीकृष्ण की भूमिका के बारे में बताइए।
4. महाभारत का युद्ध धर्म की स्थापना के लिए हुए था– सिद्ध कीजिए।
5. महाभारत की कथा से हमें क्या सीख मिलती है?

SCERT TELANGANA

शब्दकोश

यहाँ आपके लिए एक छोटा सा शब्दकोश दिया गया है। इस शब्दकोश में वे शब्द हैं जो विभिन्न पाठों में आए हैं और आपके लिए नए हो सकते हैं। किसी-किसी शब्द के कई अर्थ होते हैं। पाठ के संदर्भ से जोड़कर आप यह अनुमान खुद लगा सकते हैं कि कौन सा अर्थ ठीक है।

तुम देखोगे कि शब्द के अर्थ से पहले विभिन्न प्रकार के अक्षर-संकेत दिए गए हैं। इन संकेतों से हमें शब्दों की व्याकरण संबंधी जानकारी मिलती है। नीचे दी गई सूची की मदद से आप इन अक्षर-संकेतों को समझ सकते हैं–

अ.	–	अव्यय	अ.क्रि.	–	अकर्मक क्रिया
क्रि.	–	क्रिया	स.क्रि.	–	सकर्मक क्रिया
सं.	–	संज्ञा	वि.	–	विशेषण
पु.	–	पुल्लिग	फ़ा	—	फ़ारसी
स्त्री.	–	स्त्रीलिंग			

अतिशय-(वि.)बहुत

अधित्यकाएँ-(स्त्री.)पहाड़ के ऊपर की समतल भूमि, 'टेबललैंड'

अप्रतिभ-(वि.)अन्यमनस्क, उदास, निराश, हतप्रभ

आकृष्ट-(वि.)आकर्षित

आजानुलंबित केश-(वि.)घुटनों तक लंबे बाल

आर्तक्रंदन-(पु.)दर्द भरी आवाज़ में रोना

आवन-(स.क्रि.)आना

आविर्भूत-वि.(सं.)प्रकट, उत्पन्न

इंद्रनील-(पु.)नीलकांत मणि, नीलम, नीलमणि, इंद्र का प्रिय रत्न

इल्ली-(स्त्री.)तितली के बच्चों का अंडे से निकलने वाला बाद का रूप

उन्मुक्त-वि.(सं.)बंधन रहित, स्वतंत्र

उपत्यकाएँ-(स्त्री.)पहाड़ के पास की भूमि, तराई, घाटी

उमग्यो-(क्रि.)उमड़ना

उरिन-(वि.) ऋण मुक्त, उऋण

कटुक-वि(.सं.)कड़वी, कटु

कर्कश-(वि.)कठोर, उग्र

कर्णवेध-(वि.) कान छेदने का संस्कार या रस्म

कार्तिकेय-(सं.)कृत्तिका नक्षत्र में उत्पन्न शिव के पुत्र, देवताओं के सेनापति

SCERT TELANGANA

कुब्जा-वि.स्त्री.(सं.)कुबड़ी, कंस की एक कुबड़ी दासी जिसकी टेढ़ी पीठ कृष्ण ने सीधी की थी

केका-स्त्री.(सं.) मोर की बोली

क्रूर-वि.(सं.)-निर्दय, हिंसक, कठोर

क्वार-(वि.)महीने का नाम-आश्विन

क्षीण-(वि.)दुर्बल, पतला

गरूर-पु.(अ.)गर्व, घमंड

घाम-(पु.)धूप

घेऊर-(स्त्री.)ताल में उपजनेवाली घासें

चंचु-प्रहार-चोंच से चोट करना

चिकोटी-(स्त्री.)चुटकी

छंद-(पु.)वर्ण, मात्रा, यति आदि के नियमों से युक्त वाक्य, अभिलाषा, इच्छा,अभिप्राय

डोंगर-(पु.)टीला, पहाड़ी

तजि-(स.क्रि.)तजना, छोड़ना

तरबतर-(वि.)लथपथ, डूबे हुए

तुषार-(सं.)बरफ़ 'हिम' का टुकड़ा

थामना-(स.क्रि.)पकड़ना

दस्तूर-(फ़ा.)तरीका, रीति

दामिन-(स्त्री.) दामिनी, बिजली

दुकेली-(वि.)जो अकेली न हो, जिसके साथ कोई और हो

द्युति-स्त्री.(सं.)चमक

द्विशाखा -(वि.)दो शाखाएँ

धकियाना-(स.क्रि.) धक्का देना

नवागंतुक-(वि.)नया-नया आया हुआ, नया अतिथि

निकसार-(पु.)निकास, निकलने का द्वार या मार्ग

निश्चेष्ट-(सं.)बिना प्रयास के, चेष्टा रहित, अचेत

निषेध-(अ.क्रि.)नकारना, मना करना

पक्षी-शावक-पु.(सं.)चिड़िया का बच्चा

परकाज-(वि.)उपकार, दूसरे का काम

पिंजरबद्ध-वि.(सं.)पिंजरे में बंद

पुनरुद्धार-(अ.क्रि)फिर से ऊपर उठाना, दोबारा उद्धार करना

प्रतिदान-(पु.)बदले में

फोकट-(वि.) मूल्यरहित, मुफ़्त

बंकिम-(वि.)बाँका, टेढ़ा

बंधुर-पु.(सं.)मुकुट

बदहवास-(वि.)घबराया हुआ

बलिहारी-(स्त्री.)निछावर होना

बारहा-अ.(फ़ा)बार-बार, अनेक बार

भद्द-(स्त्री.)उपहास, बुरी दशा

भाव-भंगी-(वि.)हाव-भाव

मंद्र-वि.(सं.)सुस्त, गंभीर, धीमा

मार्जारी-(स्त्री.)मादा बिल्ली

SCERT TELANGANA

मुदित-(वि.)प्रसन्न

मूजी-वि.(अ.)कंजूस

मृदुल-(पु.)कोमल

मेह-(पु.)मेघ, बादल

मोथा, साई बनप्याज नागर मोथा (पु.) खेतों में उपजनेवाली घासों के नाम

विज्ञापित-(वि.)विज्ञापन में दिखाया गया

विनिहित-(वि.)रखा हुआ

विशूचिका-(स्त्री.)संक्रामक रोग, हैज़ा, चेचक

विस्मय-(वि.)आश्चर्य

व्यसन-पु.(सं.)बुरी आदत

शरद-(वि.)वर्षा के बाद और शिशिर ऋतु के पहले की ऋतु

संकीर्ण-वि.(सं.)सँकरा, छोटा, संकुचित

संगमरमर-(पु.) मुख्य रूप से मकराना, राजस्थान में पाए जाने वाला एक सफ़ेद सुंदर पत्थर जो इमारतों में लगाया जाता है।

संभ्रांत-(वि.)कुलीन, अच्छे कुल का

संशय-(वि.)आशंका, संदेह

सचहिं-(स.क्रि.)संचय, जमा करना

सरवर-(पु.)नदी

सरसब्ज़-(वि.)हराभरा

सरसाम-(पु.)सिहरन और कँपकपी के साथ बच्चों को होनेवाला बुखार

साहबी ठिकानों-(वि.)समृद्ध/अमीर लोगों के घर

सीत-(स्त्री.)ओस के कण, शरद ऋतु

सुजान-(पु.)बुद्धिमान

सुणा-(स.क्रि.)सुनना

सुरम्य-वि.(सं.)मनोहर, अति रमणीय, सुंदर स्थान

सुहावन-(वि.)सुंदर

सूमो-(पु.)जापानी पहलवान

स्तबक-पु.(सं.)फूलों का गुच्छा

स्थिर-(वि.) गति रहित, अचल

स्नेहसिक्त-(वि.)प्रेम से भरा हुआ, स्नेह से भीगा हुआ

स्मृति-(स.क्रि.)याद

स्वपन-(पु.)स्वप्न, सपना

हर्ष गद्‌गद-पु.(सं.)प्रसन्नता से भरा हुआ

होड़ा-होड़ी-(स्त्री.)प्रतिस्पर्धा, दूसरे से आगे बढ़ जाने की चाह

SCERT TELANGANA

पेड़ अब भी आदिवासी हैं...

हो गयी सदियाँ, मगर फिर भी
है अजूबा, पेड़ अब भी आदिवासी हैं...

पेड़ खालिस पेड़ हैं अब भी,
पेड़ मुल्ला है, न पंडित, न पासी है
पेड़ अब भी आदिवासी हैं...

जंगलों में या नगर में हो,
दूर घर से या कि घर में हो,

हैं जड़ें हर वक्त धरती में,
इस सदी के होश आने की दवा-सी हैं
पेड़ अब भी आदिवासी हैं...

साफ़ दिल यूँ सोचते हैं जो,
फूल-पत्ते बोलते हैं वो,

छोड़ते हैं ओढ़कर ऋतुएँ,
आत्मा के अमर रहने की कथा-सी हैं
पेड़ अब भी आदिवासी हैं...

घुट रहा है ज़िंदगी का दम,
पेड़ इतने हो गये हैं कम,

खो चुकी अपना हरापन जो,
उन अभागो जर्द नस्लों को उदासी है
पेड़ अब भी आदिवासी हैं...

- सूर्यभानू गुप्त

पेड़-पौधे लगाओ-धरती को बचाओ

SCERT TELANGANA